Tantra
T

भैरवी एवं धूमावती तन्त्र शास्त्र

www.44Books.com

2879
ST-17

भैरवी एवं धूमावती तन्त्र शास्त्र

आचार्य पं० राजेश दीक्षित

www.44Books.com
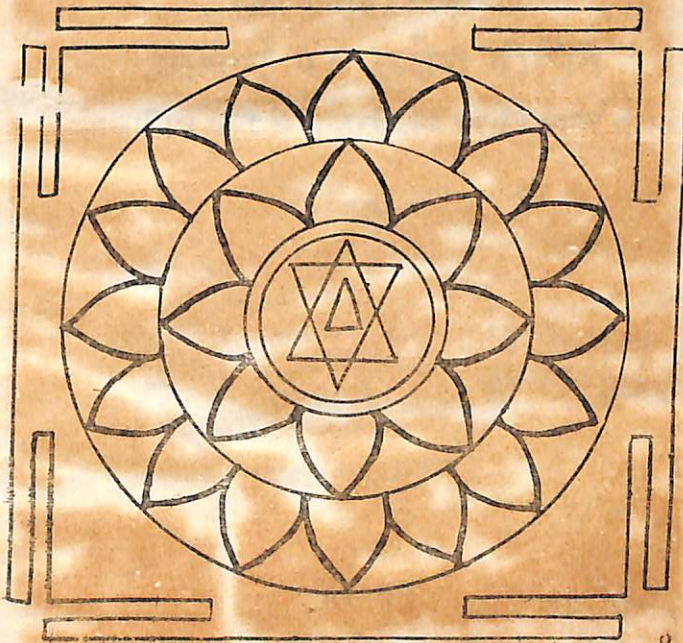
भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र

साधक ध्यान रखें

पुस्तक को अध्ययन करते समय सर्वप्रथम निम्नलिखित बातों का विशेष ख्याल रखें—

× अपने आत्म-विश्वास और कार्य-सिद्धि के ढंग पर ही आपके कार्य का फल निर्भर करता है। बिना विश्वास के कोई फल प्राप्त नहीं होता।

× तान्त्रिक साधन उपचार और दुख निवारण के लिए ही प्रयोग करने चाहिए न कि निजी स्वार्थ के लिए।

× किसी अनिष्टकारक फल की प्राप्ति के लिए किया गया कार्य दूसरों को हानि की अपेक्षा स्वयं को अधिक हानिकारक होता है।

www.44Books.com

दसमहाविद्या तन्त्र ग्रंथमाला, संख्या—५

भैरवी एवं धूमावती तन्त्र शास्त्र

[भगवती त्रिपुर भैरवी, पञ्चकूटा भैरवी, सम्पत्प्रदा भैरवी, चैतन्य भैरवी, षट्कूटा भैरवी, रुद्र भैरवी, भुवनेश्वरी भैरवी, अन्नपूर्णा भैरवी, एवं अन्य भैरवी तथा धूमावती देवी के मन्त्र, न्यास, ध्यान, पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, पुरश्चरण आदि की शास्त्रीय विधियों का संकलन। निरुत्तर तन्त्र सहित]

विद्या-वारिधि-दैवज्ञ-वृहस्पति

आचार्य पं० राजेश दीक्षित

[सहस्राधिक ग्रंथों के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक]

प्रकाशक

www.44Books.com

● प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट
अस्पताल रोड, आगरा—३

● लेखक/सम्पादक :
आचार्य पं० राजेश दीक्षित

● सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

● प्रथम संस्करण 1988 ई०

● मूल्य :
भारत में Rs. ३६/—
विदेशों में : पाँच डालर

● मुद्रक : सुमन कम्पोजिंग हाऊस, अमरपुरा आगरा १
ब्रज प्रिंटर्स, नया बांस आगरा।

चेतावनी

भारतीय कापीराइट एक्ट के अधीन इस पुस्तक के सर्वाधिकार दीप पब्लिकेशन आगरा के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई सज्जन इस पुस्तक का नाम, अन्दर का मेटर, डिजायन, चित्र व सैटिंग तथा किसी अंश का किसी भी भाषा में नकल या तोड़-मोड़ कर छापने का साहस न करें अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होगें। (प्रकाशक)

BHAIRAVI EVAM DHOOMAWATI TANTRA SHASTRA
by : Pt. Rajesh Dixit Rs. 30/-

www.44Books.com

दो शब्द

□

- 'दश महाविद्या तन्त्र ग्रंथ माला' की यह पाँचवीं पुस्तक है। इसमें षष्ठी विद्या—भगवती भैरवी तथा सप्तमी विद्या—भगवती धूमावती के मन्त्र तथा उनकी पूजन, साधना एवं काम्य-प्रयोग सम्बन्धी विधियां संकलित की गई हैं।

- 'भैरवीतन्त्र' भाग के अन्तर्गत भगवती त्रिपुर भैरवी के अतिरिक्त पंचकूटा, सम्पत्प्रदा, चैतन्य, षट्कूटा, रुद्र, भुवनेश्वरी, अन्नपूर्णा, कौलेश, सकल-सिद्धिदा, भय-विध्वंसिनी, कामेश्वरी, नित्यट नवकूट बाला, त्रिपुर बाला तथा बाला भैरवी से सम्बन्धित विविध मन्त्र तथा उनकी शास्त्रीय प्रयोग-विधियाँ दी गई हैं तथा 'धूमावती तन्त्र' भाग के अन्तर्गत भगवती धूमावती के मन्त्रों की प्रयोग विधियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

- दोनों ही भागों में क्रमशः भगवती त्रिपुरभैरवी तथा धूमावती से सम्बन्धित कवच, हृदय, अष्टोत्तरशतनाम तथा सहस्रनाम स्तोत्र आदि दिए गये हैं, ताकि साधकों को इस हेतु कहीं अन्यत्र भटकने की आवश्यकता न रहे।

- इसके साथ ही दुष्प्राय 'निरुत्तर तन्त्र' को संकलित कर, इसे वीराचारी साधकों के लिए भी उपयोगी बना देने की चेष्टा की गई है।

- हमें आशा है कि भगवती त्रिपुरभैरवी तथा धूमावती के साधकों के लिए यह संकलन उपयोगी सिद्ध होगा।

- प्रस्तुत ग्रन्थ से सम्बन्धित किसी विषय की जानकारी अथवा तन्त्र एवं ज्योतिष सम्बन्धी किसी भी कार्य के लिए हमसे जबावी पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

ज्योतिष-तन्त्र महाविद्यापीठ
महाविद्या कालोनी, मथुरा (उ० प्र०)
रामनवमी, सं. २०४४ वि०

—राजेश दीक्षित

www.44Books.com

❀ एक दृष्टि में ❀

- मानव-जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनेक साधनों में 'तन्त्र' सरल और सुगम साधन हैं।
- यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है कि तन्त्र केवल भूल-भूलैया अथवा मन बहलाने का नाम है।
- तन्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।
- आधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र में स्थायित्य है, सत्य है और कल्याण है।
- तन्त्र-विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वांगीण ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचाता है।
- लोक-कल्याण और आत्म-कल्याण की कामना से किये गये तान्त्रिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में लाभदायी होते हैं।
- नित्यकर्म, संक्षिप्त हवन विधि, शास्त्रीय विवेचन और तन्त्र के अभिनव-प्रयोग आपको कष्टों से बचाने में सहायक होंगे।
- इस पुस्तक में दिये गये तन्त्र-मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से संकलित किये गये हैं सिर्फ उन्हीं मन्त्र, तन्त्र को पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता निर्विवाद है।
- पुस्तक पाठकों की भलाई के लिए बनायी गयी है अस्तु "कुएँ के अन्दर जैसी आवाज देंगे वैसी ही प्रतिध्वनि होगी" की तरह साधना आपके सच्चे मन कर्म से होगी तभी उसमें इष्टतम् फल होगा अन्यथा जैसा करेगा वैसा भरेगा। इसमें लेखक, प्रकाशक का क्या दोष ?

www.44Books.com

भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र

- तन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है, जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति सुलभ है।
- श्रद्धा और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तन्त्र-साधक अतिशीघ्र निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

भावों को प्रकट करने के साधनों का आदिस्रोत यन्त्र-तन्त्र ही है। यन्त्र-तन्त्र के विकास से ही अंक और अक्षरों की सृष्टि हुई है। अतः रेखा, अंक एवं अक्षरों का मिला-जुला रूप तन्त्रों में व्याप्त हो गया। साधकों ने इष्टदेव की अनुकम्पा से बीज-मन्त्र तथा मन्त्रों को प्राप्त किया और उनके जप से सिद्धियाँ पायीं तो यन्त्र-तन्त्र मे उन्हें भी अंकित कर लिया।

www.44Books.com

प्राचीनतम भारतीय तन्त्र महाग्रन्थ

हिन्दू तंत्र शास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

अप्राप्त ग्रन्थों को ढूंढ़कर उनके विशेष तन्त्रों का संकलन करके उनको साधुओं से प्रमाणित कराकर इस ग्रन्थ में दिया है। ऐसे तन्त्र जो आज तक प्रकाशित नहीं हुये। विधि-विधान सहित लगभग 220, सचित्र, पक्की बाइन्डिग मूल्य 30) डाक खर्च 7) रु० अलग।

जैन तंत्र शास्त्र

ले० यतीन्द्र कुमार जैन

भारत तथा विदेशों में रह रहे विद्वान जैन मुनियों द्वारा अपनी जिन्दगी में किये गये प्रयोगों को इस पुस्तक में दिया गया है। ऐसी विद्या कोई ऋषी मुनि किसी भी कीमत पर नहीं बताते। पृष्ठ संख्या लगभग 200 सचित्र, मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

इस्लामी तंत्र शास्त्र

ले० जनाब असगर अली

मुस्लिम धर्म में तन्त्र शास्त्र का इतना भण्डार भरा है कि जितना अन्य कहीं भी नहीं है लेकिन अभी तक छोटे-छोटे सिद्ध, मुल्ला, मौलवी ही इसका थोड़ा सा ज्ञान कर पाये हैं। हमने ईराक, ईरान, पाकिस्तान आदि देशों से तथा भारत की प्राचीन मस्जिदों में से उन ग्रन्थों को निकलवा कर यह पुस्तक तैयार कराई गई है जिसमें तन्त्रादि मूल अरबी तथा हिन्दी में अलग-अलग दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या लगभग 230 सचित्र, मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

शाबर तंत्र शास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों तथा गुप्त साधकों द्वारा प्राप्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाला शाबर प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र विवेचन किया है। हमारे इस ग्रन्थ में महान लेखक ने अपनी पूरी जिन्दगी का निचोड़ निकाल कर रख दिया है। 300 पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य 30) रु० डाक खर्च 7) रु० अलग।

नोट—कोई भी पुस्तक मँगाने के लिये 10) रु० मनीआर्डर पहले अवश्य भेजें।

पुस्तकें मंगाने का पता

दीप पब्लिकेशन हास्पीटल रोड, आगरा-३

www.44Books.com

समर्पण

□

अपने परम आत्मीय

श्री ओम्प्रकाश चतुर्वेदी

एवं

श्रीमती डा० कुसुम चतुर्वेदी

(अध्यक्षा : प्रशिक्षण-विभाग भगवती देवी जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा)

को सस्नेह

□

www.44Books.com

साधना से पूर्व आवश्यक निर्देश

किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

(१) मन्त्र-तन्त्र का जप अंग-शुद्धि, सरलीकरण एवं विधि-विधान पूर्वक करना उचित है। आत्म-रक्षा के लिए सरलीकरण की आवश्यकता होती है।

(२) किसी भी तन्त्र अथवा मन्त्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक है; अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(३) मन्त्र-तन्त्र साधन के समय शरीर का स्वस्थ्य एवं पवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(४) शुद्ध, हवादार, पवित्र एवं एकान्त-स्थान में ही मन्त्र साधना करनी चाहिए। मन्त्र-तन्त्र साधना की समाप्ति तक एक स्थान परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(५) जिस मन्त्र-तन्त्र की जैसी साधना-विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कर्म करने चाहिए अन्यथा परिवर्तन करने से विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं तथा सिद्धी में भी सन्देह हो सकता है।

(६) जिस मन्त्र की जप संख्या आदि जितनी लिखी है उतनी ही संख्या में जप-हवन आदि करना चाहिए। इसी प्रकार जिस दिशा की ओर मुँह करके बैठना लिखा हो तथा जिस रंग के पुष्पों का विधान हो, उन सबका यथावत पालन करना चाहिए।

(७) एक बार में एक ही तन्त्र की साधना करना उचित है। इसी प्रकार एक समय केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति का उद्देश्य सम्मुख रहना चाहिए।

www.44Books.com

विषय-सूची

क्रमाङ्क पृष्ठाङ्क

(१) त्रिपुर भैरवी तन्त्र

www.44Books.com

(२) धूमावती तन्त्र

www.44Books.com

त्रिपुर भैरवी तन्त्र

www.44Books.com

सम्पूर्ण दस महाविद्या तंत्र महाशास्त्र

ले० तन्त्राचार्य पं० राजेश दीक्षित

विश्व जनमानस में देवी भगवती के दस पौराणिक स्वरूप प्रचलित हैं यथा—काली, तारा, महाविद्या (षोड्सी), भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातङ्गी, कमलात्मिका (कमला)। ये सभी भगवती पराशक्ति के विभिन्न स्वरूप हैं। प्रस्तुत महाग्रन्थ में सभी देवियों के तान्त्रिक, काम्य प्रयोग दिये गये हैं जो सिर्फ महान सिद्ध-योगियों को ही ज्ञात रहते हैं तथा वे किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बताते। साथ में सम्बन्धित मन्त्र, यन्त्र, पूजा, जप, साधनविधि, उपनिषद सतजप, सहस्रनास आदि विभिन्न विषयों को दिया गया है। देवी भक्तों को संकलन योग्य महान ग्रन्थ, सम्पूर्ण सुनहरी ठप्पेदार कपड़ा बाइन्डिग सहित सचित्र ग्रन्थ का मूल्य 225) रु० दो सौ पच्चीस रु.) डाकखर्च 10)। उपरोक्त ग्रन्थ अलग-अलग जिल्दों में भी है।

(1) काली तन्त्र शास्त्र (2) तारा तन्त्र शास्त्र
(3) महाविद्या (षोड्सी) तन्त्र शास्त्र
(4) भुवनेश्वरी एवम् छिन्नमस्ता तन्त्र शास्त्र
(5) बगलामुखी एवम् मातङ्गी तन्त्र शास्त्र
(6) भैरवी एवम् धूमावती तन्त्र शास्त्र
(7) कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र शास्त्र

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 30 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

श्रीयंत्राम् साधना

ले० आचार्य बागीश शास्त्री

श्रीयन्त्र लक्ष्मी जी द्वारा प्रदान यन्त्र है। धन-सम्पदा प्राप्ति के लिये इसकी साधना प्रमुख मानी गयी है। इसीलिये इसे यन्त्रराज भी कहा जाता है। इस पुस्तक में यन्त्र निर्माण विधि, उपासना विधि, कादि और हादि विद्याओं का स्वरूप, नवचक्र और वर्ण, सम्पूर्ण पूजा विधान तथा सम्बधित तन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच आदि शास्त्रोक्त आधार पर दिये गये हैं। सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मूल्य 45 रु० डाक खर्च 7 रु० अलग।

प्रयोगात्मक कुंडलिनी तंत्र

(सहज अष्टांग योग सहित)

ले० महर्षि यतीन्द्र (डा० वाय० डी० गहराना)

कुण्डलिनी जागरण पर एकमात्र प्रयोगिक पुस्तक जिसमें आत्म तत्व ज्ञान के सिद्धान्त, कुण्डलिनीयोग के आसन, प्राणायाम, धारणा और ध्यान के विशेष त्राटक, कुण्डलिनी के षट् चक्रों से आगे के विशेष विवरण आदि विशेष रूप से दिये गये है। 150 से अधिक रंगीन व सादे चित्र पृष्ठ संख्या 396 सजिल्द मूल्य 60 रु० डाक खर्च 10 रु० अलग।

पुस्तकें मंगाने का पता

दीप पब्लिकेशन हास्पीटल रोड आगरा-३

www.44Books.com

१ भैरवी-तत्व

भगवती भैरवी षष्ठ विद्या हैं। इनकी उपासना द्वारा साधक समाज में सम्मानित स्थान तथा समान अधिकार प्राप्त करता है। ये भी भगवती आद्या-काली का ही स्वरूप हैं। ये शत्रुओं का दलन करने वाली त्रिजगत तारिणी तथा षट्कर्मों में उपास्या हैं।

इन्हें त्रिपुर भैरवी' भी कहा जाता है। ये काल-रात्रि सिद्ध विद्या हैं। इनके शिव दक्षिणामूर्ति (काल भैरव हैं)।

पंचमी विद्या भगवती छिन्नमस्ता का सम्बन्ध 'महा प्रलय' से है तथा इन षष्ठी विद्या त्रिपुर भैरवी का सम्बन्ध 'नित्य-प्रलय' से है।

प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होता रहता है। नष्ट करने का कार्य 'रुद्र' का है। ये रुद्र ही विनाशोन्मुख होकर 'यम' कहलाने लगते हैं। इस यमाग्नि की सत्ता प्रधान रूप से दक्षिण-दिशा मैं है, इसी कारण यमराज को दक्षिण दिशा का लोक-पाल माना जाता है।

सोम स्नेह-तत्त्व है, वह संकोचधर्मा है। अग्नि तेज-तत्त्व है, वह विशकलन धर्मा है। विशकलन-क्रिया ही वस्तु का नाश करती है। यह धर्म दक्षिणाग्नि का है। अतः इस रुद्र को दक्षिणामूर्ति, काल भैरव आदि नामों से व्यवहृत किया जाता है। इनकी शक्ति का नाम ही 'भैरवी' अथवा 'त्रिपुर भैरवी' है।

राजराजेश्वरी नाम से प्रसिद्ध 'भुवनेश्वरी' जिन तीनों भुवनों के पदार्थों की रक्षा करती है, त्रिपुर भैरवी उन सब का नाश करती रहती है। त्रिभुवन के क्षणिक-पदार्थों का क्षणिक-विनाश इसी शक्ति पर निर्भर है। 'छिन्नमस्ता' परा-डाकिनी थी, यह 'अवरा-डाकिनी' है। 'भैरवीतन्त्र' के अनुसार कल्याणेच्छुओं को इनका ध्यान नियमित रूप से निम्नानुसार करना चाहिए—

"उद्यद्भानु सहस्रकान्तिमरुण क्षौमा शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्।

www.44Books.com

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं ।

देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटा वन्दे समन्दस्मिताम् ।"

त्रिपुरादेवी के तीन प्रकार कहे गए हैं—(१) बाला, (२) भैरवी और (३) सुन्दरी । 'ज्ञानार्णव' के अनुसार—'त्रिपुरादेवी त्रिविधा हैं, उन्हें 'त्रिशक्ति' कहते है ।

'प्रपञ्चसार' में 'त्रिपुरा'-पद की यह व्युत्पत्ति की गई है कि त्रिमूर्ति धारण कर सृष्टि-स्थिति-लय करने से, वेदत्रयी स्वरूपा होने से तथा प्रलयकाल में त्रिलोक को पूर्ण करने से अम्बिका का नाम 'त्रिपुरा' पड़ा है ।'

'वाराही तन्त्र' में लिखा है—'ब्रह्मा, बिष्णु और महेश्वर प्रभृति त्रिदेवों ने प्राचीन काल में आपकी पूजा की थी, इसलिए आपका नम 'त्रिपुरा' प्रसिद्ध हुआ है ।

www.44Books.com

२ | त्रिपुर भैरवी मन्त्र-प्रयोग

'मन्त्र महार्णव' के अनुसार—

भगवती त्रिपुर भैरवी का मन्त्र, न्यास तथा प्रयोग विधि निम्नानुसार है—

मन्त्र :

"हसैं हसकरीं हसैं।"

विनियोग :

"अस्य त्रिपुर भैरवी मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिपुरभैरवी देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि।

पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे।

श्री त्रिपुरभैरव्यै देवतायै नमः हृदि।

ऐं बीजाय नमः गुह्ये।

ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास :

हसरां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

हसरीं तर्जनीभ्यां नमः।

हसरुं मध्यमाभ्यां नमः।

www.44Books.com

हसरैं अनामिकाभ्यां नमः ।
हसरौं कनिष्ठिकाभ्यां नयः ।
हसरः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।।

हृदयादि षडङ्गन्यास :

हसरां हृदयाय नमः ।
हसरीं शिरसे स्वाहा ।
हसरुं शिखायै वषट् ।
हसरैं कवचाय हुं ।
हसरौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
हसरः अस्त्राय फट् ।

इस प्रकार 'न्यास' करने के बाद 'तारा मन्त्र प्रयोग' में वर्णित न्यास आदि भी करें । न्यासोपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान :

"उद्यद्भानुसहस्रकान्ति मरुण क्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्त पयोधरां जप वटीं विद्यामभीति वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विल सहक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ।।"

भावार्थ—"भगवती त्रिपुर भैरवी की देह-कान्ति उदीयमान सहस्र सूर्यों की कांति के समान है । वे रक्त वर्ण के क्षौम वस्त्र धारण किए हुए है । उनके गले में मुण्ड-माला है तथा दोनों स्तन रक्त से लिप्त है । वे अपने चारों हाथों में जप-माला, पुस्तक, अभय-मुद्रा तथा वर-मुद्रा धारण किए हैं । उनके ललाट पर चन्द्रमा की कला शोभायमान है । रक्त कमल जैसी शोभा वाले उनके तीन नेत्र हैं । उनके मस्तक पर रत्न-जटित मुकुट तथा मुख पर मन्द मुस्कान है ।

पीठ-पूजा—इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों द्वारा पूजा करके, पीठ-पूजा करें । पीठादि में रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि पर तत्वान्त पीठ-देवताओं को पद्धति-मार्ग से स्थापित करें—

---

* हमारे द्वारा लिखित 'तारा तन्त्र शास्त्र' पढ़ें ।

www.44Books.com

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र द्वारा पूजकर, निम्नलिखित मन्त्रों से पीठ-शक्तियों का पूजन करें—

पूर्वादि दिशाओं में क्रम से—

ॐ इच्छायै नमः ।

ॐ ज्ञानायै नमः ।

ॐ क्रियायै नमः ।

ॐ कामदायिन्यै नमः ।

ॐ रत्यै नमः ।

ॐ रतिप्रियायै नमः ।

ॐ नन्दायै नमः ।

ऐं परायै नमः ।

मध्य में—

ॐ अपरायै नमः ।

इस प्रकार पीठ-शक्तियों की पूजाकर, स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र-पत्र को ताम्रपात्र में रखकर, घृत द्वारा उसका अभ्यंग करें तथा उस पर दुग्ध धारा एवं जलधारा डालकर, स्वच्छ वस्त्र से पौछने के बाद उसके ऊपर देवी के अष्ट गन्ध द्वारा, नवयोनि वाला यन्त्र, उस पर अष्टदल तथा उसके ऊपर भूपुर बनायें (इस विधि से निर्मित होने वाले यन्त्र का स्वरूप आगे प्रदर्शित है)

फिर—

"हसौं महाप्रेत पद्मासनाय नमः ।"

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर, पीठ के मध्य उसे स्थापित करें। फिर पुनः ध्यान करके।

"ऐं ह्रीं स ह स ष ह क्र ह्यौं"

इस मन्त्र द्वारा विन्दु-चक्र में मूर्ति की कल्पना करके, त्रिखण्ड मुद्रा द्वारा देवी का ध्यान करके, आवाहन से लेकर पुष्पांजलि-दान पर्यन्त पूजा करके, देवी की आज्ञा लेकर आवरण-पूजा करें। त्रिपुर-भैरवी के पूजन-यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

www.44Books.com
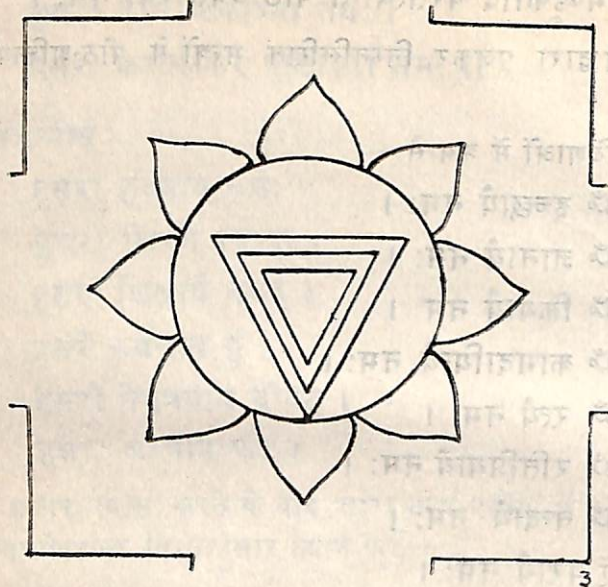
(त्रिपुर भैरवी पूजन-यन्त्र)

आवरण-पूजा

केसरों, आग्नेयादि कोणों में तथा मध्य दिशा में पूर्वोक्ताङ्गमन्त्र से खङ्ग की पूजा करें। फिर पुष्पांजलि लेकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए।

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥"

यह पढ़ते हुए पुष्पांजलि देकर

'पूजिता स्तर्पितास्सन्तु' कहें।

(इति प्रथमावरण:)

इसके बाद पूज्य तथा पूजक के अन्तराल में प्राची दिशामानकार, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके, निम्न क्रमानुसार पूजा करें—

उत्तरे—

द्रां द्राविण्यै नमः।

द्राविणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

द्रीं क्षोभिण्यै नमः।

क्षोभिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

www.44Books.com

दक्षिणे—

क्लीं वशीकरिण्यै नमः ।

वशीकरिण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

प्लुं लोपाकर्षिण्यै नमः ।

लोपार्कार्षिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

आग्नेयां—

स्त्रीं सम्मोहिन्यै नमः ।

सम्मोहिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इसी प्रकार—

उत्तरे—

ह्रीं कामाय नमः ।

काम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

क्लीं मन्त्रथाय नमः ।

मन्त्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

दक्षिणे—

ऐं कन्दर्पाय नमः ।

कन्दर्भ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

प्लुं मकरध्वजाय नमः ।

मकरध्वज श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

अग्नेयां—

स्त्री मीन केतवे नमः ।

मीनकेतु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों द्वारा पूजा कर, पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति द्वितीयावरणः)

इसके पश्चात अष्ट योनियों में प्राची आदि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों से पूजा करें--

ऐं क्लीं स्त्रीं सः सुभगायै नमः

सुभगा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

www.44Books.com

ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगायै नमः

भगा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः भग सर्पिण्यै नमः

भगसर्पिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगमालिन्यै नमः

भगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गायै नमः

अनङ्गा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गकुसुमायै नमः ।

अनङ्ग कुसुमा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गमेखलायै नमः ।

अनङ्गमेखला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गमदनायै नमः ।

अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त प्रकार से पूजा करके पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति तृतीयावरणः)

इसके पश्चात् अष्टदलों में निम्नलिखित मन्त्रों से अष्ट भैरवों तथा भैरवियों की पूजा करें—

प्राची क्रम से—

ॐ असिताङ्ग ब्राह्मीभ्यां नमः ।

असिताङ्ग ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ रुरु माहेश्वरीभ्यां नमः ।

रुरु माहेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ चण्डकौमारीभ्यां नमः ।

चण्डकौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रोध वैष्णवीभ्यां नमः ।

क्रोध वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

www.44Books.com

ॐ उन्मत्त वाराही भ्यां नमः ।

उन्मत्त वाराही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः ।

कपालीन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भीषण चामुण्डाभ्यां नमः ।

भीषण चामुण्डा श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ संहार महालक्ष्मीभ्यां नमः ।

संहार महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

उक्त मन्त्रों से पूजा कर, पूर्ववत् पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इतिचतुर्थावरणः)

इसके पश्चात् पञ्चमावरण में इन्द्रादि दश दिक्पालो तथा वज्र आदि आयुधों का पूजन कर, पुष्पांजलि प्रदान करें ।

(इति पञ्चमावरण)

उक्त विधि से आवरण-पूजा करके धूप-दान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके 'श्रीविद्या'+ में वर्णित चार बलियां देकर, हाथ-पाँव थोकर देवी का ध्यान कर, जप करें ।

पुरश्चरण

इस मन्त्र का पुरश्चरण २४,००,००० जप है। १२,००० फूलों से होम करना चाहिए । होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिए ।

उक्त विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए। प्रयोग सिद्धि हेतु दीक्षा लेकर, जितेन्द्रिय होकर ५,००,००० मन्त्र का जप करना चाहिए। मतान्तर से—१०,००,००० मन्त्र-जप का भी निर्देश है। जप के बाद १२,००० बहेड़े के फूलों के साथ बहेड़े का होम करना चाहिए ।

+ पढ़िए—हमारे द्वारा लिखित—'(षोडशी तन्त्र शास्त्र)'

www.44Books.com

३ | त्रिपुर भैरवी पञ्चकूटा-मन्त्र प्रयोग

'शारदा तिलक' के अनुसार—

हकार, सकार तथा रकार में औकार का योग करके उसमें विन्दु लगाने से प्रथम बीज (ह्स्रौं); हकार, सकार, ककार, लकार तथा रकार में ईकार का योग कर उसमें विन्दुलगाने से द्वितीय बीज (ह्स्क्लरीं); हकार, सकार और रकार में ईकार का योग कर उसमें विन्दु तथा विसर्ग लगाने से तृतीय बीज (हस्रौं) होता है। पांच-व्यज्जनों से रचित होने के कारण यह मन्त्र 'पञ्चकूटा' कहा जाता है। इसके प्रथम बीज को वाग्भव-कूट, द्वितीय बीज को कामराज, कूट तथा तृतीय बीज को शक्ति-कूट कहते हैं। मन्त्र इस प्रकार बना—

मन्त्र

"ह्स्रौं ह्स्क्लरीं हस्रौं."

पूजा-क्रम

पहले सामान्य-पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्यादि से प्राणायाम पर्यन्त समस्त कर्म करके 'पीठ न्यास' करें।

पीठ-न्यास

पीठ-न्यास में विशेष बात यह है कि "ॐ आधार-शक्तये नमः' से ह्रीं ज्ञानात्मने नमः' तक न्यास करके, हृदय-कमल के पूर्वादि केशरों में—

ॐ इच्छायै नमः।

ॐ ज्ञानायै नमः।

ॐ क्रियायै नमः।

ॐ कामिन्यै नमः।

www.44Books.com

ॐ काम दायिन्यै नमः ।

ॐ रत्यै नमः ।

ॐ रति-प्रियायै नमः ।

ॐ नन्दायै नमः ।

मध्य में—

ॐ मनोन्मन्यै नमः ।

उसके ऊपर—

ऐं परायैं अपरायै परापराये हसौः सदाशिव महाप्रेत-पद्मा-सनाय नमः ।

उक्त विधि से न्यास करके, निम्नानुसार ऋष्यादि न्यास' करना चाहिए—

ऋष्यादि न्यास :

शिरसि दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः ।

मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः ।

हृदि त्रिपुरभैरव्यै देवतायै नमः ।

गुह्ये वाग्भ वाय बीजाय नमः ।

पादयोः तार्तीय शक्तये नमः ।

सर्वाङ्गे काम्य-बीजाय कीलकाय नमः ।।

इसके पश्चात् नाभि से पाँव तक—

ह्स्रैः नमः ।

हृदय से नाभि तक—

ह्स्क्लरीं नमः ।

मस्तक से हृदय तक—

ह्स्रौंः नमः ।

से न्यास करें । इसी प्रकार

दांये हाथ में—

हस्रैं नमः ।

बांये हाथ में—

www.44Books.com

हस्क्लरीं नमः ।

दोनों हाथों में—

ह्स्रौं नमः ।

से न्यास करें। फिर

मस्तक में

हस्रैं नमः ।

मूलाधार में—

हस्क्लरीं नमः ।

तथा हृदय में—

ह्स्रौं नमः ।

से न्यास करके नव-योनि आदि न्यास करें। यथा—

नवयोनि-न्यास :

दक्ष कर्णे—हस्रैं नमः ।

वाम कर्णे—ह्स्क्लरीं नमः ।

चिबुके—ह्स्रौः नमः ।

दक्षगण्डे—ह्स्रैं नमः ।

वाम गण्डे—ह्स्क्लरीं नमः ।

मुखे—ह्स्रौः नमः ।

दक्ष नेत्रे—ह्स्रैं नमः ।

वाम नेत्रे—ह्स्क्लरीं नमः ।

नासिकायां—ह्स्रौं नमः ।

दक्षस्कन्धे—ह्स्रैं नमः ।

वाम स्कन्धे—ह्स्क्लरीं नमः ।

उदरे—ह्स्रौं नमः ।

दक्ष कूर्परे—ह्स्रैं नमः ।

वाम कूर्परे—ह्स्क्लरीं नमः ।

जठरे—ह्स्रौं नमः ।

www.44Books.com

दक्ष जानौ–ह्स्त्रैं नमः ।
वाम जानौ–ह्स्क्लरीं नमः ।
लिङ्गे–ह्स्त्रौं: नमः ।
दक्षपादे–ह्स्त्रैं नमः ।
वामपादे–ह्स्क्लरीं नमः ।
गुह्ये–ह्स्त्रौं नमः ।
दक्षपार्श्वे–ह्स्त्रैं नमः ।
वामपार्श्वे–ह्स्क्लरीं नमः ।
हृदये–ह्स्त्रौं नमः ।
दक्ष स्तने–ह्स्त्रैं नमः ।
वाम स्तने–ह्स्क्लरीं नमः ।
कण्ठे–हस्त्रौं नमः ।

रत्यादि-न्यास

मूलाधारे–ऐं रत्यै: नमः ।
हृदि–क्लीं प्रीत्यै नमः ।
भ्रू मध्ये–सौः मनोभवायै नमः ।
भ्रू मध्ये–सौः अमृतेश्यै नमः ।
हृदि क्लीं–योगेश्यै नमः ।
मूलाधारे–ऐं विश्वयोन्यै नमः ।

मूर्ति-न्यास

मूर्ध्नि–स्ह्लों ईशान–मनोभवाय नमः ।
वक्त्रे–स्ह्ले तत्पुरुष–मकरध्वजाय नमः ।
हृदि–स्ह्लुं अघोर–कुमार-कन्दर्पाय नमः ।
गुह्ये–स्ह्लिं वामदेव मन्त्रथाय नमः ।
पादयोः–स्ह्ल सद्योजात–कामदेवाय नमः ।

www.44Books.com

बाण-न्यास

द्रां द्राविण्यै नमः अंगुष्ठयोः ।

द्रीं क्षोभिण्यै नमः तर्जन्योः ।

क्लीं वशीकरण्यै नमः मध्यमयोः ।

ब्लूं आकर्षिण्यै नमः अनामिकयोः ।

सः सम्मोहन्यै नमः कनिष्ठयोः ।

[**टिप्पणी**—'ज्ञानार्णव' तन्त्र के अनुसार—(१) द्रावण, (२) क्षोभण, (३) वशीकरण, (४) आकर्षण एवं (५) उन्माद—ये पञ्चवाण हैं। न्यास करते समय इन्हीं का स्त्री लिङ्ग में प्रयोग किया जाता है।

काम-न्यास

ह्रीं कामाय नमः अंगुष्ठयोः ।

क्लीं मन्मथाय नमः तर्जन्योः ।

ऐं कन्दर्पाय: नमः मध्यमयोः ।

ब्लूं मकरध्वजाय नमः अनामिकयोः ।

स्त्रीं मीन केतवे नमः कनिष्ठयोः ।

इसके पश्चात् मस्तक, पद, मुख, गुह्य, तथा हृदय—इन पाँच स्थानों में क्रमशः 'द्रां द्राविण्यै नमः' आदि से पञ्चवाण का और 'ह्रीं कामाय नमः' आदि से पञ्च-काम का पुनः न्यास करके कराङ्गन्यास करें। यथा—

ह्स्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ह्स्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

ह्स्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।

ह्स्रैं अनामिकाभ्यां हुं ।

ह्स्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।

ह्स्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास कर, सुभगादि-न्यास करें। यथा—

भाले—ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः ।

भ्रू मध्ये—ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भगायै नमः ।

www.44Books.com

वदने–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भग-सर्पिण्यै नमः ।

कण्ठिकायां–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः भग-मालिन्यै नमः ।

कण्ठे–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्गायै नमः ।

हृदि–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्गकुसुमायै नमः ।

नाभौ–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्ग मेखलायै नमः ।

लिङ्गमूले–ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः अनङ्ग मदनायै नमः ।

इसके बाद निम्नानुसार 'भूषण न्यास' करें—

भूषण-न्यास :

शिरसि अं नमः ।

भाले आं नमः ।

भ्रुवोः इं ईं नमः ।

कर्णयोः उं ऊं नमः ।

नेत्रयोः ऋं ॠं नमः ।

नसि लृं नमः ।

गण्डयोः ॡं एं नमः ।

ओष्ठयो ऐं ओं नमः ।

अद्योदन्ते औं नमः ।

ऊर्ध्वदन्त अं नमः ।

मुखे अः नमः ।

चिबुके कं नमः ।

गले खं नमः ।

कण्ठे गं नमः ।

पार्श्वयोः घं ङं नमः ।

स्तनयोः चं छं नमः ।

बाहुमूलयोः जं झं नमः ।

www.44Books.com

कूर्परयोः ञं टं नमः ।
पाण्योः ठं डं नमः ।
कर पृष्ठयो ढं णं नमः ।
नाभौ तं नमः ।
गुह्ये थं नमः ।
ऊर्वोः दं धं नमः ।
जानुनोः नं पं नमः ।
जंघयो फं बं नमः ।
स्फिचोः भं मं नमः ।
चरण तलयोः यं नमः ।
चरणागुंष्ठयोः रं नमः ।
काञ्च्यां वं नमः ।
ग्रीवायां लं नमः ।
कटके लं नमः ।
हृदि शं नमः ।
गुह्ये क्षं नमः ।
कर्णयोः षं नमः ।
गण्डयोः सं नमः ।
मौलो हं नमः ।

इसके बाद 'त्रिखण्डा-मुद्रा' दिखाकर ध्यान करें। यथा—

ध्यान

"उघदभानु सहस्रकान्तिमरुण क्षौमां शिरोमालिकां ।
रक्तालिप्त पयोधरां जप वटीं विद्यामभीतिं परम् ।।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्रक्तारविन्द श्रियं ।
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटा वन्दे समन्द-स्मितात् ।।"

www.44Books.com

पीठ-पूजा

इस प्रकार मानसोपचार से पूजा कर, शंख-स्थापन करें।

फिर सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार

"ॐ आधार शक्तये नमः।"

से

"ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।"

तक पीठ-पूजा कर, पूर्वादि केशरों में तथा मध्य में—

ॐ इच्छायै नमः।

ॐ ज्ञानायै नमः।

ॐ क्रियायै नमः।

ॐ कामिन्यै नमः।

ॐ काम-दायिन्यै नमः।

ॐ रत्यं नमः।

ॐ रति-प्रियायै नमः।

ॐ नन्दायै नमः।

ॐ नन्दिन्यै नमः।

ॐ मनोन्मन्यै नमः।

को पूजा करके—

ॐ ऐं परायै नमः।

ॐ ऐं अपरायै नमः।

ॐ ऐं परापरायै नमः।

ॐ हसौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः।

से पूजन करें।

फिर, पूर्व-योनि तथा मध्य-योनि के बीच में षोडशी-विद्या-पूजा-पद्धति के अनुसार+ गुरु-पंक्ति का पूजन करें। तत्पश्चात् पञ्च-प्रणव (ऐं ह्रीं हस्ख्फ्रें हसौः) से मूर्ति कल्पना कर, उस मूर्ति में देवता का आवाहन करें। फिर तन्त्रोक्त विधान से पूजन करें।

+ पढ़िए—हमारे द्वारा लिखित '**षोडशी तन्त्र शास्त्र**।'

www.44Books.com

यदि उक्त प्रकार से पूजा करने में असमर्थ हों तो गुरु-पंक्ति का पूजन निम्नानुसार करें।

ॐ गुरुभ्यो नमः।
ॐ गुरु-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ परम-गुरुभ्यो नमः।
ॐ परम-गुरु-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ परापर-गुरुभ्यो नमः।
ॐ ॐ परापर-गुरु-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।
ॐ परमेष्ठि गुरु-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ आचार्येभ्यो नमः।
ॐ आचार्य-पादुकाभ्यो नमः।

पूजा-यन्त्र

'शारदा तिलक' में इसका पूजा-यन्त्र इस प्रकार बताया है—

सर्व प्रथम नवयोनिमय कर्णिका अङ्कित करें। फिर उसके बाहर अष्टदल पद्म तथा पद्म के बाहर चतुर्द्वार युक्त भूपूर की रचना करने से इस देवता का यन्त्र तैयार होता है।
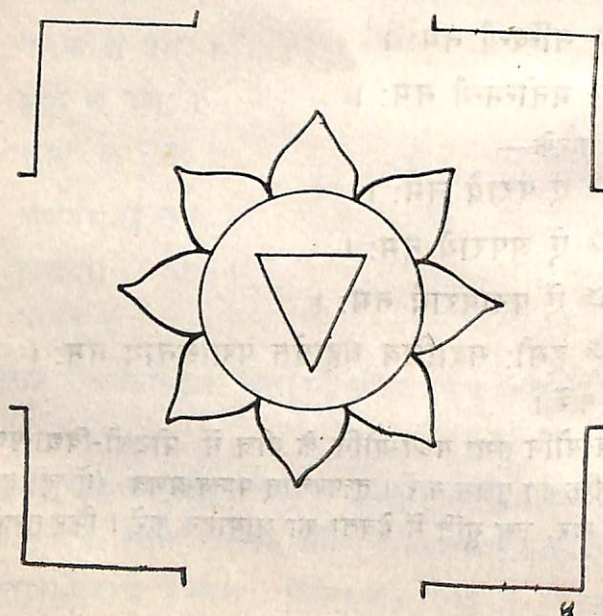
(त्रिपुर भैरवी पंचकूटा पूजन-यन्त्र)

www.44Books.com

अब "ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसौः" इस मन्त्र से देवी की मूर्ति की कल्पना कर, त्रिखण्डा-मुद्रा द्वारा पुनः पूर्ववत् देवो का ध्यान करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से देवी का आवाहन करें—

"ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
पावत्त्वां पूजपिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ।।"

इस प्रकार पञ्चपुष्पांजलि दान तक के कर्म करके आवरण-पूजा प्रारंभ करें।

आवरण-पूजा

देवी के वाम-कोण में—
ऐं रत्यैनमः ।

दक्षिण-कोण में—
क्लीं प्रीत्यै नमः ।

अग्नि-कोण में—
सौः मनोभवायै नमः ।

उक्त मन्त्रों से पूजा कर, केशर में आग्नेयादि कोणों में, मध्य में तथा चारों दिशाओं में "हसां हृदयाय नमः" इत्यादि पूर्वोक्त अङ्ग-मन्त्रों द्वारा षडङ्ग-पूजा करें। फिर

उत्तर में—
द्रां द्राविण्यै नमः ।
द्रीं क्षोभिण्यै नमः ।

दक्षिण में—
क्लीं वशीकरण्यै नमः ।
ब्लूं आकर्षण्यै नमः ।

अग्रभाग में—
सः सम्मोहिन्यै नमः ।

से पंचबाणों की पूजा कर, पुनः उत्तर में—
ब्लूं आकर्षण्यै नमः

अग्रभाग में—

www.44Books.com

स: सम्मोहन्यै नमः ।

से पञ्च वाणों की पूजा कर, पुनः उत्तर में—

ह्रीं कामाय नमः ।

क्लीं मन्मथाय नमः ।

दक्षिण में—

ऐं कन्दर्पाय नमः ।

ब्लूं मकरध्वजाय नमः ।

तथा अग्रभाग में

स्त्रीं मीन केतवे नमः ।

इन मन्त्रों से पञ्चकामों का पूजन करें ।

इसके बाद अष्ट-योनियों में पूर्वादि-क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पूजन करें । यथा—

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: सुभगायै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: भगायै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: भग-सर्पिण्यै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: भग-मालिन्यै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: अनङ्गायै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: अनङ्ग कुसुमायै नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: अनङ्ग मेखलाये नमः ।

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं स: अनङ्ग मदनायै नमः ।

इसके बाद अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पूजन करें—

ॐ असिताङ्ग-ब्राह्मीभ्यां नमः ।

ॐ रुरु-माहेश्वरीभ्यां नमः ।

ॐ चण्ड-कौमारीभ्यां नमः ।

ॐ क्रोध-वैष्णवीभ्यां नमः ।

ॐ उन्मत्त-वाराहीभ्यां नमः ।

www.44Books.com

ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः ।

ॐ भीषण-चामुण्डाभ्यां नमः ।

ॐ संहार-महालक्ष्मीभ्यां नमः ।

इसके पश्चात् अष्टदलों के बाहर इन्द्रादि तथा वज्रादि की पूजा कर, धूपादि से विसर्जन तक के कर्म पूर्ण करें।

इस पूजन में विशेष बात यह है कि नैवेद्यदान के पश्चात् श्रीविद्या-पद्धति में लिखित चारों बलियां इसी समय अर्पित करनी चाहिए।

पुरश्चरण

इस मन्त्र के पुरश्चरण में १०,००,००० जप करके, पलाशपुष्पों द्वारा १२,००० की संख्या में होम करना चाहिए ।।

●●

www.44Books.com

४ सम्पत्प्रदा भैरवी मन्त्र-प्रयोग

'सम्पत्प्रदा भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित है।

मन्त्र

'हस्रैं हस्क्लरीं हस्रौं।"

इसकी पूजा विधि 'त्रिपुर-भैरवी' की भाँति ही है। इनका ध्यान निम्नानुसार हैं—

ध्यान

"आताम्रार्क सहस्राभां स्फुटच्चन्द्र कला जटाम्।
किरीट रत्न विलसच्चित्र विचित्र मौक्तिकाम्॥
स्रवद्रुधिर पङ्काढ्य मुण्डमाला विराजिताम्।
नयन त्रय शोभाढ्यां पूर्णेन्दु वदनान्विताम्॥
मुक्ताहार लता राजत्पीनोन्नतघटस्तनीम्।
रक्ताम्बर परीधानां यौवनोंन्मत्तरूपिणीम्॥
पुस्तकञ्चाभयं वामे दक्षिणे चाक्ष मालिकाम्।
वरदानप्रदां नित्यां महासम्पत्प्रदां स्मरेत्॥"

भावार्थ—"भगवती सम्पत्प्रदा भैरवी तरुण अरुण के समान उज्ज्वल ताम्रवर्ण की है। इनके ललाट पर चन्द्रमा की कला तथा मस्तक पर जटाएँ हैं। रत्नों तथा विलक्षण मोतियों से जटित मुकुट हैं। ये गिरते हुए रुधिर के पङ्क से मुक्त मुण्डमाला धारण किये हैं। इनके तीन नेत्र हैं तथा मुखमण्डल पूर्ण चन्द्रमा की भाँति सुशोभित हैं। इनके घड़े के समान पीनोन्नत स्तनों के ऊपर मोतियों का हार लटक रहा है। ये रक्तवर्ण के वस्त्र धारण किए, यौवनोन्मत्ता हैं। इनके

www.44Books.com

बाँये हाथों में पुस्तक तथा अभय-मुद्रा हैं एवं दाँये हाथों में वर-मुद्रा तथा जप-माला हैं। ये साधक को निरन्तर सम्पत्ति देती रहती है।"

उक्त विधि से ध्यान करके त्रिपुराभैरवी की पूजा-पद्धति के अनुसार ही न्यास तथा पूजादि करें। केवल 'कराङ्ग न्यास' निम्नानुसार करें—

हस्रैं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

हस्क्लह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

हस्रौं मध्यमाभ्यां वषट्।

हस्रौं अनामिकाभ्यां हुं।

स्क्लरीं कनिष्ठाभ्यां वौषट।

हस्रौं करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

पुरश्चरण

इस मन्त्र के पुरश्चरण में ३,००,००० (तीन लाख) जप तथा दशांश होम करें।

तन्त्रान्तर के अनुसार—इस 'कुमारी-पूजा पद्धति' की विधि से इनका न्यास-पूजन आदि करना चाहिए तथा मन्त्र-सिद्धि हेतु १,००,००० की संख्या में जप करना चाहिए।

सिद्ध विद्या होने के कारण इनके पुरश्चरण हेतु एक लाख जप का निर्देश किया गया है।

www.44Books.com
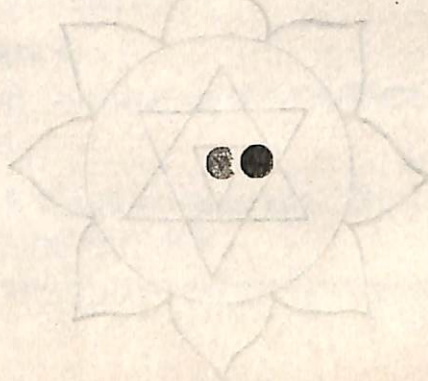
५ | चैतन्य भैरवी-मन्त्र प्रयोग

चैतन्य भैरवी का मन्त्र निम्नलिखित है।

मन्त्र

"स्हैं स्क्लह्रीं स्हौं।"

इस मन्त्र को "त्रैलोक्य मातृका चैतन्य भैरवी विद्या' भी कहते हैं।

पूजा-यन्त्र

'ज्ञानार्णव' के अनुसार इसके पूजा-यन्त्र के लिए पहले त्रिकोण, उसके बाहर षट्कोण, उसके बाहर अष्टदल पद्म अंकित कर, उसके बाहर चतुरस्र तथा चतुर्द्वार की रचना करनी चाहिए। उक्त प्रकार से निर्मित होने वाले यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

(चैतन्य-भैरवी पूजन-यन्त्र)

www.44Books.com
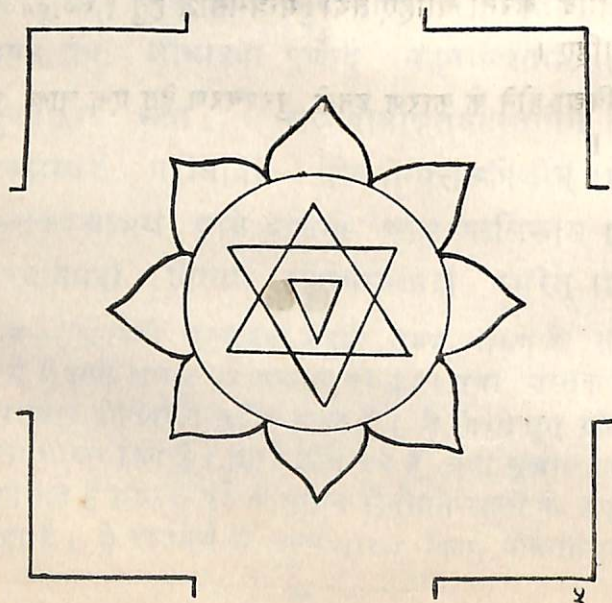
पूजा-विधि

इसकी पूजा-विधि यह है कि सर्वप्रथम सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्यादि से ह्रीं ज्ञानात्मने तक पीठ-पूजा करके हृदय-कमल के केशर में पूर्वादि क्रम से पीठ न्यास करें।

पीठ-न्यास

ॐ वामायै नमः।

ॐ ज्येष्ठायै नमः।

ॐ रौद्रयै नमः।

ॐ अम्बिकायै नमः।

ॐ इच्छायै नमः।

ॐ ज्ञानायै नमः।

ॐ क्रियायै नमः।

ॐ कुब्जिकायै नमः।

ॐ चित्रायै नमः।

ॐ विषघ्निकायै नमः।

ॐ भूचर्यै (भ्रामर्यै) नमः।

ॐ आनन्दायै नमः।

इसके बाद मध्य में—

"हसौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः"

से पूजन करें।

'ज्ञानार्णव' के अनुसार सम्पत्प्रदा, बाला, कौलेशी, सकल सिद्धिदा विद्याओं की भी पीठशक्तियां उक्त प्रकार ही है।

इसके बाद ऋष्यादि न्यास तथा कराङ्ग-न्यास आदि करें। यथा—

ऋष्यादि न्यास

शिरसि दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः।

मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः।

हृदि चैतन्य भैरव्यै देवतायै नमः।

www.44Books.com

कराङ्ग न्यास

स्हैं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
स्क्ल्ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
स्ह्रौं मध्यमाभ्यां वषट् ।
स्हैं अनामिकाभ्यां हुं ।
स्क्स्ह्रीं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।
स्हरौ कस्तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी क्रम से षडङ्गन्यास करना चाहिए। इस न्यास से सर्वाङ्ग रक्षा होती है। इसके बाद निम्नानुसार ध्यान करना चाहिए।

ध्यान

"उद्यद्भानु सहस्राभां नानालङ्कार भूषिताम् ।
मुकुटाग्र लसच्चन्द्ररेखां रक्ताम्बरान्विताम् ।।
पाशांकुशधरां नित्यां वाम हस्ते कपालिनीम् ।
वरदाभय शोभाढ्यां पीनोन्नत घन स्तनीम् ।।"

भावार्थ—भगवती चैतन्य भैरवी के शरीर की कान्ति उदीयमान सहस्र आदित्यों जैसी है। उनके ललाट पर मुकुट तथा चन्द्र कला है। वे विविध आभूषणों से विभूषित तथा रक्त वर्ण के वस्त्र पहने है। उनके चार हाथ हैं। इनके बांये हाथों में पाश और अंकुश तथा दांये हाथों में वर और अभय हैं। वे अत्यन्त स्थूल तथा उन्नत स्तनों वाली हैं।"

उक्त विधि से ध्यान करके, मानसोपचार-पूजा कर, शंख-स्थापन, पीठ-पूजा, पीठ-शक्ति, पीठ-मनु की पूजा, गुरू-पंक्ति-पूजा, पुनः ध्यान-आवाहनादि पञ्च-पुष्पांजलि दान कर आवरण-पूजा करें। यथा—

आवरण-पूजा

अग्निकोणे—

स्हैं हृदयाय नमः ।

ईशाने—

स्क्ल्ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

www.44Books.com

नैर्ऋते—

स्ह्लौः शिखायै वषट् ।

वायुकोणे—

स्हैं कवचाय हुं ।

मध्ये—

स्क्लह्लीं नेत्र-त्रयाय वौषट् ।

चतुर्दिके—

स्ह्लौं अस्त्राय फट् ।

उक्त प्रकार से पूजा कर, त्रिपुरभैरवी की पूजा-पद्धति में लिखित रति आदि देवता की पूजा करें। फिर—

अग्रे—

ॐ वसन्ताय नमः ।

वामे—

ॐ कामदेवाय नमः ।

दक्षिणे—

ॐ चापाय नमः ।

से पूजन कर, पूर्ववत् पंचवाणों की पूजा करें। फिर षट्कोण में पूर्वादि-क्रम से—

ॐ डाकिन्यै नमः ।

ॐ राकिन्यै नमः ।

ॐ लाकिन्यै नमः ।

ॐ काकिन्यै नमः ।

ॐ साकिन्यौ नमः ।

ॐ हाकिन्यौ नमः ।

से पूजा कर, अप्टदलों में पूर्वादि क्रम से पूर्व-लिखित अनङ्ग-कुसुमादि की पजा कर, पूर्वादि-क्रम से दलों के अग्रभाग में—

ॐ पर भृताय (पर-भृते) नमः ।

ॐ साहसाय नमः ।

www.44Books.com

ॐ शुकाय नमः ।
ॐ मेघाह्वयाय (मेघच्छायाय) नमः ।
ॐ मेघाय नमः ।
ॐ अपाङ्गाय नमः ।
ॐ भ्रू-विलासाय नमः ।
ॐ हावाय नमः ।
ॐ भावाय नमः ।

से पूजा करें। फिर इन्द्रादि एवं वज्रादि की पूजा कर, धूपादि से विसर्जन तक के कर्म पूर्ण करें।

पुरश्चरण

इस मन्त्र के पुरश्चरण में एक लाख जप करना चाहिए।

●●

www.44Books.com

६ | षट्कूटा भैरवी-मन्त्र प्रयोग

षट्-कूटा भैरवी का मन्त्र निम्नलिखित है—

मन्त्र

"ड्र्ल्क्स्ह्लैं ड्र्ल्क्स्हीं ड्र्ल्क्स्ह्रौं"

कोई-कोई उक्त मन्त्र के तृतीय बीज को 'ड्र्ल्क्स्हौः' के रूप में भी ग्रहण करते हैं।

'ज्ञानार्णव' के अनुसार डाकिनी-बीज 'ऽ', राकिनी-बीज 'र', लाकिनी-बीज 'ल', काकिनी-बीज 'क', साकिनी-बीज 'स' तथा हाकिनी-बीज 'ह' का संग्रह कर, प्रथम-बीज में ऐकार, द्वितीय-बीज में ईकार तथा तृतीय-बीज में औकार का योग करना चाहिए तथा प्रत्येक बीज में 'विन्दु' का प्रयोग करने से उक्त मन्त्र प्रस्तुत हो जाता है। किसी-किसी मत से तृतीय-बीज में विसर्ग का प्रयोग किया जाता है।

ध्यान

इनका ध्यान इस प्रकार है—

"बाल सूर्य प्रभां देवीं जवाकुसुमसन्निभाम्।
मुण्डमालावलीं रम्यां बालसूर्यनिभांशुकाम्॥
सुवर्ण-कलशाकार पीनोन्नत पयोधराम्।
पाशांकुशौ पुस्तकं च तथा च जपमालिकाम्॥"

भावार्थ—"षट्-कूटा भैरवी बाल-सूर्य के समान तथा जवाकुसुम की भाँति अरुणवर्ण आभावाली हैं। उनके गले में मुण्डमाला सुशोभित है तथा वे अरुणवर्ण के ही वस्त्र पहने हुए हैं। उनके स्तन स्वर्ण-कुम्भ के समान स्थूल तथा उन्नत हैं। वे अपने हाथों में पाश, अंकुश, पुस्तक तथा जपमाला धारण किए हुए हैं।"

www.44Books.com

'कराङ्गन्यास' तथा 'आवरण-पूजा' निम्नानुसार करें—

कराङ्ग न्यास

ड्र्ल्क्स्हैं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ड्र्ल्क्स्हीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ड्र्ल्क्स्हौं मध्यमाभ्यां नमः ।

ड्र्ल्क्स्हैं अनामिकाभ्यां हुं ।

ड्र्ल्क्स्हीं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।

ड्र्ल्क्स्हौं करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार 'हृदयादि षडङ्गन्यास' करें।

पूजा-यन्त्र

'षट्कूटा भैरवी' का पूजा-यन्त्र इस प्रकार बनायें—

पहले त्रिकोण, उसके बाहर द्वादश दल पद्म तथा उसके बाहर चतुर्द्वारयुक्त चतुरस्र अङ्कित करें। इस विधि से निर्मित यन्त्र के स्वरूप को नीचे प्रदर्शित किया गया है—

(षट्कूटा-भैरवी पूजन-यन्त्र)

www.44Books.com
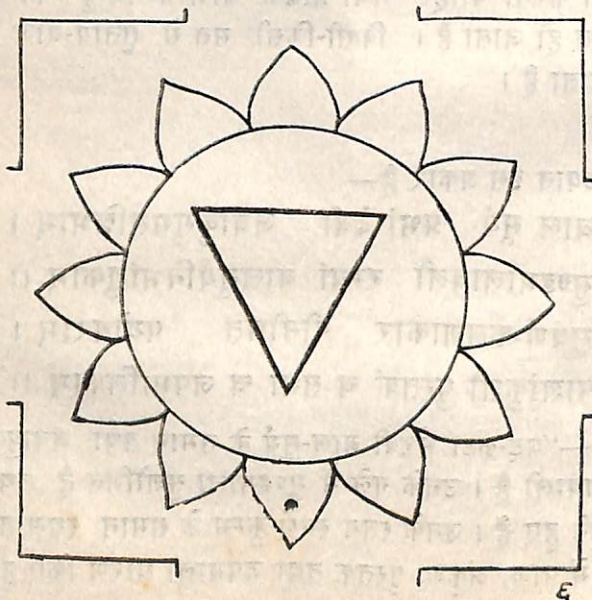
आवरण-पूजा

सर्व प्रथम—

ड्र्ल्क्स्हैं हृदयाय नमः ।
ड्र्ल्क्स्हीं शिरसे स्वाहा ।
ड्र्ल्क्स्हौं शिखायै वषट् ।
ड्र्ल्क्स्हैं कवचाय हुं ।
ड्र्ल्क्स्हीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ड्र्ल्क्स्हौं अस्त्राय फट् ।'

उक्त मन्त्रों से षडङ्ग पूजा-कर, त्रिकोण में रति आदि देवता-त्रय की पूजा करें। फिर षट्कोणों में—

ॐ डाकिन्यै नमः ।
ॐ राकिन्यै नमः ।
ॐ लाकिन्यै नमः ।
ॐ काकिन्यै नमः ।
ॐ शाकिन्यै नमः ।
ॐ हाकिन्यै नमः ।

उक्त मन्त्रों से पूजा कर, अष्ट-दलों में—

ॐ असिताङ्ग ब्राह्मीभ्यां नमः ।
ॐ रुरु-माहेश्वरीभ्यां नमः ।
ॐ चण्ड-कौमारीभ्यां नमः ।
ॐ क्रोध-भैरवीभ्यां नमः ।
ॐ उन्मत्त-वाराहीभ्यां नमः ।
ॐ कपालीन्द्राषीभ्यां नमः ।
ॐ भीषण-चामुण्डाभ्यां नमः ।
ॐ संहार-महालक्ष्मीभ्यां नमः ।

www.44Books.com

उक्त मन्त्रों से पूजन करें। फिर बहिर्पद्मदलों में—

ॐ वामायै नमः ।

ॐ ज्येष्ठायै नमः ।

ॐ रौद्रयै नमः ।

ॐ अम्बिकायै नमः ।

ॐ इच्छायै नमः ।

ॐ ज्ञानायै नमः ।

ॐ क्रियायै नमः ।

ॐ कुब्जिकायै नमः ।

ॐ विचित्रायै नमः ।

ॐ विषघ्निकायै नमः ।

ॐ भूचर्यै नमः ।

ॐ आनन्दायै नमः ।

से पूजाकर, चतुरस्र में सायुध लोकपालों का पूजन करें।

पुरश्चरण

इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख जप है।

www.44Books.com

७ | रुद्र भैरवी-मन्त्र प्रयोग

भगवती 'रुद्र-भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित है—

मन्त्र

'हस्खफ्रें हस्क्लरीं हसौः ।''

पूजा-यन्त्र

इनका पूजा-यन्त्र इस प्रकार है—

सर्वप्रथम त्रिकोण अङ्कित कर, उसके बाहर वृत्त-द्वय तथा अष्टदल पद्म की रचना कर, उसके बाहर वृत्त तथा चतुर्द्वार एवं चतुरस्र बनायें। इस प्रकार निर्मित यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है—

(रुद्र-भैरवी पूजन-यन्त्र)

www.44Books.com
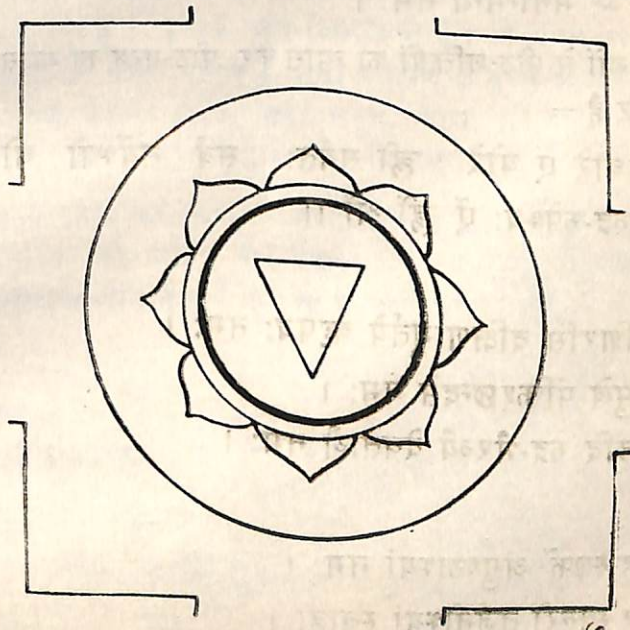
पूजा-विधि

सर्व प्रथम सामान्य-पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्य से प्राणायाम तक सब कर्म करके, निम्नानुसार पीठ-न्यासादि करें।

आधार-शक्ति से लेकर '**ह्रीं ज्ञानात्मने नमः**' तक न्यास करके पूर्वादि क्रम से—

ॐ वामायै नमः।

ॐ ज्येष्ठायै नमः।

ॐ रौद्र्यै नमः।

ॐ काल्यै नमः।

ॐ कल-विकरण्यै नमः।

ॐ बल-विकरण्यै नमः।

ॐ बल-प्रमथन्यै नमः।

ॐ सर्वभूत दमन्यै नमः।

मध्यमें—

ॐ मनोन्मन्यै नमः।

उक्त मन्त्रों से पीठ-शक्तियों का न्यास कर, पीठ-मन्त्र का न्यास करें। पीठ-मन्त्र इस प्रकार है—

"अघोरे ऐं घोरे ह्रीं सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो घोर-घोर तरे श्रीनमोऽस्तु रुद्र-रुपेभ्यः ऐं ह्रीं श्रीं।।

ऋष्यादि न्यास

शिरसि दक्षिणामूर्तये ऋषयः नमः।

मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः।

हृदि रुद्र-भैरव्यै देवतायै नमः।

कराङ्ग न्यास

ह्स्ख्फ्रें अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ह्स्क्लरीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ह्सौः मध्यमाभ्यां वषट्।

www.44Books.com

ह्स्खफ्रें अनामिकाभ्यां हुं ।

ह्स्क्लीं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।

ह्सौः करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादि 'षडङ्गन्यास' करके निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"उद्यद्भानु सहस्राभां चन्द्रचूडां त्रिलोचनाम् ।
नानालङ्कार सुभगां सर्ववैरि निकृन्तनीम् ।।
वमद्रुधिर मुण्डली कलितां रक्तवाससीम् ।
त्रिशूलं डमरुं खड्गं तथा खेटकमेव च ।।
पिनाकं च शरान् देवीं पाशांकुश युगं क्रमात् ।
पुस्तकं चाक्षमालां च शिव सिंहासन स्थिताम् ।।"

भावार्थ—"भगवती रुद्रभैरवी के शरीर की कान्ति उदीयमान सहस्र सूय जैसी है। उनके ललाट पर चन्द्रकला है। वे तीन नेत्रों वाली तथा विविध प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं। वे सर्व शत्रु-विनाशिनी हैं। वे अपने गले में रक्त-वमन करते हुए मुण्डों की माला पहिने हैं तथा रक्तवर्ण के वस्त्र धारण किए हैं। उनके हाथों में त्रिशूल, डमरु- खड्ग, गदा, धनुष, वाण, दो पाश, दो अंकुश, पुस्तक तथा अक्षमाला हैं। वे शिव-सिंहासन पर विराजमान हैं।"

उक्त प्रकार से ध्यान कर, मानसोपचारों से पूजा करके शंख-स्थापन करें। तत्पश्चात् 'चैतन्यभैरवी' की भाँति पीठ-देवता की पूजाकर, पुनः ध्यान-आवाहनादि से पञ्चपुष्पांजलि-दान तक के कर्म करके आवरण-पूजा करें। यथा—

आवरण-पूजा

अग्नि कोणे—

ह्स्खफ्रैं हृदयाय नमः ।

ईशान कोणे—

ह्स्क्लरीं शिरसे स्वाहा ।

नैर्ऋत कोणे—

ह्सौः शिखायै वषट् ।

www.44Books.com

वायु कोणे—

ह् स्खफ्रें कवचाय हुं ।

मध्ये—

ह् स्क्लरीं नेत्र-त्रयाय वौषट् ।

चतुर्दिके—

ह् सौः अस्त्राय फट् ।

उक्त प्रकार से षडङ्ग-पूजा कर, कोण-त्रय में 'रति' आदि की तथा दलों के मूलभाग में 'अनङ्ग कुसुमा' आदि की पूजा करें। फिर दलों में—

ॐ असिताङ्ग–ब्राह्मीभ्यां नमः ।

ॐ रुरु–माहेश्वरीभ्यां नमः ।

ॐ चण्ड–भैरवीभ्यां नमः ।

ॐ क्रोध–भैरवीभ्यां नमः ।

ॐ उन्मत्त–वाराहीभ्यां नमः ।

ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः ।

ॐ भीषण-चामुण्डाभ्यां नमः ।

ॐ संहार–महालक्ष्मीभ्यां नमः ।

से अष्ट-भैरवों तथा अष्ट-मातृकाओं का पूजन करें। फिर भू-गृह में इन्द्रादि लोकपालों एवं वज्रादि की पूजा कर, धूपादि से विसर्जन तक के कर्म पूर्ण करें।

पुरश्चरण

इस मन्त्र के पुरश्चरण में एक लाख जप करके पलाश-पुष्पों से जप का दशांश होम करना चाहिए।

●●

www.44Books.com

८ | भुवनेश्वरी भैरवी-मन्त्र प्रयोग

'भुवनेश्वरी-भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित हैं—

मन्त्र

'हसैं हस्क्ल्ह्रीं हसौः'

इनका पूजा-यन्त्र 'चैतन्य भैरवी' की भाँति ही है।

पूजा-विधि

सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्य से प्राणायाम तक करके, 'चैतन्य भैरवी' की पूजा-विधि में लिखित 'पीठ-न्यास' तक के कर्म करें। फिर निम्नानुसार ऋष्यादि-न्यास करें—

ऋष्यादि-न्यास

शिरसि दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः।
मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः।
हृदि भुवनेश्वरी-भैरव्यै देवतायै नमः।

फिर—

"ह्स्क्ल्ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, हस्क्ल्ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा'—इत्यादि क्रम से कराङ्गन्यास तथा इसी के अनुसार हृदयादि षडङ्ग-न्यास करके ध्यान करें।

ध्यान

"जवाकुसुम सङ्काशां दाड़िमी कुसुमोपमाम्।
चन्द्ररेखां जटाजूटां त्रिनेत्रां रक्तवाससीम्।।
नानालङ्कार सुभगां पीनोन्नत घनस्तनीम्।
पाशांकुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवाश्रये।।"

www.44Books.com

भावार्थ—"भगवती भुवनेश्वरी भैरवी जवा-कुसुम तथा दाडिम-पुष्प के समान रक्तवर्ण वाली हैं। उनके ललाट पर चन्द्रकला तथा मस्तक पर जटा-भार है। वे तीन नेत्रों वाली है लाल रंग के वस्त्र एवं विविध प्रकार के आभूषणों को धारण किए हुए हैं। उनके स्तन स्थूल तथा उन्नत हैं। वे अपने हाथों में पाश, अंकुश, वर तथा अभय-मुद्रा धारण किए हैं।"

उक्त प्रकार से ध्यान करके शेष पूजा-कर्म 'चैतन्य-भैरवी' की पद्धति के अनुसार पूर्ण करना चाहिए।

[**टिप्पणी**—"स्हैं स्हक्ल्ह्रीं स्हौः"—इस मन्त्र द्वारा भी भुवनेश्वरी भैरवी' का पूजनादि किया जाता है। इस मन्त्र की पूजा-पद्धति भी पूर्वोक्तानुसार ही है।

त्रिपुर भैरवी गायत्री

भगवती 'त्रिपुर भैरवी' का गायत्री मन्त्र निम्नानुसार है—

"ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्॥"

षडङ्गन्यास

उक्त मन्त्र का 'षडङ्गन्यास' निम्नानुसार करें—

ॐ त्रिपुरायै च हृदयाय नमः।

ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा।

ॐ भैरव्यै च शिखायै वषट्।

ॐ धीमहि कवचाय हुम्।

ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

इसी प्रकार 'करन्यास' भी करना चाहिए।

www.44Books.com

९ | अन्नपूर्णा भैरवी-मन्त्र प्रयोग

भगवती अन्नपूर्णा को 'अन्नपूर्णेश्वरी देवी' भी कहा जाता है। इनके मन्त्र निम्नलिखित हैं—

मन्त्र

(१) "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा।"

यह २० अक्षर का मन्त्र है।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।"

यह १९ अक्षर का मन्त्र है।

उक्त मन्त्रों के जप तथा देवता के पूजन से धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

पूजा-विधि

इनका पूजा-क्रम यह है कि सर्वप्रथम सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातःकृत्य से पीठ-न्यास तक के कर्म करके, पूर्वादि केशरों में—

ॐ वामायै नमः।

ॐ ज्येष्ठायै नमः।

ॐ रौद्र्यै नमः।

ॐ काल्यै नमः।

ॐ कल–विकरण्यै नमः।

ॐ बल–विकरण्यै नमः।

www.44Books.com

ॐ बल–प्रमथन्यै नमः ।

ॐ सर्व–भूत-दमन्यै नमः ।

मध्य में—

ॐ मनोन्मन्यै नमः ।

उक्त प्रकार से न्यास करें फिर इन्हीं के समीप क्रमशः—

ॐ जयायै नमः ।

ॐ विजयायै नमः ।

ॐ अजितायै नमः ।

ॐ अपराजितायै नमः ।

ॐ नित्यायै नमः ।

ॐ विलासिन्यै नमः ।

ॐ द्रोग्ध्रयै नमः ।

ॐ अघोरायै नमः ।

मध्य में—

ॐ मङ्गलायै नमः ।

से न्यास करें ।

फिर उनके ऊपर—

"ह्सौः सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनाय नमः'

का न्यास करे । फिर निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास' आदि करें ।

ऋष्यादि न्यास

शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः ।

मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः ।

हृदि अन्नपूर्णेश्वर्यै भैरव्यै देवतायै नमः ।

गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः ।

पादयोः श्रीं शक्तये नमः ।

सर्वाङ्गे क्लीं कीलकाय नमः ।

www.44Books.com

कराङ्गन्यास

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः ।
ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास

ह्रां हृदयाय नमः ।
ह्रीं शिरसे स्वाहा ।
ह्रूं शिखायै वषट् ।
ह्रैं कवचाय हुं ।
ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट् ।
ह्रः अस्त्राय फट् ।

पद-न्यास

मूर्ध्नि
ॐ नमः ।
नेत्रयोः
ह्रीं नमः, श्रीं नमः ।
कर्णयोः
क्लीं नमः, नमो नमः ।
नसो
भगवति नमः माहेश्वरि नमः ।
मुखे
अन्नपूर्णे नमः ।
गुह्ये
स्वाहा नमः ।

www.44Books.com

फिर गुह्य से मूर्ध्नि तक क्रमशः इन्हीं मन्त्रों से क्रमशः न्यास करे। इसके पश्चात् प्रारम्भ के चार बीजों का ब्रह्मरन्ध्र, मुख, हृदय तथा मूलाधार में क्रमशः न्यास कर, शेष पाँच बीजों का भ्रू-मध्य, नासिका, कण्ठ, नाभि तथा लिङ्ग में न्यास करें। फिर मूल-मन्त्र से 'व्यापक न्यास' कर, निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"तप्त कांचनवर्णाभां बालेन्दु कृत शेखराम्।
नवरत्न प्रभादीप्त मुकुटां कुंकुमारुणां ।।

चित्रवस्त्र परीधानां मकराक्षीं त्रिलोचनाम्।
सुवर्ण कलाशाकार पीनोन्नत पयोधरां ।।

गो क्षीर धाम धवलं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनाम्।
प्रसन्नवदनं शम्भुं नीलकण्ठ विराजितम् ।।

कपर्दिनं स्फुरत्सर्पभूषणं कुन्दसन्निभम्।
नृत्यन्तमनिशं हृष्टं द्रष्ट्वानन्दमयीं परां ।।

सानन्द मुख लोलाक्षीं मेखलाढ्य नितम्बिनीम्।
अन्नदानरतां नित्यां भूमि श्रीभ्यामलंकृताम् ।।"

भावार्थ—"भगवती अन्नपूर्णेश्वरी भैरवी के शरीर की कान्ति तप्त-स्वर्ण जैसी है। उनके मस्तक पर बाल-चन्द्र सुशोभित है। उनका मुकुट नवीन रत्नों की चमक से दीप्तिमान है। उनके शरीर का वर्ण कुंकुम के समान अरुण है। वे विलक्षण-वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके मकर जैसे सुन्दर तीन नेत्र हैं। उनके दोनों स्तन स्वर्ण-कलश की भाँति स्थूल तथा उन्नत हैं। ऐसे स्वरूप वाली भगवती भैरवी श्वेतवर्ण वाले, पाँच मुखों वाले, तीन नेत्रों वाले, प्रसन्नामुख, नीलकण्ठ, सर्पो से विभूषित शरीर वाले एवं कुन्द-पुष्प जैसी कान्ति मुक्त शरीर वाले शिवजी को नृत्य करते हुए देख कर अत्यन्त आनन्दित हो रही हैं। देवी के आनन्दित मुख मण्डल में चञ्चल नेत्र सुशोभित हैं। कटि में बंधी मेखला (करधनी) सुशोभित है। वे पृथ्वी तथा लक्ष्मी से अलंकृत नित्य अन्न-दान करने में संलग्न हैं।

उक्त प्रकार से ध्यान कर, मानसोपचार-पूजा करें तथा शंख स्थापित करें।

www.44Books.com

पूजा-यन्त्र

देवी का पूजा-यन्त्र इस प्रकार तैयार करें—

पहले त्रिकोण, उसके बाहर चतुर्दल पद्म, उसके बाहर अष्टदल पद्म, उसके बाहर षोडशदल पद्म तथा अन्त में चतुर्द्वार युक्त भूपुर का निर्माण करें।

उक्त विधि से निर्मित यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित किया गया है—
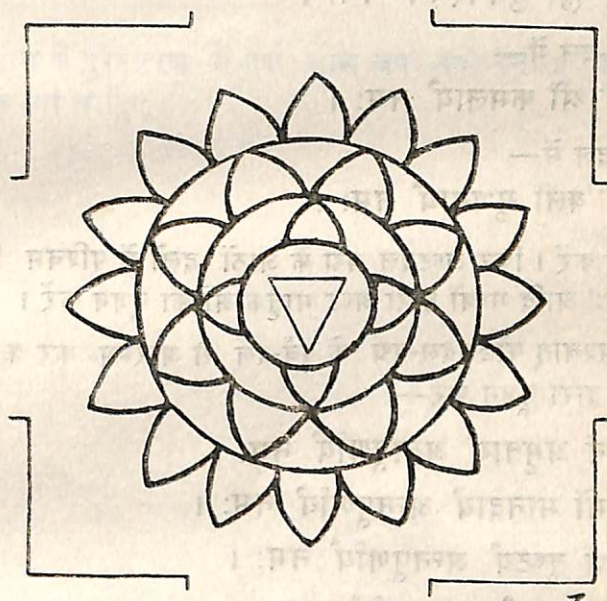
(अन्नपूर्णा भैरवी पूजन-यन्त्र)

यन्त्रलेखनोपरान्त पीठ-पूजा कर, पुनः ध्यान-आवाहनादि से पञ्च-पुष्पांजलि प्रदान पर्यन्त कर्म कर, आवरण-पूजा आरम्भ करें। यथा—

आवरण-पूजा

कर्णिका में, अग्नि, ईशान, नैर्ऋत्व, वायु कोणों में तथा मध्य एवं चारों दिशाओं में क्रमशः **"ह्रां हृदयाय नमः"** इत्यादि से षडङ्ग-पूजा करें। फिर, त्रिकोण के अग्रभाग में "ॐ ह्रौं नमः शिवाय नमः'—इस मन्त्र द्वारा पूजाकर, वायुकोण में **''ॐ नमो भगवते वराह रुपाय भूर्भुवः स्वः पतये भू-पतित्व मे देहि ददापय स्वाहा"**—इस मन्त्र से वराहदेव की पूजा करें।

फिर दक्षिण कोण में नारायण की पूजा कर, दक्षिण तथा वाम भाग में

www.44Books.com

"ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्न प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं"—इससे भूमि तथा श्री की पूजा करें।

फिर चतुर्दल पद्म के पूर्व-दल में—

ॐ पर-विद्यायै नमः।

दक्षिण-दल में—

"ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः।

पश्चिम-दल में—

"श्रीं कमलायै नमः।

उत्तर-दल में—

"क्लीं सुभगायै नमः।

से पूजा करें। फिर अष्टदल पद्म के आठों दलों में पश्चिम दिशा के क्रम से 'ब्राह्म्यैनमः' आदि मन्त्रों द्वारा अष्ट मातृकाओं का पूजन करें।

इसके पश्चात् षोडशदल-पद्म के पूर्व-दल से आरम्भ कर क्रमशः निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा पूजन करें—

नं अमृतायै अन्नपूर्णायै नमः।
मों मानदायै अन्नपूर्णायै नमः।
भं तुष्टयै अन्नपूर्णायै नमः।
गं पुष्ट्यै अन्नपूर्णायै नमः।
वं प्रीत्यै अन्नपूर्णायै नमः।
तिं रत्यै अन्नपूर्णायै नमः।
मां क्रियायै अन्नपूर्णायै नमः।
हें श्रियै अन्नपूर्णायै नमः।
श्वं सुधायै अन्नपूर्णायै नमः।
रिं रात्र्यै अन्नपूर्णायै नमः।
न्नं ज्योतस्नायै अन्नपूर्णायै नमः।
लं हेमवत्यै अन्नपूर्णायै नमः।
पूं छायायै अन्नपूर्णायै नमः।

www.44Books.com

र्णे पूर्णिमायै अन्नपूर्णायै नमः ।
स्वां नित्यायै अन्नपूर्णायै नमः ।
हां अमावस्यायै अन्नपूर्णायै नमः ।

इसके अनन्तर चतुरस्र में दश दिक्पालों की पूजा कर, धूपादि से विसर्जन तक के कर्म कर, पूजन समाप्त करें।

पुरश्चरण

इस मन्त्र के पुरश्चरण में एक लाख जप तथा घृताक्त अन्न से जप का दशांश होम करना चाहिए।

www.44Books.com

१० | विविध भैरवी-मन्त्र प्रयोग

कौलेश-भैरवी मन्त्र

"कौलेश-भैरवी" का मन्त्र निम्नलिखित है—

"स्ह्लैं स्हक्लरीं स्ह्लौं ।"

'कौलेश-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। पूजा-विधि 'सम्पत्प्रदा-भैरवी' के समान ही है।

सकल-सिद्धिदा-भैरवी मन्त्र

"सकल-सिद्धिदा-भैरवी" का मन्त्र निम्नलिखित है—

"स्हैं स्हक्लीं स्ह्लौं स्है स्हलीं स्हौं ।"

'सकल सिद्धिदा-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। पूजा-विधि 'सम्पत्प्रदा-भैरवी' के समान ही है।

भय-विध्वंसिनी-भैरवी मन्त्र

"भय-विध्वंसिनी-भैरवी" का मन्त्र निम्नलिखित है—

ह्स्रैं हस्त्रीं हसौं ।"

'भय विध्वंसिनी-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। पूजा-विधि 'सम्पत्प्रदा-भैरवी' के समान ही है।

कामेश्वरी-भैरवी मन्त्र

'ज्ञानार्णव' के अनुसार—भगवती 'कामेश्वरी-भैरवी' पञ्च सिंहासनों में से पूर्व दिशा में स्थित सिंहासन पर समासीना रहती है। इनका ग्यारह अक्षरों का मन्त्र निम्नानुसार है—

"स्हैं स्क्लह्रीं नित्य क्लिन्ने मदद्रवे स्ह्लौः ।"

www.44Books.com

'कामेश्वरी-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। इनका ध्यान, पूजन आदि "चैतन्य भैरवी" की पूजा-पद्धति के अनुसार है। केवल आवरण-पूजा में थोड़ा सा भेद यह है कि पहले त्रिकोण के अग्रकोणादि में क्रमशः—

ॐ नित्यायै नमः।

ॐ क्लिन्नायै नमः।

ॐ मद द्रवयै नमः।

से पूजा कर, षडङ्ग-पूजन समाप्त करना चाहिए।

नित्या-भैरवी मन्त्र

'नित्या-भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित है—

"ह्स्क्ल्ड्रैं ह्स्क्ल्ड्रीं ह्स्क्ल्ड्रौं।"

'नित्या-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। 'ज्ञानार्णव' में लिखा है कि 'षट्कूटा-भैरवी' के मन्त्र-वर्णों का विलोम से उच्चारण करने पर 'नित्या-भैरवी' का मन्त्र बन जाता है।

इनकी पूजा-विधि 'षट्-कूटा-भैरवी' की पद्धति के समान ही है।

नव कूटा-बाला-भैरवी मन्त्र

भगवती नवकूटा-बाला-भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित है—

"ऐं क्लीं सौः ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौं ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः।"

'नवकूटा-बाला-भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। पूजा विधि 'त्रिपुरा बाला भैरवी' की भाँति ही है।

त्रिपुरा-बाला-भैरवी मन्त्र

भगवती "त्रिपुरा-बाला-भैरवी' का मन्त्र निम्नलिखित है—

ऐं क्लीं सौः।"

भगवती 'त्रिपुरा बाला भैरवी' की पूजा इसी मन्त्र से करनी चाहिए। इनकी पूजा में कराङ्ग-न्यास निम्नानुसार करें—

ऐं अगुष्ठाभ्यां नमः।

क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

सौः मध्यमाभ्यां वषट्।

ऐं अनामिकाभ्यां हुं।

www.44Books.com

क्लीं कनिष्ठाभ्यां वौषट् ।

सौः करतल-कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादि 'षडङ्गन्यास' करना चाहिए।

इनके पुरश्चरण में तीन लाख मन्त्र-जप करके, जप का दशांश होम तथा होम का दशांश तर्पण करना चाहिए।

पुरश्चरण करने वाला सर्व-सौभाग्यशाली होता है।

त्रिपुरा-बाला के अन्य मन्त्र

भगवती 'त्रिपुरा-बाला' के अन्य मन्त्र निम्नलिखित है। इनके पुरश्चरण हेतु एक लाख जप करना चाहिए—

(१) "ऐं क्लीं सौः ।"

यह 'त्रिपुरा बाला' का 'त्र्यक्षर' मन्त्र है।

(२) "ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ।"

यह 'त्रिपुरा बाला' का 'पञ्चाक्षर' मन्त्र है।

(३) "हंसः ऐं क्लीं सौः ।"

(४) "ऐं क्लीं सौः हंसः ।"

उक्त दोनों मन्त्रों के जप से भगवती 'त्रिपुरा-बाला देवी' के सुप्तादि दोषों की शुद्धि होती है।

(५) "आं संहरैं ह्लीं सहकलरीं क्रौ सहरौः ।"

यह 'त्रिपुरा बाला' का 'चतुर्दशाक्षर' मन्त्र है।

(६) आं सहरैं ह्लीं सहकलरीं क्रौं सहरौंः हंसः ।"

यह 'त्रिपुरा बाला' का षोडशाक्षर मन्त्र है।

उक्त सभी मन्त्रों की पूजा-विधि 'षट्कूटा भैरवी' के समान ही समझनी चाहिए।

www.44Books.com

११ | त्रिपुरभैरवी कवच, स्तोत्र आदि

इस प्रकरण में भगवती त्रिपुर भैरवी के कवच, स्तोत्र, स्तव, सहस्रनाम आदि संकलित किए गए हैं। मन्त्र-जप के बाद इनका पाठ करना चाहिए।

सामान्य रूप से भी इन स्तोत्रादि का पाठ साधक की मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है।

श्री त्रिपुर भैरवी कवचम्

श्री पार्वत्युवाच :

देवदेव महादेव सर्वशास्त्र विशारदः।
कृपां कुरु जगन्नाथ धर्मज्ञोसि महामते ॥१॥
भैरवी या पुरा प्रोक्ता विद्या त्रिपुर पूर्विका।
तस्यास्तु कवचं दिव्यं मह्यं कथय तत्त्वतः ॥२॥
तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा जगाद जगदीश्वरः।
अद्भुतं कवचं देव्या भैरव्या दिव्यरूपवै ॥३॥

ईश्वर उवाच :

कथयामि महाविद्याकवचं सर्वदुर्लभम्।
श्रृणुष्व त्वं च विधिना श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत् ॥४॥
यस्याः प्रसादात्सकलं विभर्मि भुवनत्रयम्।
यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥५॥
मातापिता जगद्धन्या जगद्ब्रह्मस्वरूपिणी।
सिद्धिदात्री च सिद्धास्या ह्यसिद्धा दुष्टजन्तुषु ॥६॥

www.44Books.com

सर्वभूतप्रियकरी सर्वभूतस्वरूपिणी ।
ककारी पातु मां देवी कामिनी कामदायिनी ॥७॥
एकारी पातु मां देवी मूलाधारस्वरूपिणी ।
इकारी पातु मां देवी भूरिसर्वसुखप्रदा ॥८॥
लकारी पातु मां देवी इन्द्राणीवरवल्लभा ।
ह्लींकारी पातु मां देवी सर्वदा शम्भुसुन्दरी ॥९॥
एतैर्वर्णैर्महामाया शाम्भवी पातु मस्तकम् ।
ककारे पातु मां देवी शर्वाणी हरगेहिनी ॥१०॥
मकारे पातु मां देवी सर्वपापप्रणाशिनी ।
ककारे पातु मां देवी कामरूपधरा सदा ॥११॥
ककारे पातु मां देवी शम्बरारिप्रिया सदा ।
पकारे पातु मां देवी धराधरणिरूपधृक् ॥१२॥
ह्लींकारी पातु मा देवी अकारार्द्धशरीरिणी ।
एतैर्वर्णैर्महामाया कामराहुप्रियावतु ॥१३॥
मकारः पातु मां देवि सावित्री सर्वदायिनी ।
ककारः पातु सर्वत्र कलाम्बरस्वरूपिणी ॥१४॥
लकारः पातु मां देवी लक्ष्मीः सर्वसुलक्षणा ।
ह्लीं पातु मां तु सर्वत्र देवी त्रिभुवनेश्वरी ॥१५॥
एतैर्वर्णैर्महामाया पातु शक्तिस्वरूपिणी ।
वाग्भवं मस्तकं पातु वदनं कामराजिका ॥१६॥
शक्तिस्वरूपिणी पातु हृदयं यन्त्रसिद्धिदा ।
सुन्दरी सर्वदा पातु सुन्दरी परिरक्षतु ॥१७॥
रक्तवर्णा सदा पातु सुन्दरी सर्वदायिनी ।
नानालंकारसंयुक्ता सुन्दरी पातु सर्वदा ॥१८॥
सर्वाङ्गसुन्दरी पातु सर्वत्र शिवदायिनी ।
जगदाह्लादजननी शम्भुरूपा च मां सदा ॥१९॥

www.44Books.com

सर्वमन्त्रमयी पातु सर्वसौभाग्यदायिनी ।
सर्वलक्ष्मीमयी देवी परमानन्ददायिनी ॥२०॥
पातु मां सर्वदा देवी नानाशङ्खनिधिः शिवा ।
पातु पद्मनिधिर्द्देवी सर्वदा शिवदायिनी ॥२१॥
दक्षिणामूर्तिमा पातु ऋषिः सर्वत्र मस्तके ।
पंक्तिच्छन्दःस्वरूपा तु मुखे पातु सुरेश्वरी ॥२२॥
गन्धाष्टकात्मिका पातु हृदयं शाङ्करी सदा ।
सर्वसम्मोहिनी पातु पातु संक्षोभिणी सदा ॥२३॥
सर्वसिद्धिप्रदा पातु सर्वाकर्षणकारिणी ।
क्षोभिणी सर्वदा पातु वशिनी सर्वदावतु ॥२४॥
आकर्षणी सदा पातु सम्मोहिनी सदावतु ।
रतिर्द्देवी सदा पातु भगाङ्गा सर्वदावतु ॥२५॥
माहेश्वरी सदा पातु कौमारी सर्वदावतु ।
सर्वाह्लादनकारी मां पातु सर्ववशङ्करी ॥२६॥
क्षेमङ्करी सदा पातु सर्वाङ्गसुन्दरी तथा ।
सर्वाङ्गयुवतिः सर्वं सर्वसौभाग्यदायिनी ॥२७॥
वाग्देवी सर्वदा पातु वाणिनी सर्वदावतु ।
वशिनी सर्वदा पातु महासिद्धिप्रदा सदा ॥२८॥
सर्वविद्राविणी पातु गणनाथः सदावतु ।
दुर्गा देवी सदा पातु बटुकः सर्वदावतु ॥२९॥
क्षेत्रपालः सदा पातु पातुचावीरशान्तिका ।
अनन्तः सर्वदा पातु वराहः सर्वदावतु ॥३०॥
पृथिवी सर्वदा पातु स्वर्णसिंहासनं तथा ।
रक्तामृतं च सततं पातु मां सर्वकालतः ॥३१॥
सुरार्णवः सदा पातु कल्पवृक्षः सदावतु ।
श्वेतच्छत्रं सदा पातु रक्तदीपः सदावतु ॥३२॥

www.44Books.com

नन्दनोद्यानं सततं पातु मां सर्वसिद्धये ।
दिक्पालाः सर्वदा पान्तु द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा ।।३३।।
वाहनानि सदा पान्तु अस्त्राणि पान्तु सर्वदा ।
शस्त्राणि सर्वदा पान्तु योगिन्यः पान्तु सर्वदा ।।३४।।
सिद्धाः पान्तु सदा देवी सर्वसिद्धिप्रदावतु ।
सर्वाङ्गसुन्दरी देवी सर्वदा पातु मां तथा ।।३५।।
आनन्दरूपिणी देवी चित्स्वरूपा चिदात्मिका ।
सर्वदा सुन्दरी पातु सुन्दरी भवसुन्दरी ।।३६।।
पृथग्देवालये घोरे संकटे दुर्गमे गिरौ ।
अरण्ये प्रान्तरे वापि पातु मां सुन्दरी सदा ।।३७।।
इदं कवचमित्युक्तो मन्त्रोद्धारश्च पार्वति ।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा त्रिसन्ध्यं नियतः शुचिः ।।३८।।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते ।
गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा ।।३९।।
स्वयंभूकुसुमैः शुक्लैर्भूमिपुत्रे शनौ सुरे ।
श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे शिवालये ।।४०।।
स्वशक्त्या गुरुणा यन्त्रं पूजयित्वा कुमारिकाः ।
तन्मनुं पूजयित्वा च गुरुपंक्ति तथैव च ।।४१।।
देव्यै बलिं निवेद्याथ नरमार्जारसूकरैः ।
नकुलैर्महिषैर्मेषैः पूजयित्वा विधानतः ।।४२।।
धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं कण्ठे वा दक्षिणे भुजे ।
सुतिथौ शुभनक्षत्रे सूर्यस्योदयने तथा ।।४३।।
धारयित्वा च कवचं सर्वसिद्धि लभेन्नरः ।
कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ।।४४।।
शक्नोमि तु महेशानि वक्तुं तस्य फलं तु यत् ।
न दुर्भिक्षफलं तत्र न चापि पीडनं तथा ।।४५।।

www.44Books.com

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
सर्वरक्षाकरं जन्तोश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥४६॥
मन्त्रं प्राप्य विधानेन पूजयेत्सततं सुधीः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये कवचं देवरूपिणम् ॥४७॥
गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् ।
तत्रापि कवचं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये ॥४८॥
श्लोकं वास्तवमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः ।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छङ्करेण प्रभाषितम् ॥४९॥
गुरुर्द्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य च पार्वती ।
अभेदेन यजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥५०॥

॥ इति श्री रुद्रयामले भैरव-भैरवी सम्वादे श्री त्रिपुर भैरवी कवचं समाप्तम् ॥

श्री त्रैलोक्य विजय भैरवी कवचम्

श्रीदेव्युवाच :

भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया ।
सांप्रातं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम् ॥१॥
त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम् ।
त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति ॥२॥

ईश्वर उवाच :

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे ।
त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम् ॥३॥
पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधुसूदनः ॥४॥
ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्टदायकः ।
धनाधिपः कुबेरोपि वासवस्त्रिदशेश्वरः ॥५॥

www.44Books.com

यस्य प्रसादादीशोहं त्रैलोक्यविजयी विभुः ।
न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन ।।६।।
पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्च मृत्युमाप्नुयात् ।
भैरव्याः कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरेव च ।।७।।
विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।८।।
अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः ।
भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गो बीजत्रयात्मकः ।।६।।
बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा ।
भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका ।।१०।।
दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु ।
कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु ।।११।।
सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा ।
हस्रैं कण्ठं हसकलरीं स्कन्धौ पातु हस्रौं भुजौ ।।१२।।
पञ्चमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु ।
हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौः स्तनौ मम ।।१३।।
पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम ।
हस्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हस्कलरीं सदा ।।१४।।
कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा ।
ऐंईंओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु ।।१५।।
हस्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हस्कलह्रीं सदा ।
पातु हस्रौं करौ पातु षट्कूटा भैरवी मम ।।१६।।
सहस्रैं सक्थिनी पातु सहस्कलरीं सदावतु ।
गुह्यदेशं हस्रौं पातु जानुनी भैरवी मम ।।१७।।
सम्पत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हस्क्लीं पदौ ।
पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु ।।१८।।

www.44Books.com

हसैं मां भवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेवतु ।
हसौं मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता ॥१९॥

ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु नैर्ऋत्यां चक्रभैरवी ।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥२०॥

ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु ।
ऊर्ध्वं प्रागुक्तबीजानि रक्षन्तु मामधःस्थले ॥२१॥

दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी ।
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सा तारा सर्वत्र मां सदावतु ॥२२॥

संग्रामे कानने दुर्गे तोये तरङ्गदुस्तरे ।
खड्गकर्तृधारा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु ॥२३॥

इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत् ।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥२४॥

यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ॥२५॥

यः शत्रुभीतो रणकातरो वा
भीतो वने वा सलिलालये वा ।
वादे सभायां प्रतिवादिनो वा
रक्षः प्रकोपाद्ग्रहसंकुलाद्वा ।
प्रचण्डदण्डाक्षमनाच्च भीतो
गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्साध्यात् ।
अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्त्रिसन्ध्यं
स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च ॥२६॥

त्रैलोक्य विजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम् ।
विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥२७॥

www.44Books.com

कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवन्ति कुसुमानि च ।।२८।।
लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भुवनै मुखे ।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम् ।।२९।।
वालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात् ।।३०।।

।। इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वर सम्वादे त्रैलोक्य
विजयं नाम भैरवी कवचं समाप्तम् ।।

श्री त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रम्

महाकालभैरव उवाच :

अथ वक्ष्ये महेशानि देव्या नाम सहस्रकम् ।
यत्प्रसादान्महादेवि चतुर्वर्गफलं लभेत् ।।१।।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वमृत्युविनाशनम् ।
सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं नातः परतरः स्तवः ।।२।।
नातः परतरा विद्या तीर्थन्नातः परं स्मृतम् ।
यस्यां सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ।।३।।
क्षयमेष्यति तत्सर्वं लयकाले महेश्वरि ।
नमामि त्रिपुरां देवीं भैरवीं भयमोचिनीम् ।
सर्वसिद्धिकरीं साक्षान्महापातकनाशिनीम् ।।४।।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रस्य भगवानृषिः पंक्तिश्छन्दः आद्या शक्तिः भगवतीत्रिपुरभैरवी देवता सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ त्रिपुरा परमेशानी योगसिद्धिनिवासिनी ।
सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वसिद्धिप्रवर्तिनी ।।१।।
सर्वाधारमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदा शुभा ।
योगिनी योगमाता च योगसिद्धिप्रवर्तिनी ।।२।।

www.44Books.com

योगिध्येया योगमयी योगियोगनिवासिनी ।
हेला लीला तथा क्रीडा कालरूपप्रवर्तिनी ।।३।।
कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी ।
कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया ।।४।।
कटुः कपटकेशा च कपटा कुटिलाकृतिः ।
कुमुदा चर्चिका कान्तिः कालरात्रिप्रिया सदा ।।५।।

घोराकारा घोरतरा धर्माधर्मप्रदा मतिः ।
घण्टाघर्घरदा घण्टा घण्टानादप्रिया सदा ।।६।।
सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा स्थूला अतिस्थूला सदामतिः ।
अतिसत्या सत्यवती सत्यसङ्केतवासिनी ।।७।।
क्षमा भीमा तथाऽभीमा भीमनादप्रवर्तिनी ।
भ्रमरूपा भयहरा भयदा भयनाशिनी ।।८।।
श्मशानवासिनी देवी श्मशानालयवासिनी ।
शवासना शवाहारा शवदेहा शिवाऽशिवा ।।९।।

कण्ठदेशशवाहारा शवकङ्कणधारिणी ।
दन्तुरा सुदती सत्या सत्यसंकेतवासिनी ।।१०।।
सत्यदेहा सत्यहारा सत्यवादनिवासिनी ।
सत्यालया सत्यसङ्गा सत्यसङ्गरकारिणी ।।११।।
असङ्गसङ्गरहिता सुसङ्गासङ्गमोहिनी ।
मायामतिर्महामाया महामखविलासिनी ।।१२।।
गलद्रुधिरधारा च मुखद्वयनिवासिनी ।
सत्यायासा सत्यसङ्गा सत्यसङ्गतिकारिणी ।।१३।।
असङ्गा सङ्गनिरता सुसङ्गा सङ्गवासिनी ।
सदासत्या महासत्या मासपाशा सुमासका ।।१४।।
मांसाहारा मांसधरा मांसाशी मांसभक्षिका ।
रक्तपाना रक्तरुचिरारक्ता रक्तवल्लभा ।।१५।।

www.44Books.com

रक्ताहारा रक्तप्रिया रक्तनिन्दकनाशिनी ।
रक्तपानप्रिया बाला रक्तदेशा सुरक्तिका ॥१६॥
स्वयम्भूकुसुमस्था च स्वयम्भूकुसुमोत्सुका ।
स्वयम्भूकुसुमाहारा स्वयम्भूनिन्दकासना ॥१७॥
स्वयम्भूपुष्पकप्रीता स्वयम्भूपुष्पसम्भवा ।
स्वयम्भूपुष्पहाराढ्या स्वयम्भूनिन्दकान्तका ॥१८॥
कुण्डगोलविलासी च कुण्डगोलसदामतिः ।
कुण्डगोलप्रियकरी कुण्डगोलसमुद्भवा ॥१९॥
शुक्रात्मिका शुक्रकरा सुशुक्रा च सुशुक्तिका ।
शुक्रपूजकपूज्या च शुक्रनिन्दकनिन्दका ॥२०॥
रक्तमाल्या रक्तपुष्पा रक्तपुष्पकपुष्पका ।
रक्तचन्दनसिक्तांगी रक्तचन्दननिन्दका ॥२१॥
मत्स्या मत्स्यप्रिया मान्या मत्स्यभक्षा महोदया ।
मत्स्याहारा मत्स्यकामा मत्स्यनिन्दकनाशिनी ॥२२॥
केकराक्षी तथा क्रूरा क्रूरसैन्यविनाशिनी ।
क्रूरांगी कुलिशांगी च चक्रांगी चक्रसम्भवा ॥२३॥
चक्रदेहा चक्रहारा चक्रकङ्कालवासिनी ।
निम्ननाभिर्भीतिहरा भयदा भयहारिका ॥२४॥
भयप्रदा भयाभीता अभीमा भीमनादिनी ।
सुन्दरी शोभना सत्या क्षेम्या क्षेमकरी तथा ॥२५॥
सिन्दूराञ्चितसिन्दूरा सिन्दूरसदृशाकृतिः ।
रक्तारञ्जितनासा च सुनासा निम्ननासिका ॥२६॥
खर्वा लम्बोदरी दीर्घा दीर्घघोणा महाकुचा ।
कुटिला चञ्चला चण्डी चण्डनादप्रचण्डिका ॥२७॥
अतिचण्डा महाचण्डा श्रीचण्डा चण्डवेगिनी ।
चाण्डाली चण्डिका चण्डशब्दरूपा च चञ्चला ॥२८॥

www.44Books.com

चम्पा चम्पावती चोस्ता तीक्ष्णतीक्ष्णा प्रिया क्षतिः ।
जलदा जयदा योगा जगदानन्दकारिणी ॥२६॥
जगद्वन्द्या जगन्माता जगती जगतः क्षमा ।
जन्या जयजनेत्री च जयिनी जयदा तथा ॥३०॥
जननी च जगद्धात्री जयाख्या जयरूपिणी ।
जगन्माता जगन्मान्या जयश्रीर्जयकारिणी ॥३१॥
जयिनी जयमाला च जया च विजया तथा ।
खंगिनी खङ्गरूपा च सुसंगा खंगधारिणी ॥३२॥
खङ्गरूपा खङ्गकरा खङ्गिनी खंगवल्लभा ।
खंगदा खंगभावा च खंगदेहसमुद्भवा ॥३३॥
खंगा खंगधरा खेला खंगिनी खंगमण्डिनी ।
शङ्खिनी चापिनी देवी वज्रिणी शूलिनी मतिः ॥३४॥
बलिनी भिन्दिपालो च पाशिनी चांकुशी शरी ।
धनुषो चटको चर्मा दन्ती च कर्णनालिकी ॥३५॥
मुसली हलरूपा च तूणोरगणनाशिनी ।
तूणालया तूणहरा तृणसम्भवरूपिणी ॥३६॥
सुतूणी तूण खेदा च तृणांगी तूणवल्लभा ।
नानास्त्रधारिणी देवी नानाशस्त्रसमुद्भवा ॥३७॥
लाक्षालक्षहरा लाभा सुलाभा लाभनाशिनी ।
लाभहारा लाभकरा लाभिनी लाभरूपिणी ॥३८॥
धरित्री धनदा धान्या धान्यरूपा धरा धनुः ।
धुरशब्दा धुरा मान्या धरांगी धननाशिनी ॥३६॥
धनहा धनलाभा च धनलभ्या महाधनु. ।
अशान्ता शान्तिरूपा च श्वासमार्गनिवासिनी ॥४०॥
गगणा गणसेव्या च गणांगा वागवल्लभा ।
गणदा गणहा गम्या गमनागमसुन्दरी ॥४१॥

www.44Books.com

गम्यदा गणनाशी च गदहा गदवर्द्धिनी ।
स्थैर्या च स्थैर्यनाशा च स्थैर्यान्तकारणी कला ॥४२॥
दात्री कर्त्रीप्रिया प्रेमा प्रियदा प्रियवर्द्धिनी ।
प्रियहा प्रिय भव्या च प्रियप्रेमाङ्घ्रिपा तनुः ॥४३॥
प्रियजा प्रियभव्या च प्रियस्था भवनस्थिता ।
सुस्थिरा स्थिररूपा च स्थिरदा स्थैर्यबर्हिणी ॥४४॥
चञ्चला चपला चोला चपलांगनिवासिनी ।
गौरी काली तथाच्छिन्ना माया मायाहरप्रिया ॥४५॥
सुन्दरी त्रिपुरा भव्या त्रिपुरेश्वरवासिनी ।
त्रिपुरनाशिनी देवी त्रिपुरप्राणहारिणी ॥४६॥
भैरवी भैरवस्था च भैरवस्य प्रिया तनुः ।
भवांगी भैरवाकारा भैरवप्रियवल्लभा ॥४७॥
कालदा कालरात्रिश्च कामा कात्यायनी क्रिया ।
क्रियदा क्रियहा क्लैव्या प्रियप्राणक्रिया तथा ॥४८॥
क्रींकारी कमला लक्ष्मी: शक्ति: स्वाहा विभु: प्रभु: ।
प्रकृति: पुरुषश्चैव पुरुषा पुरुषाकृति: ॥४९॥
परम: पुरुषश्चैव माया नारायणी मति: ।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥५०॥
वाराही चैव चामुण्डा इन्द्राणी हरवल्लभा ।
भार्गी माहेश्वरी कृष्णा कात्यायन्यपि पूतना ॥५१॥
राक्षसी डाकिनी चित्रा विचित्रा विभ्रमा तथा ।
हाकिनी राकिनी भीता गन्धर्वा गन्धवाहिनी ॥५२॥
केकरी कोटराक्षी च निर्मांसा लूकमांसिका ।
ललज्जिह्वा सुजिह्वा च बालदा बालदायिनी ॥५३॥
चन्द्रा चन्द्रप्रभा चान्द्री चन्द्रकान्तिसुतत्परा ।
अमृता मानदा पूषा तुष्टि: पुष्टी रतिर्धृति: ॥५४॥

www.44Books.com

शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरंगदा ।
पूर्णा पूर्णमृता कल्पलतिका कल्पदानदा ॥५५॥
सुकल्पा कल्पहस्ता च कल्पवृक्षकरी हनुः ।
कल्पाख्या कल्पभव्या च कल्पानन्दकवन्दिता ॥५६॥
सूचीमुखी प्रेतमुखी उल्कामुखी महामुखी ।
उग्रमुखो च सुमुखी काकास्या विकटानना ॥५७॥
कृकलास्या च सन्ध्यास्या मुकुलीशा रमाकृतिः ।
नानामुखी च नानास्या नानारूपप्रधारिणी ॥५८॥
विश्वाच्र्या विश्वमाता च विश्वाख्या विश्वभाविनी ।
सूर्या सूर्यप्रभा शोभा सूर्यमण्डलसंस्थिता ॥५९॥
सूर्यकान्तिः सूर्यकरा सूर्याख्या सूर्यभावना ।
तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ॥६०॥
सुरदा भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा ।
युगदा योगहा योग्या योग्यहा योगवर्द्धिनी ॥६१॥
वह्निमण्डलसंस्था च वह्निमण्डलमध्यगा ।
वह्निमण्डलरूपा च वह्निमण्डलसंज्ञका ॥६२॥
वह्नितेजा वह्निरागा वह्निदा वह्निनाशिनी ।
वह्निक्रिया वह्निभुजा कला वह्निस्थिता सदा ॥६३॥
धूम्रार्चिषा उज्ज्वलिनी तथा च विस्फुलिङ्गिनी ।
शूलिनी च स्वरूपा च कपिला हव्यवाहिनी ॥६४॥
नानातेजस्विनी देवी परब्रह्मकुटुम्बिनी ।
ज्योतिर्ब्रह्ममयी देवी परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६५॥
परमात्मा परा पुण्या पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी ।
पुण्यदा पुण्यनाम्नी च पुण्यगन्धा प्रिया तनुः ॥६६॥
पुण्यदेहा पुण्यकरा पुण्यनिन्दकनिन्दका ।
पुण्यकालकरा पुण्या सुपुण्या पुण्यमालिका ॥६७॥

www.44Books.com

पुण्यखेला पुण्यकेली पुण्यनामसमा पुरा ।
पुण्यसेव्या पुण्यखेल्या पुराणपुण्यवल्लभा ॥६८॥
पुरुषा पुरुषप्राणा पुरुषात्मस्वरूपिणी ।
पुरुषाङ्गी च पुरुषी पुरुषस्य कला सदा ॥६९॥
सुपुष्पा पुष्पकप्राणा पुष्पहा पुष्पवल्लभा ।
पुष्पप्रिया पुष्पहारा पुष्पवन्दकवन्दका ॥७०॥
पुष्पहा पुष्पमाला च पुष्पनिन्दकनाशिनी ।
नक्षत्रप्राणहन्त्री च नक्षत्रालक्ष्यवन्दका ॥७१॥
लक्षमाल्या लक्षहारा लक्षा लक्षस्वरूपिणी ।
नक्षत्राणी सुनक्षत्रा नक्षत्राहा महोदया ॥७२॥
महामाल्या महामान्या महती मातृपूजिता ।
महामहाकनीया च महाकालेश्वरी महा ॥७३॥
महास्या वन्दनीया च महाशब्दनिवासिनी ।
महाशङ्खेश्वरी मीना मत्स्यगन्धा महोदरी ॥७४॥
लम्बोदरी च लम्बोष्ठी लम्बनिम्नतनूदरी ।
लम्बोष्ठी लम्बनासा च लम्बघोणा ललत्सुका ॥७५॥
अतिलम्बा महालम्बा सुलम्बा लम्बवाहिनी ।
लम्बार्हा लम्बशक्तिश्च लम्बस्था लम्बपूर्विका ॥७६॥
चतुर्घण्टा महाघण्टा घण्टानाद प्रिया सदा ।
वाद्यप्रिया वाद्यरता सुवाद्या वाद्यनाशिनी ॥७७॥
रमा रामा सुबाला च रमणीयस्वभाविनी ।
सुरम्या रम्यदा रम्भा रम्भोरू रामवल्लभा ॥७८॥
कामप्रिया कामकरा कामाङ्गी रमणी रतिः ।
रतिप्रिया रतिरती रतिसेव्या रतिप्रिया ॥७९॥
सुरभिः सुरभीशोभा दिक्शोभा शुभनाशिनी ।
सुशोभा च महाशोभाऽतिशोभा प्रेततापिनी ॥८०॥

www.44Books.com

लोभिनी च महालोभा सुलोभा लोभवर्द्धिनी ।
लोभाङ्गी लोभवन्द्या च लोभाही लोभवासका ॥८१॥
लोभप्रिया महालोभा लोभनिन्दकनिन्दका ।
लोभाङ्गवासिनी गन्धा विगन्धागन्धनाशिनी ॥८२॥
गन्धांगीगन्धपुष्टा च सुगन्धाप्रेमगन्धिका ।
दुर्गन्धापूतिगन्धा च विगन्धा अतिगन्धिका ॥८३॥
पद्मान्तिका पद्मवहा पद्मप्रियप्रियङ्करी ।
पद्मनिन्दकनिन्दा च पद्मसन्तोषवाहना ॥८४॥
रक्तोत्पलवरा देवी रक्तोत्पलप्रिया सदा ।
रक्तोत्पलसुगन्धा च रक्तोत्पलनिवासिनी ॥८५॥
रक्तोत्पलमहामाला रक्तोत्पलमनोहरा ।
रक्तोत्पलसुनेत्रा च रक्तोत्पलस्वरूपधृक् ॥८६॥
वैष्णवी विष्णुपूज्या च वैष्णवाङ्गनिवासिनी ।
विष्णुपूजकपूज्या च वैष्णवे संस्थिता तनुः ॥८७॥
नारायणस्य देहस्था नारायणमनोहरा ।
नारायणस्वरूपा च नारायणमनःस्थिता ॥८८॥
नारायणाङ्गसम्भूता नारायणप्रिया तनुः ।
नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया ॥८९॥
हरपूज्या हरश्रेष्ठा हरस्य वल्लभा क्षमा ।
संहारी हरदेहस्था हरपूजनतत्परा ॥९०॥
हरदेहसमुद्भूता हरांगवासिनी कुहूः ।
हरपूजकपूज्या च हरवन्दकतत्परा ॥९१॥
हरदेहसमुत्पन्ना हरक्रीडासदागतिः ।
सुगणा संगरहिता असंगा संगनाशिनी ॥९२॥
निर्जना विजना दुर्गा दुर्गक्लेशनिवारिणी ।
दुर्गदेहान्तका दुर्गारूपिणी दुर्गतस्थिका ॥९३॥

www.44Books.com

प्रेतकरा प्रेतप्रिया प्रेतदेहसमुद्भवा ।
प्रेतांगवासिनी प्रेता प्रेतदेहविमर्द्दिका ॥९४॥
डाकिनी योगिनी कालरात्रिः कालप्रिया सदा ।
कालरात्रिहरा काली कृष्णदेहा महातनुः ॥९५॥
कृष्णांगी कुटिलांगी च वज्रांगी वज्ररूपधृक् ।
नानादेहधरा धन्या षट्चक्रक्रमवासिनी ॥९६॥
मूलाधारनिवासा च मूलाधारस्थिता सदा ।
वायुरुपा महारूपा वायुमार्गनिवासिनी ॥९७॥
वायुयुक्ता वायुकरा वायुपूरकपूरका ।
वायुरूपधरा देवी सुषुम्नामार्गगामिनी ॥९८॥
देहस्था देहरूपा च देहध्येया सुदेहिका ।
नाडीरूपा महीरूपा नाडीस्थाननिवासिनी ॥९९॥
इंगला पिंगला चैव सुषुम्नामध्यवासिनी ।
सदाशिव प्रियकरी मूलप्रकृतिरूपधृक् ॥१००॥
अमृतेशी महाशाली श्रृंगारांगनिवासिनी ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारिप्रलया पदवासिनी ॥१०१॥
महाप्रलययुक्ता च सृष्टिसंहारकारिणी ।
स्वधा स्वाहा हव्यवाहा हव्या हव्यप्रिया सदा ॥१०२॥

हव्यस्था हव्यभक्षा च हव्यदेहसमुद्भवा ।
हव्यक्रीडा कामधेनुस्वरूपा रूपसम्भवा ॥१०३॥
सुरभिर्नन्दिनी पुण्या यज्ञांगी यज्ञसम्भवा ।
यज्ञस्था यज्ञदेहा च योनिजा योनिवासिनी ॥१०४॥
अयोनिजा सती सत्या असती कुटिला तनुः ।
अहल्या गौतमी गम्या विदेहा देहनाशिनी ॥१०५॥
गान्धारीं द्रौपदी दूती शिवप्रिया त्रयोदशी ।
पञ्चदशी पौर्णमासी चतुर्दशी च पञ्चमी ॥१०६॥

www.44Books.com

षष्ठी च नवमी चैव अष्टमी दशमी तथा ।
एकादशी द्वादशी च द्वाररूपा भयप्रदा ॥१०७॥
संक्रान्तिः सामरूपा च कुलीना कुलनाशिनी ।
कुलकान्ता कृशा कुम्भा कुम्भदेहविवर्द्धिनी ॥१०८॥
विनीता कुलवत्यर्था अन्तरी चानुगाप्युषा ।
नदीसागरदा शान्तिः शान्तिरूपा सुशान्तिका ॥१०९॥
आशा तृष्णा क्षुधा क्षोभ्या क्षोभरूपनिवासिनी ।
गङ्गासागरगा कान्तिः श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मही ॥११०॥
दिवा रात्रिः पञ्चभूतदेहा चैव सुदेहिका ।
तण्डुलाच्छिन्नमस्ता च नागयज्ञोपवीतिनी ॥१११॥
वर्णिनी डाकिनी शक्तिः कुरुकुल्ला सुकुल्लका ।
प्रत्यङ्गिराऽपरा देवी अजिता जयदायिनी ॥११२॥
जया च विजया चैव महिषासुरघातिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥११३॥
निशुम्भशुम्भहननी रक्तबीजक्षयङ्करी ।
काशी काशीनिवासा च मधुरा पार्वती परा ॥११४॥
अपर्णा चण्डिका देवी मृडानी चाम्बिका कला ।
शुक्ला कृष्णा वर्ण्यवर्णा शरदिन्दुकलाकृतिः ॥११५॥
रुक्मिणी राधिका चैव भैरव्याः परिकीर्तितम् ।
अष्टाधिकसहस्रं तु देवीनामानुकीर्त्तनात् ॥११६॥
महापातकयुक्तोपि मुच्यते नात्र संशयः ।
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ॥११७॥
महापातककोट्यस्तु तथा चैवोपपातकम् ।
स्तोत्रेण भैरवोक्तेन सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ॥११८॥
सर्वं वा श्लोकमेकं वा पठनात्स्मरणादपि ।
पठेद्वा पाठयेद्वापि सद्यो मुच्येत बन्धनात् ॥११९॥

www.44Books.com

राजद्वारे रणे दुर्गे सङ्कटे गिरिदुर्गमे ।
प्रान्तरे पर्वते वापि नौकायां वा महेश्वरि ॥१२०॥
वह्निदुर्गभये प्राप्ते सिंहव्याघ्रभयाकुले ।
पठनात् स्मरणान्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥१२१॥
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत् ।
सर्वशास्त्रपरो विप्रः सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२२॥
अग्निवायुजलस्तम्भं गतिस्तम्भं विवस्वतः ।
मारणे द्वेषणे चैव तथोच्चाटे महेश्वरि ॥१२३॥
गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ।
गुरुणा वैष्णवैर्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२४॥
वशीकरणमन्त्रैर्वा जायन्ते सर्वसिद्धयः ।
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा मध्याह्ने च निशामुखे ॥१२५॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ।
वादी मूको भवेद्दुष्टा राजा च सेवको यथा ॥१२६॥
आदित्यमङ्गलदिने गुरौ वापि महेश्वरि ।
गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥१२७॥
धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
स्त्रीभिर्वामकरे धार्यं पुम्भिदर्क्षकरे तथा ॥१२८॥
आदित्यमङ्गलदिने गुरो वापि महेश्वरि ।
शनैश्चरे लिखेद्वापि सर्वसिद्धि लभेद् ध्रुवम् ॥१२९॥
प्रान्तरे वा श्मशाने वा निशायामर्द्धरात्रके ।
शून्यागारे च देवेशि लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३०॥
सिंहराशौ गुरुगते कर्कटस्थ दिवाकरे ।
मीनराशौ गुरुगते लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३१॥
रजस्वलाभगं दृष्ट्वा तत्रस्थो विलिखेत्सदा ।
सुगन्धिकुसुमैः शुक्रैः सुगन्धिगन्धचन्दनैः ॥१३२॥

www.44Books.com

मृगनाभिमृगमदैर्विलिखेद्यत्नपूर्वकम् ।
लिखित्वा च पठित्वा च धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥१३३॥
कुमारीं पूजयित्वा च नारींश्चापि प्रपूजयेत् ।
पूजयित्वा च कुसुमैर्गन्धचन्दनवस्त्रकैः ॥१३४॥
सिन्दूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः ।
अथ वा पूजयेद्देवि कुमारीर्दश नान्यधीः ॥१३५॥
सर्वाभीष्टफलं तत्र लभते तत्क्षणादपि ।
नात्र सिद्ध्याद्यपेक्षास्ति न वा मित्रारिदूषणम् ॥१३६॥
न विचार्यं च देवेशि जपमात्रेण सिद्धिदम् ।
सर्वदा सर्वकालेषु षट्साहस्रप्रमाणतः ॥१३७॥
बलिं दत्त्वा विधानेन प्रत्यहं पूजयेच्छिवाम् ।
स्वयम्भूकुसुमैः पुष्पैबलिदानं दिवानिशम् ॥१३८॥
पूजयेत्पार्वतीं देवीं भैरवीं त्रिपुरात्मिकाम् ।
ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यं दशं वा द्वादशं तथा ॥१३९॥
अनेन विधिना देवि बालां नित्यं प्रपूजयेत् ।
मासमेकं पठेद्यस्तु त्रिसन्ध्यं विधिनाऽमुना ॥१४०॥
अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान्भवेत् ।
सदा चानेन विधिना तथा मासत्रयेण च ॥१४१॥
कृतकार्यो भवेद्देवि तथा मासचतुष्टये ।
दीर्घरोगात्प्रमुच्येत् पञ्चमे कविराड् भवेत् ॥१४२॥
सर्वैश्चर्यं लभेद्देवि मासषट्के तथैव च ।
सप्तमे खेचरत्वं च अष्टमे च बृहद्द्युतिः ॥१४३॥
नवमे सर्वसिद्धिः स्याद्दशमे लोकपूजितः ।
एकादशे राजवश्यो द्वादशे तु पुरन्दरः ॥१४४॥
वारमेकं पठेद्यस्तु प्राप्नोति पूजने फलम् ।
समग्रं श्लोकमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः ॥१४५॥

www.44Books.com

स पूजाफलमाप्नोति भैरवेण च भाषितम् ।
आयुष्मत्प्रीतियोगे च व्राह्मैन्द्रे च विशेषत: ।।१४६।।
पञ्चम्यां च तथा षष्ठ्यां यत्र कुत्रापि तिष्ठति।
शङ्का न विद्यते तत्र न च मायादिदूषणम् ।।१४७।।
वारमेकं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटात् ।
किमन्यद्बहुना देवि सर्वाभीष्टफलं भवेत् ।।१४८।।

।। इति श्रीविश्वसारतन्त्रे महाकाल विरचितं श्रीमत्त्रिपुरभैरवी सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।।

श्री भैरवीस्तवराज

ब्रह्मादय: स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपं जानन्ति
नैव जगदादिमनादिमूर्तिम् ।
तस्माद्वयं कुचनतां नव कुंकुमाभां
स्थूलां स्तुम: सकलवाङ्मयमातृभूताम् ।।१।।
सद्य: समुद्यतसहस्रदिवाकराभां
विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिह्नहस्ताम् ।
नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मा त्वां
तारहाररुचिरां त्रिपुरे भजाम: ।।२।।
सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं
जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ।
अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते
जानन्ति किं जडधियस्तवरूपमम्ब ।।३।।
स्थूलां वदन्ति मुनय: श्रुतयो गृणन्ति
सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये ।

www.44Books.com

त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि
मन्यामहे वयमपारकृपारम्बुराशिम् ।।४।।
चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां
पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्तीम् ।
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताम्बुकुम्भं
व्याख्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ।।५।।
शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो
विष्णुस्त्वमम्ब कमलापरिरब्धदेहः ।
पद्मोद्भवस्त्वमपि वागधिवासभूमिस्तेषां
क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ।।६।।
आश्रित्य वाग्भवमुदांश्चतुरः परादीन्
भावान्पदेषु विहितान्समुदीरयन्तीम् ।
कण्ठादिभिश्च करणैः परदेवतां त्वां
सञ्चिन्मयीं हृदि कदापि न विस्मरामि ।।७।।
आकुञ्च्य वायुमवजित्य च वैंरिषट्कमा-
लोक्य निश्चलधिया निजनासिकाग्रम् ।
ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकला वतंसं
त्वद्रूपमैंब कृतिनस्तरुणार्कमित्रम् ।।८।।
त्वं प्राप्य मन्थरिपोर्वपुरर्द्धभाग सृष्टि
करोषि जगतामिनि वेदवादः ।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमातर्नों
चेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात् ।।९।।
पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां पीठे
तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ।
गायन्ति सिद्धवनिताः सह किन्नरी-
भिरास्वादितासवरसारुणनेत्रपद्माः ।।१०।।

www.44Books.com

विद्युद्विलासवपुषः श्रियमुद्वहन्तीं
यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ।
सौषुम्नवर्त्मकमलानि विकासयन्तीं देवीं
भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ।।११।।

आनन्दजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां
चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि ।
ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां
सौभाग्यजन्मवसतिं त्रिपुरे यथावत् ।।१२।।

शब्दार्थभावि भवनं सृजतीन्दुरूपा या
तद्बिभर्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या ।
ब्रह्मात्मिका हरति तत्सकलं युगान्ते तां
शारदां मनसि जातु न विस्मरामि ।।१३।।

नारायणीति नरकार्णवतारिणीति
गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति ।
ज्ञानप्रदेति नयनत्रयभूषितेति
त्वामद्रिराजतनये बहुधा वदन्ति ।।१४।।

ये स्तुवन्ति जगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् ।
त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते नराः श्रियम् ।।१५।।

।। इति रुद्रयामले भैरवीस्तोत्रं समाप्तम् ।।

श्री भैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीदेव्युवाच :

कैलासवासिन्भगवन्प्राणेश्वर कृपानिधे ।
भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।१।।
न श्रुतं देवदेवेशं वद मां दीनवत्सलः ।

www.44Books.com

श्रीशिव उवाच :

शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।२।।
भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम् ।
यस्यानुष्ठानमात्रेण किन्न सिद्धयूयि भूतले ।।३।।
ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना ।
कार्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी ।।४।।
त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्द्दिनी ।
मोहघ्नी मालतीमाला महापातकनाशिनी ।।५।।
क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः ।
त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी ।।६।।
देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी ।
दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।।७।।
लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा ।
प्रत्यङ्गिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी ।।८।।
प्रभावती गणवती गुणमाता गुहेश्वरी ।
क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी ।।९।।
महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी ।
महापातकसंहर्त्री महामोहप्रदायिनी ।।१०।।
विकराला महाकाला कालरूपा कलावती ।
कपालखट्वाङ्गधरा खड्गखर्परधारिणी ।।११।।
कुमारी कुंकुमप्रीता कुंकुमारुणरंजिता ।
कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी ।।१२।।
नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी ।
घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ।।१३।।
कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी ।
किशोरी केशवप्रीता क्लेशसंघनिवारिणी ।।१४।।

www.44Books.com

महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी ।
महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ।।१५।।
मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी ।।१६।।
दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका ।
दनुजान्तकरी दुष्टा दुःखदारिद्रयभञ्जिनी ।।१७।।
दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा ।
मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ।।१८।।
श्यामा श्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी ।
इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।१९।।
भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरी ।
अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः ।।२०।।
देवीं ध्यात्वा सुरां पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये ।
पूजयेत्सततं भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदं शुभम् ।।२१।।
षण्मासाभ्यन्तरे सोपि गणनाथसमो भवेत् ।
किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ।।२२।।
सर्वं जानासि सर्वज्ञे पुनर्मां परिपृच्छसि ।
न देयं परशिष्येभ्यो निन्दकेभ्यो विशेषतः ।।२३।।

।। इति श्रीभैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।।

www.44Books.com

१२ निरुत्तरतन्त्रम्

प्रथम पटलः

श्री देव्युवाच ।

सिद्धविद्या पुरा प्रोक्ता तन्त्रमन्त्रादिकानि च ।
नानाभावप्रभेदेन संशयो जायते प्रभो ॥
भावभेदेन कथय लोकनिस्तारकारक ।
सर्वेषां शरणं तन्त्रसिद्धान्तं विष्णुसम्मतम् ॥
आसामाराधना केन भावेन परिजायते ।
आसां वा प्रकृतिः कापि तस्या वा कीदृशीक्रिया ।
तत्प्रकाशय सम्यङ् मे येन यामि निरुत्तरं ॥

श्रीशिव उवाच ।

सर्वासां सिद्धविद्यानां प्रकृतिर्दक्षिणा प्रिये ।
दिव्यैर्वा वीरभावैर्वा चिन्तयेद्दक्षिणां शुभां ॥
दिव्यभावैश्च वीरैश्च कालीकुलं विचिन्तयेत् ।
श्रीकुलं च त्रिभिः सर्वैश्चिन्तयेत् कुलसुन्दरि ॥
काली तारा रक्तकाली भुवना महिषमर्दिनी ।
त्रिपुटा त्वरिता दुर्गा विद्या प्रत्यङ्गिरा तथा ॥
कालीकुलं समाख्यातं श्रीकुलं च ततः परं ।
सुन्दरी भैरवी बाला बगला कमलापि च ॥

www.44Books.com

धूमावती च मातङ्गी विद्या स्वप्नावती प्रिये ।
मधुमती महाविद्या श्रीकुलं प.रभाषितं ।।

लतायां पूजयेत् कालीं नीले नीलसरस्वतीं ।
कालिकैव लतामूला नीलमूला च तारिणी ।।

उभयोरुभयोः पूजा सा पूजा मोक्षदायिनी ।
विशिष्टा चेन्महासिद्धिर्देवानामपि दुर्लभा ।।

लतानीलं विना देवि कालीं तारां च पूजयेत् ।
कुलनाथं समाश्रित्य चोपदेशं प्रकल्पयेत् ।।

कुलनाथं बिना देवि मन्त्रं तन्त्रं न सिध्यति ।
भावस्तु त्रिविधो देवि तथैव मन्त्रदेवता ।।

कुलशास्त्ररता ज्ञेया गुरवो बहवा स्मृताः ।
कुलशास्त्रविशेषज्ञो गुरुरेको हि दुर्लभः ।।

पशुगुरोर्मुखाल्लब्ध्वा पशुरेव न संशयः ।
वीरगुरोर्मुखाल्लब्ध्वा वीर एव न संशयः ।।

दिव्यगुरोर्मुखाल्लब्ध्वा दिव्य एव न संशयः ।
दिव्ये वीरे च यो भेदः स भेदः परिभाष्यते ।।

दिव्यश्च देवताप्रायो वीरश्चोद्धतमानसः ।
पूर्वाम्नायोदित कर्म पाशवं परिकीर्तितम् ।।

यदुक्तं दक्षिणाम्नाये तदेव पाशवं स्मृतम् ।
पश्चिमाम्नायजं कर्म वीरपशुसमन्वितम् ।।

उदङ्मुखोदितं कर्म दिव्यभावान्वितं प्रिये ।
दिव्योऽपि वीरभावेन साधयेत् पितृकानने ।।

ऊर्ध्वाम्नायोदितं कर्म दिव्यभावाश्रितं प्रिये ।
श्मशानगामिनो वीराः कलां पूजन्ति सर्वदा ।।

www.44Books.com

श्मशानगामिनो वीरा गुप्ता योनीव पार्वति ।
गोपनात् सिद्धिमाप्नोति व्यक्ताच्च कुलनाशनं ॥
दिव्यवीरान्वितं कर्म फलदं गोपनान्वितं ।
देवतागुरुमन्त्राणां प्रभावं दर्शयेत्ततः ॥
दिव्यौषधीनां वीराणां यद्यत् कर्म च योगिनां ।
तत्सवं गोपनं कार्यं प्रकाशान्निष्फलं भवेत् ॥
रात्रौ कुलक्रियां कुर्याद्दिवा कुर्याच्च वैदिकीं ।
दिवारात्रौ यजेद्देवीं योगी योगप्रभेदतः ॥
न दिवा पूजयेद्वीरो न पशून् रात्रिपूजनं ।
विवर्जयेन्महेशानि अभिचाराय कल्पते ॥
कलापूजां विधायाथ मनसा वा कुलेश्वरीं ।
पूजयेद्दक्षिणां कालीं श्मशाने कुलसाधकः ॥
श्मशानं दक्षिणास्थानं श्मशानं च सदाशिवः ।
योनिरूपा महाकाली शवशय्या प्रकीर्तिता ॥
श्मशानं द्विविधं देवि चिता योनिः प्रकीर्तिता ।
शिवलिङ्गं कुलेशानि महाकालेन भाषितम् ॥
द्वयोर्योगं विना नैव दक्षिणा सा फलप्रदा ।
त्रिपान्तरे कलापूजा कर्तव्या साधकोत्तमैः ॥
कलापूजां विना देवि दक्षिणा न फलप्रदा ।
कलापूजा कृता येन तेन काली प्रपूजिता ॥
कलापूजा कृता येन शिव एव न संशयः ।
कलापूजाकृतो दिव्यो वीरो वा कुलसुन्दरि ।
इहैव सुखमाप्नोति परे निर्वाणतां व्रजेत् ॥
न चार्चयेत् कलां यस्तु न जपेद्दक्षिणां शुभां ।
निष्फलं जीवनं तस्य क्रुद्धा भवति कालिका ॥

www.44Books.com

कलापूजां विना देवि सर्वं निष्फलतां व्रजेत् ।
जन्मान्तरसहस्रेषु काली नैव प्रसीदति ।।

कलापूजां विना देवि या काचित् क्रियते क्रिया ।
स क्रिया अभिचाराय सत्यं सत्यं न संशयः ।।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कलापूजां समाचरेत् ।
योनिरूपा कला देवि दक्षिणैव न संशयः ।।

दिव्यो वीरो वरारोहे कलापूजां प्रकल्पयेत् ।
पशुभावाश्रितो मन्त्री कलां नैव प्रपूजयेत् ।।

कलाया द्विविधा पूजा गुप्ता व्यक्ता कुलेश्वरि ।
गुप्ता च साधकैः कार्या निर्जने च महानिशि ।।

व्यक्ता दिवा प्रकर्तव्या लोकाचारक्रमेण तु ।
लोकाचारं विना देवि गोपनं नैव जायते ।।

गोपनं सिद्धिमूलं च सत्यं सत्यं न संशयः ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च कुलसुन्दरि ।।

कलावासवयोगेन कलापूजां प्रकल्पयेत् ।
द्रव्याभावे द्विजो दद्याच्चानुकल्पं युगे युगे ।।

कलायाश्चानुकल्पश्च कलायाश्चैव चिन्तनं ।
द्विजातीनां च सर्वेषां द्विधा विधिरिहोच्यते ।।

दिवा च पाशवं कर्म रात्रिकर्म च कौलिकं ।
पुरश्चर्यादिकं कर्म द्विविधं भावभेदतः ।।

।। इति श्रीनिरुत्तरतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे प्रथमः पटलः ।।

●

www.44Books.com

द्वितीय पटलः

श्री देव्युवाच :

देवदेव महादेव सृष्टिस्थितिलयात्मकः ।
कीदृशी दक्षिणाकाली तस्या मन्त्रश्च कीदृशः ।।
पूजा वा कीदृशी तस्याः पूजायाः कीदृशं फलं ।
गुरुर्वा कीदृशो देव पुरश्चर्या च कीदृशी ।।
साधनं कीदृशं तस्याः फलं तस्य च कीदृशं ।
तत् प्रकाशय सम्यङ् मे येन यामि निरुत्तरम् ।।

श्री शिव उवाच :

भगं भगवती ज्ञेया दक्षिणा त्रिगुणेश्वरी ।
चराचरमिदं सर्वं भगरूपं कुलेश्वरी ।।
महत्त्वादीनि सर्वाणि त्रिविधं परिकथ्यते ।
हकारार्द्धकला सूक्ष्मा योनिमध्यस्वरूपिणी ।।

योनिश्च दक्षिणा काली ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
त्रिकोणे च त्रयो देवाः शिवविष्णुपितामहाः ।।
योनिमध्ये वसेद्देवी कालिका कुलसुन्दरी ।
ज्योतिरूपा महाकाली शुक्ररूपा प्रपञ्चसू ।।
शुक्रतो जायते विश्वं शिवशक्तिप्रभेदतः ।
शिवशक्तिर्द्विधा देवि निर्गुणा सगुणापि च ।।

निर्गुणा ज्योतिषां वृन्दं परंब्रह्म सनातनी ।
परं च पुरुषं विद्धि महानीलमणिप्रभम् ।।
ज्योतिश्च दक्षिणा काली दूरस्था स्यात् प्रपञ्चसू ।
विपरीतरता काली निर्गुणा सगुणापि च ।।
अमास्यान्निर्गुणे सापि अनिरुद्धसरस्वती ।
सगुणा सुरगर्भे च महाकालनिरूपिणी ।।

www.44Books.com

नारीरूपं समास्थाय सैव विश्वं प्रसूयते ।
विष्णुमाया महालक्ष्मीर्मोहयत्यखिलं जगत् ॥
सहवानेव सा देवी योनिमार्गे चराचरं ।
देवमार्गमिदं विश्वं देवमार्गनिषेवितम् ॥
शिवशक्तिमयं तत्त्वं तत्वज्ञानस्य कारणं ।
बहूनां जन्मनामन्ते शक्तिज्ञानं प्रजायते ॥
शक्तिज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते ।
सा शक्तिर्दक्षिणा काली सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥
सिद्धविद्यासु सर्वासु दक्षिणा प्रकृतिः पुमान ।
अविनाभावसम्बन्धस्तयोरेव परस्परं ॥
शिवोऽपि तत्र युक्तश्चेच्छक्तिः स्याच्छिवयोगतः ।
तयोर्योगमयं तत्त्वं तयोर्योगेन चिन्तनं ॥
तयोर्योगमयं मन्त्रं तयोर्योगेन संजपेत् ।
तयोर्मन्त्रं महामन्त्रं भोगमोक्षप्रदायकम् ॥
भोगेन लभते मोक्षं सालोक्यादिचतुष्टयं ।
महाकल्पतरुः काली अनिरुद्धसरस्वती ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशानां भुक्तिमुक्त्येककारणं ।
सा काली गुरुतोराध्या मन्त्रतन्त्रस्वरूपिणी ॥
अथ वक्ष्ये कुलेशानि दक्षिणाकालिकामनुं ।
तेन विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तः प्रजायते ॥
ब्रह्मासनयुतं देवि नादविन्दुसमन्वितम् ।
वामनेत्रार्णसंयुक्तं चित्स्वरूपं परापरम् ॥
एकाक्षरी सिद्धविद्या मन्त्रराज्ञी कुलेश्वरि ।
त्रिगुणा च कूर्चयुग्मं लज्जायुग्मं ततः परं ॥
दक्षिणे कालिके चेति सप्तबीजानि योजयेत् ।
अन्ते वह्निवधूं दद्याद्विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता ॥

www.44Books.com

सर्वमन्त्रमयी विद्या सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी ।
अपि चेत् त्वत्समा नारी मत्समः पुरुषोऽस्तिचेत् ।।
अनिरुद्धसरस्वत्याः समो मन्त्रोऽस्ति वै तदा ।
ब्रह्मा रुद्रश्च विष्णुश्च सर्वे देवा उपासकाः ।।
वेदागमपुराणेषु वन्दिता कालिका शुभा ।
कालिका कामपीठेषु सर्वकामप्रदायिनी ।।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये केचित् सन्ति भैरवाः ।
ते सर्वे कालिकापुत्रास्ते मुक्ता नात्र संशयः ।।
सङ्केतमार्गाद्विवेशि नाभिषेकं गुरुक्रमात् ।
पूजाकाले विशेषेण तं त्यजेदन्त्यजं यथा ।।
भैरवोऽस्यऋषिः प्रोक्तः उष्णिक्छन्दः प्रकीर्तितं ।
देवता दक्षिणाकाली अनिरुद्ध सरस्वती ।।
ह्लां बीजं हुं शक्तिश्च क्रीं चैव कीलकं स्मृतं ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।
न्यासजालं पुरा प्रोक्तं नानातन्त्रेषु पार्वति ।
न्यासजालयुतो मन्त्री वीरभावेन पूजयेत् ।।
त्रिपञ्चारे महापीठे योनिपीठं प्रपूजयेत् ।
ध्यायेत् कालीं करालास्यां पीनोन्नतपयोधरां ।।
महामेघप्रभां श्यामां घोररावां चतुर्भुजां ।
सद्यश्छिन्नशिरःखड्गवामोर्द्धाधःकराम्बुजां ।।
अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाधःपाणिकां ।
पञ्चाशद्वर्णमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चितां ।।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननां ।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्वितां ।।
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीं ।
दिगम्बरीं मुक्तकेशीं चन्द्रार्धकृतशेखरां ।।

www.44Books.com

शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थितां ।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुरां ।।
मदिराघूर्णनयनां स्मेराननसरोरुहां ।
अट्टहासां महारौद्रीं सर्वदानन्दकारिणीं ।।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीं ।
एवं ध्यात्वा यजेद्वीरो निशायां कुलमन्दिरे ।।
मानसं पूजनं कृत्वा कुलपुष्पं समाहरेत् ।
मानसं पूजनं नैव गच्छेत्तु पितृकानने ।।
सा पापिष्ठो यजेन्नैव कालीं कलुषहारिणीं ।
उच्चैर्नोच्चारयेन्मन्त्रं मनसा च स्मरेन्मनुं ।।
तत्र चावाहनं नेष्टं कामाख्यायां कुलेश्वरि ।
आराध्य मनसा भक्त्या बाह्यपूजामथाचरेत् ।।
आत्मशुद्धि द्रव्यशुद्धि कृत्वा पात्राणि विन्यसेत् ।
अर्घ्यपात्रादिकं तत्र विन्यसेद्विधिपूर्वकं ।।
पीठपूजां विधायाथ पूजयेत्तत्र देवतां ।
चिन्तयेत् परया भक्त्या विधिदृष्टेन कर्मणा ।।
आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकं ।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च भूषणानि च सर्वशः ।।
गन्धं पुष्पं धूपदीपौ मधुपर्कं ततः परं ।
मन्त्रमुच्चार्य दातव्यं तर्पणं च ततः परं ।।
माल्यानुलेपनं चैव पञ्च पुष्पाञ्जलींस्ततः ।
पुनः प्रपूजयेद्देवीं महाकालेन लालितां ।।
षोडशोपचारयुक्ता ह्यष्टौ पूजा प्रकीर्तिता ।
अष्टाभिः शक्तिभिश्चापि लोकपालैश्च सम्मतः ।।
पीठमन्त्रकमाद्यागः स मार्गः परमः स्मृतः ।
पीठेनैव समस्तेन बहिरावरणं विना ।।

www.44Books.com

मन्त्रं पूर्वकृतो यागो नित्ययागः स मध्यमः ।
केवलं पुष्पयागस्तु कनिष्ठपूजनं भवेत् ।।
तत आज्ञां समादायावरणं च प्रपूजयेत् ।
कमलां मुकुटं मूर्ध्नि कर्णे च कुण्डले ततः ।।
गुरुपंक्ति ततो देवि महाकाल ततः परं ।
धूम्रवर्णं महाकालं जटाभारान्वितं प्रिये ।।
त्रिनेत्रं शवरूपं च शक्तियुक्तं निरामयं ।
दिगम्बरं घोररूपं नीलाञ्जनसमप्रभं ।।
निर्गुणं च गुणाधारं कालीस्थानं पुनः पुनः ।
काली कपालिनी कुल्ला प्रथमे च त्रिकोणके ।।
मात्रामुद्रामितादेव्यः पञ्चमे च त्रिकोणके ।
दलाष्टे पूजयेद्देवि पूर्वादिक्रमयोगतः ।।
ब्राह्मी नारायणी चैव कौमारी च महेश्वरी ।
अपराजिता च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ।।
चतुर्द्वारे यजेद्देवि असिताङ्गादिभैरवान् ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधी भीषण एव च ।।
उन्मत्तश्च कपाली च संहारक इति क्रमात् ।
पूर्वादिक्रमतो देवि द्वारि द्वारि द्वयं द्वयं ।।
इन्द्रादिदशदिक्पालान् दशदिक्षु प्रपूजयेत् ।
खड्गं मुण्डं यजेद्वामे हस्ते च कुलसुन्दरि ।।
पूजयेद्दक्षिणे हस्ते अभयं च वरं तथा ।
पुनश्च पूजयेद्देवीं सायुधां च सवाहनां ।।
कुल्लुकां मूर्ध्नि संजप्य हृदि सेतुं विचिन्तयेत् ।
महासेतुं कण्ठदेशे नाभौ योनिं विचिन्तयेत् ।।
सेतुं तु प्रणवं देवि हृदिस्थ तं प्रपूजयेत् ।
निजबीजं महासेतुं कण्ठदेशे विचिन्तयेत् ।।

www.44Books.com

सविन्दुमातृकायुक्ता नाभिमध्ये विचिन्तयेत् ।
कालोकूर्च्चं वधूर्मायां फट्कारान्तं सुरेश्वरि ।।
पञ्चाक्षरी कालिकायाः कुल्लुकां परिचिन्तयेत् ।
तारायाः कुल्लुका देवी महानीलसरस्वती ।।
अन्यासां च वधूबीजं कुल्लुका परिकथ्यते ।
कालीकुलप्रवृत्तानां पूजायामेवमाचरेत् ।।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पुनः पूजां प्रकल्पयेत् ।
पुनः प्रपूजयेद्देवीं महाकालेन लालितां ।।
ततस्तु कवचं देवि स्तवं च प्रपठेत्ततः ।।

।। इति श्रीनिरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे द्वितीयः पटलः ।।

तृतीय पटलः

श्री देव्युवाच :

भगवन् सर्वदेवेश सर्वभूतनमस्कृतः ।
सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितं ।।
कथयस्व सुरश्रेष्ठ यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।।

श्री शिव उवाच :

सिद्धकाली शिरः पातु ललाटं पातु दक्षिणा ।
काली मुखं सदा पातु कपाली पातु चक्षुषी ।।
कुल्ला गंडौ सदा पातु वदनं कुरुकुल्लिका ।
विरोधिन्यधरं पातु चिबुकं विप्रचित्तिका ।।
उग्रा कर्णौ सदा पातु नासामुग्रप्रभा तथा ।
कंठं दीप्ता सदा पातु ग्रीवां नीला प्रभावतु ।।
वक्षः स्थलं पातु घना पृष्ठं मात्रा सदावतु ।
मुद्रा नाभिं सदा पातु मिता लिङ्गं सदावतु ।।

www.44Books.com

रतिप्रिया लिङ्गमूलं गुह्यं शिवप्रियावतु ।
अरुणा तालुमूलं हि रसनां तरुणा तथा ।।

महाकालप्रिया जानु विकटा पातु जंघयोः ।
श्मशानवासिनी भार्यां पुत्रं पातु दिगंबरी ।।
भवनं मत्तहासा च मातरं मे सुरेश्वरी ।
राज्यस्थानं घोररावा सततं पातु कालिका ।।

धर्मं पातु घोररूपा अधर्मं मुण्डमालिनी ।
करकांची पातु नित्यं कालिका सर्वदावतु ।।
कामबीजत्रयं पातु नाभितः पादमेव च ।
कूर्चबीजयुगं पातु सदा मे नाभिदेशतः ।।

शक्तिबीजद्वयं पातु ब्रह्मरन्ध्राननं पुनः ।
कामबीजद्वयं पातु पूर्वस्यां दिशि सर्वदा ।।
कूर्चबीजयुगं पातु दक्षिणस्यां सदावतु ।
शक्तिबीजयुगं पातु प्रतीच्यां सर्वदा शुभा ।।

वह्निजाया चोत्तरस्यां दिशि पातु च मां सदा ।
विद्याराज्ञी च सर्वासामनिरुद्धसरस्वती ।।
कालिकाकवचं दिव्यं यः पठेद् यत्नतः सुधीः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्याः कूष्माण्डा राक्षसा ग्रहाः ।।
तस्य दूरात् पलायन्ते सत्यं सत्यं न संशयः ।

श्रीदेव्युवाच :

शङ्करो यां स्तुतिं कृत्वा सर्वसिद्धीश्वरोऽभवत् ।
तां मे कथय देवेश यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।।

श्रीशिव उवाच :

हुं हुँकारे शवारूढे नीलनीरजलोचने ।
त्रैलोक्यैकमुखे दिव्ये कालिकायै नमोऽस्तु ते ।।

www.44Books.com

प्रत्यालीढपदे घोरे मुण्डमालाप्रलम्बिते ।
खर्वे लम्बोदरे भीमे कालिकायै नमोऽस्तु ते ।।

नवयौवनसम्पन्ने गजकुंभोपमस्तनि ।
वागीश्वरि शिवे शान्ते कालिकायै नमोस्तु ते ।।

ललज्जिह्वे हरालोके नेत्रत्रितयभूषिते ।
घोरहास्योत्करे देवि कालिकायै नमोऽस्तु ते ।।

व्याघ्रचर्माम्बरधरे खड्गकर्त्रीकरे धरे ।
कपालेन्दीवरे वामे कालिकायै नमोस्तु ते ।।

नीलोत्पलजटाभारे सिन्दूरेन्दुमुखोद्भये ।
स्फुरद्वक्त्रोष्ठदशने कालिकायै नमोस्तु ते ।।

प्रलयानलधूम्राभे चन्द्रसूर्याग्निलोचने ।
शैलावासे शुभे मातः कालिकायै नमोऽस्तु ते ।।

ब्रह्मशम्भुजलौघे च शवमध्यप्रसंस्थिते ।
प्रेतकोटिसमायुक्ते कालिकायै नमोस्तु ते ।।

कृपामयि हरे मातः सर्वाशापरिपूरिते ।
वरदे भोगदे मोक्षे कालिकायै नमोऽस्तु ते ।।

इत्येतत् कालिकास्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
कृतकृत्यो भवेन्मन्त्री नात्र कार्या विचारणा ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादेतृतीयः पटलः ।।

www.44Books.com

चतुर्थ पटलः

श्रीदेव्युवाच :

पूजा च कथिता देव पुरश्चर्या च कीदृशी ।
कथयस्व सुरश्रेष्ठ यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।।

श्रीशिव उवाच :

उत्तमा मानसी पूजा बाह्या पूजा कनीयसी ।
पूजया लभते पूजां जपात् सिद्धिर्न संशयः ।।
होमेन सर्वसिद्धिः स्यात्तस्मात्त्रितयमाचरेत् ।
वीराणां मानसी पूजा दिव्यानां च कुलेश्वरि ।।
आसनानि च नाडीनां संकेतं शृणु साम्प्रतं ।
एतज्ज्ञानं विना देवि पुरश्चर्या न जायते ।।
आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणं ।
ध्यानं समाधिरेतानि योगाङ्गानि भवन्ति षट् ।।
आसनानि कुलेशानि यावन्तो जीवजन्तवः ।
चतुरशीतिलक्षाणां जन्तवः समुदाहृताः ।।
आसनेभ्यः समस्तेभ्यः साम्प्रतं द्वयमुच्यते ।
एकं सिद्धासनं नाम द्वितीयं कमलासनं ।।
नाडीनां समूहो देवि व्यक्तश्चास्ति खगाण्डवत् ।
तत्र नाड्यः समुद्भूताः सहस्राणां द्विसप्ततिः ।।
प्रधानं प्राणवाहिन्यः स्वयं तत्र दश स्मृताः ।
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना चैव कीर्तिता ।।
गान्धारी हस्तिजिह्वा च पूषा चैव यशस्विनी ।
अलम्बुषा कुलुश्चैव शंखिनी च दश स्मृताः ।।
एवं नाडीमयं चक्रं विज्ञेयं शक्तिचक्रके ।
इडायाः पिङ्गलायाश्च मध्यं यत्तत् सुषुम्ना ।।

www.44Books.com

इयं च त्रिगुणा ज्ञेया ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
रजोगुणा ध्वजाख्या च चित्रिणी सत्वसम्पदा ।।
तमोगुणा ब्रह्मनाडी कार्यभेदक्रमेण च ।
इडायाः पिङ्गलायाश्च एताःसर्वाः प्रकीर्तिताः ।।
एताश्च प्राणवाहिन्यः सोमसूर्याग्निदेवताः ।
इड़ा नाडी स्थिता वामे दक्षिणे चैव पिङ्गला ।।
सुषुम्ना च तयोर्मध्ये चन्द्रसूर्यप्रभेदतः ।
वायवश्चैव विज्ञेया मनश्चन्द्रात्मकं हृदि ।।
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानो च वायवः ।
हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिदेशतः ।।
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ।
नागः कूर्मोऽथ कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः ।।
प्राणाद्याः पञ्च विख्याता नागाद्याः पञ्च वायवः ।
एते नाड़ीसमस्तेषु वर्तन्ते चान्यसंज्ञकाः ।।
गुणबद्धो यथा जीवः प्राणापानेन कर्षति ।
अपानः कर्षति प्राणं प्राणापानं च कर्षति ।।
अधऊर्ध्वस्थितावेतौ यो जानाति स योगवित् ।
हंसगतिः प्रकृतिर्ज्ञेया ॐकारः प्रकृते गुणः ।।
हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः ।
हंस इति परं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ।।
षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येकविंशति ।
एतत् संख्यायतं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ।।
अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदायिनी ।
अजपा च द्विधा प्रोक्ता व्यक्ता गुप्ता क्रमेण तु ।।
व्यक्ता च द्विविधा प्रोक्ता हृदि स्थाने व्यवस्थिता ।
ठकाराकारगुप्ता च शिवशक्तिः प्रकीर्तिता ।।

www.44Books.com

चन्द्रबीजं ठकारं च तं बीजं शृणु उच्यते ।
अजपार्थमयी गुप्ता वह्निजाया प्रकीर्तिता ।।
अस्याः सङ्कल्पमात्रेण पुरश्चरणमुच्यते ।
प्राणायामद्विषट्केन प्रत्याहारः स उच्यते ।।
प्रत्याहारसहस्रेण जानीयाद्धारणां शुभां ।
धारणाद्द्वादश प्रोक्ता ध्यानं ध्यानविशारदैः ।।
ध्यानद्वादशकैरेव समाधिरवधीयतां ।
यत् समाधेः परं ज्योतिरनन्तं विश्वतोमुखं ।।
अस्मिन् दृष्टे क्रियाकाचिद्यातायातं न विद्यते ।
यथा सिंहे गजव्याघ्रे वादत्वं च शनैः शनैः ।।
तथैव चलितो वायुरन्यथा हन्ति साधकं ।
चरतां चक्षुरादीनां विषयेषु यथाक्रमं ।।
प्रत्याहारे तथा चैवं प्रत्याहारादिरुच्यते ।
करणं कुम्भकाद्देवि समाधिश्च प्रजायते ।।
पुष्पान्तरगतं ज्योतिर्भ्रुवोर्मध्ये प्रतिष्ठितं ।
तच्चिन्तनं कुलेशानि योगिनां पूजनं महत् ।।
ज्योतिषां चिन्तनं चैव ध्यानं विषयसंकृतिः ।
निर्गुणादिकभावेन वीराणां शृणु मूलकं ।।
सगुणा ज्योतिषां मूर्तिर्हृदिस्थां कालिकांस्मरेत् ।
आपादं शीर्षपर्यन्तं पूज्या यत्नादिभिः प्रिये ।।
ब्रह्माण्डोद्भवद्रव्याणि चर्व्यचोष्यादिकानि च ।
फलं पुष्पं यथा गन्धं वस्त्रालङ्कारभूषितं ।।
तत्सर्वं मनसा देयं कालिकायै पुनः पुनः ।
पेयं जलनिधेर्मानं द्रव्यं च गिरिमानतः ।।
यत्नेनैव प्रदद्यात्तु कालिकायै पुनः पुनः ।
इयं च मानसी पूजा कथिता वरवर्णिनि ।।

www.44Books.com

निर्वाणं दिव्यभावैस्तु वीरभावैः समानतां ।
इदं तत्त्वं जपाम्नायं ज्ञात्वा पुरश्चरणमाचरेत् ।।
निजाम्नायं विना देवि न कुर्याच्च पुरस्क्रियात् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन निजाम्नायं विचिन्तयेत् ।।
उत्तराम्नायोदितं सर्वं कालीकुलकुलेश्वरि ।
सर्वाम्नायोदितं तत्त्वं श्रीकुलं च क्रमेण तु ।।
उत्तराम्नायोदिता भैरवी त्रिपुरसुन्दरी ।
मातङ्गी पश्चिमाम्नाये दक्षिणाम्नाये च तावुभौ ।।
धूमा च त्वरिता चैव पूर्वाम्नाये प्रतिष्ठिता ।
त्रिपुरा बगला चैव महाविद्या विशेषतः ।।
दक्षिणाम्नायोदिताः च पशुभिः पूजिता सदा ।
कालीकूर्चं वधूर्जाया प्रणवं वाग्भवं प्रिये ।।
शूलहस्ता च या विद्योत्तराम्नायोदिता शुभा ।
द्वाविंशत्यक्षरी विद्या दक्षिणाम्नाय तिष्ठिता ।।

लक्षद्वयं जपेद्विद्यां दिवारात्रिप्रभेदतः ।
दिवा लक्षं जपेद्विद्यां हविष्याशी सदा शुचिः ।।
दशांशं जुहुयाद्वह्नौ तद्दशाशं च तर्पयेत् ।
तद्दशांशाभिषेकं च तीर्थतोयेन पार्वति ।।
तद्दशांशं हविष्यान्नैर्भोजयेद्भक्तितो द्विजान् ।
पाशवं कथितं कल्पं शृणु वीरं ततः परं ।।
नक्तं यामगते देवि स्वकुलं परिचिन्तयेत् ।
आनीय कान्तां सुशीलां कुलभक्तां कुलार्चने ।।
शक्तिचक्रं द्विधा कृत्वा शक्तिभाले लिखेत्ततः ।
तत्र कामकलां देवीं शिवकोणे विलेखयेत् ।।
तन्मध्ये देवमन्त्रं तु लाञ्छितं कमलाञ्चितं ।
तत्र देवीं समावाह्य ध्यात्वा तत्र प्रपूजयेत् ।।

www.44Books.com

ततस्तच्छक्तिकर्णे च ऋषिच्छन्दः समन्वितं ।
मूलमन्त्रं त्रिधा कृत्वा कथयेद्वामकर्णके ।।
अद्यप्रभृति देवि त्वं कुलदेवार्चनं कुरु ।
गुरोराज्ञां मूर्ध्नि कृत्वा प्रवर्त्तोऽहं कुलार्चने ।।
ततः पश्चात् कुलागारे कुलचक्रं लिखेत् प्रिये ।
तत्र पूजा कुलद्रव्यैः क्रियते भक्तिभावतः ।।
तत्र चावाहनं नास्ति यतो देवी स्वरूपिणी ।
पूजयित्वा यथान्यायं तत्त्वचिन्तापरो भवेत् ।।
तत्त्वचिन्तापरो मन्त्री जपेल्लक्षं कुलाकुलं ।
दशांशं जुहुयाद् वह्नौ आसवैः पललान्वितैः ।।
तद्दशांशं तर्पणं च सुधापललसंयुतैः ।
अभिषेकं तद्दशांशं तीर्थतोयेन पार्वति ।।
कुलद्रव्यैस्तद्दशांशं भक्तितो भोजयेद्द्विजान् ।
आदावन्ते च मध्ये च शक्ति मां भोजयेत्कुलं ।।
तदभावे कुलेशानि शक्ति चात्र प्रपूजयेत् ।
तासां च कुलचक्रान्ते मनसा च प्रपूजयेत् ।।
पुरश्चरणकाले च यदि शक्ति न पूजयेत् ।
तस्य पूजा जपो होमोऽभिचाराय च कल्प्यते ।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन शक्तीनां पूजनं चरेत् ।
पुरश्चरणकाले च संख्या न स्मरिता यदि ।।
शक्तीनां हि कुमारीणां द्विजाति कुलपालिनां ।
तोषणं कुलद्रव्येण भोजयेच्च पुनः पुनः ।।
सम्प्रदायविदे विद्वान् दद्यात्तु गुरुदक्षिणां ।
वस्त्रालङ्कारभूषाद्यै कुलगुरून् प्रपूजयेत् ।।
तत्सुतं तत्सुताम्बापि तत्पत्नीं वा कुलेश्वरि ।
पूजयेत् परया भक्त्या मंत्रसिद्धि लभेद् यतः ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे चतुर्थः पटलः ।।

www.44Books.com

पञ्चम पटलः

श्री देव्युवाच :

कीदृशीं रजनीं देवीं पूजयेत् किं निवेदयेत् ।
तस्या वा कीदृशी पूजा तद्गायत्री च कीदृशी ॥
जपं वा कीदृशं देव पुरश्चर्या च कीदृशी ।
साधना कीदृशी तस्या वद मे परमेश्वर ॥

श्री शिव उवाच :

निर्लोभा कामनाहीना निर्लज्जा द्वन्द्ववर्जिता ।
शिवा सत्वगता साध्वी स्वेच्छया विपरीतगा ॥
एवं सा रजनी देवी त्रिषु लोकेषु गोपिता ।
आत्मना पूजने सैव समूले कुलवर्त्मना ॥
अक्षणोरन्तर्गतं ज्योतिर्भ्रुवोरन्तः प्रतिष्ठितं ।
यतो रूपं परं ज्योतिस्तदेव कुलमन्दिरे ॥
मनसा साधकं वीक्ष्य क्रीडनात् पतितामृतं ।
तेनामृतेन मूलेन तर्पयेद्रजनीं स्वयं ॥
कुलनाथं कुलागारे नियोज्य भावयेच्छिवां ।
श्वासोच्छ्वासे च गायत्रीं त्वजपाब्रह्मरूपिणीं ॥
अजपा रजनी गायत्री ब्रह्मगायत्री च योगिनां ।
अजपा रजनी गायत्री रजन्यां रजनीं जपेत् ॥
न जपेद्दिवसे विद्वान् ब्रह्मविद्यात्मिकां परां ।
जपेन्नरकमाप्नोति इहैव दुःखभाग् भवेत् ॥
कलानाथं समानीय नियोज्य कुलमन्दिरे ।
योजयित्वा जपेन्मन्त्रं कुलकेन च ताडयेत् ॥
विशत्या महती पूजा शतेन शतधा भवेत् ।
रजन्याः कथिता पूजा ध्यानं च तत्त्वचिन्तनं ॥

www.44Books.com

सङ्केतज्ञः कलानाथं साधयेदेकचेतसा ।
रजनीमूलयोगेन निर्वाणपदवीं ब्रजेत् ।।
शठं च चुल्लुकं धूर्तं सङ्केतहीनदाम्भिकं ।
सन्त्यज्य साधयेद्विद्यां महामोक्षप्रदायिनीं ।।
धनाद्वा कामतो वापि लोभाद्वा निजमन्दिरं ।
कारयेद्यदि सा पूजा रौरवं नरकं ब्रजेत् ।।
सङ्केतज्ञं दृढ़ं ज्ञात्वा साधनं शिवसाधनं ।
अन्यथा दुःखमाप्नोति स याति नरकं ध्रुवं ।।

प्रकृत्याथ ब्रजेद्वापि ज्ञात्वा यच्च प्रपूजयेत् ।
सोऽपि निर्वाणतां प्राप्य पुनरावृत्य भूतले ।।
अभेदप्रकृतिं ज्ञात्वा जपहोमादिकं चरेत् ।
सर्वदेवस्वरूपं च सर्वमन्त्रस्वरूपिणी ।।
प्रकृतिस्त्वंत्वमास्थाय कैवल्यं याति निश्चितं ।
प्रकृतेस्तत्वविद्देवि न स योनौ प्रजायते ।।
अशोधितमनाचर्यं स्त्रीषु मध्येषु सुव्रते ।
स्वीकारे सिद्धिहानिः स्याद्रौरवं नरकं ब्रजेत् ।।

क्षुधार्तश्च तृषार्तश्च कालिकां नैव पूजयेत् ।
पूजयेद्यदि देवेशि क्रुद्धा भवति कालिका ।।
साधके मोभमापन्ने देवीक्षोभः प्रजायते ।
तस्माद्भुक्त्वा च पीत्वा च पूजयेत्कालिकां शुभां ।।
विना पीत्वा सुरां भुक्त्वा मत्स्यमांसं रजस्वलां ।
यो जपेद्दक्षिणां कालीं तस्य दुःखं पदे पदे ।।
दिव्यभावं वीरभावं विना कालीं प्रपूजयेत् ।
पूजने नरकं याति तस्य दुःखं पदे पदे ।।
लतासवं विना देवि कलौ कालीं न पूजयेत् ।
पशुभावाश्रितो देवि यदि कालीं प्रपूजयेत् ।।

www.44Books.com

रौरवं नरकं याति यावदाहुतसंप्लवं ।
लतादर्शनमात्रेण कालिकादर्शनं भवेत् ।।
दृष्टवा च सुन्दरीं शक्ति कालीं तत्रैव चिन्तयेत् ।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे निर्जने वने ।।
नदीतीरे पर्वते वा शक्ति तत्र प्रपूजयेत् ।
एकाकी पूजयेच्छक्ति निःशङ्को भयवर्जितः ।।
गुरुं विना न सङ्गी स्यात् सङ्गी स्यान्नरकं व्रजेत् ।
सङ्गाच्च धनहानिः स्यात् सर्वं सङ्गाद्विनश्यति ।।
द्वितीयागं ततः पूजां रात्रौ पर्यटनं प्रिये ।
एकाकी सञ्चरेद्वीरो निःशङ्कः सङ्गवर्जितः ।।
रात्रौ पर्यटनं नास्ति न रात्रौ शक्तिपूजनं ।
नार्चयेत् कालिकां देवीं शाम्भवीं सुखमोक्षदां ।।
मद्यं मांसं तथा मत्स्यं मुद्रां च मैथुनं विना ।
ब्राह्मणो वीरभावेन कालिकायै निवेदयेत् ।।
पूजाद्रव्यं महेशानि पशुर्वा यदि पश्यति ।
तद्द्रव्यं च जले क्षिप्त्वा इष्टदेवं सुचिन्तयेत् ।।
धूर्तं शठं चुल्लुकं च मूर्खं च दाम्भिकं प्रिये ।
एते च पाशवा प्रोक्ता सर्वान्भावाश्रितांस्त्यजेत् ।।
पशुभिर्दर्शितं द्रव्यं देवेभ्यो न निवेदयेत् ।
कुलपूजां कुलद्रव्यं कुलस्त्रीं कुलमङ्गलं ।।
गोपनीयं पशोरग्रे प्रकाशान्मरणं भवेत् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च कुलयोगतः ।।
पञ्चमैः पूजयेत् कालीं मोक्षार्थी च कलौ प्रिये ।
ब्राह्मणैः पीयते मद्यं न मद्यं द्विजपुङ्गवैः ।।
कलावासवयोगेन तर्पयेत् कालिकां प्रिये ।
पाने भ्रान्तिर्भवेद्यस्य घृणा स्याद्रक्तरेतसोः ।।

www.44Books.com

स पापिष्ठो यजेन्नैव कालीं कलुषहारिणीं ।
कालीं तारां तथा छिन्नां त्रिपुरां भैरवीं तथा ॥
कलावासवयोगेन सर्वदा पूजयेद्द्विजः ।
श्मशानभैरवीं चैव उग्रतारां च पञ्चमीं ॥
मातङ्गीं च तथा धूम्रां बगलां भुवनेश्वरीं ।
राजराजेश्वरीं बालां त्वरितां महिषमर्दिनीं ॥
कलावेताश्चासवैश्च पूज्याश्च दक्षिणां विना ।
ब्राह्मणो वीरभावेन सुरां पीत्वा जपन्मनुं ॥
सुराभावे च गोक्षीरं द्विजो दद्यात् युगे युगे ।
द्रव्याभावे चानुकल्पैः पूजयेत् परदेवतां ॥

एकादश्यां व्यतीपाते कर्मलोपं न कारयेत् ।
न कृते च गुरोरर्चा क्रमात् कोऽपि प्रलीयते ॥
केवलं विषयासक्तः पतत्येव न संशयः ।
अग्र चक्रं वीरभावं तत् कार्यं गुरुसन्निधौ ॥
तदभावे भ्रातृभिः सार्द्धं कार्यं चैव विधानतः ।
पृथक् पात्रे पिबेद् द्रव्यं पृथक् पात्रे च भोजनं ॥
शक्तियुक्तं वसेद्वापि युग्मं युग्मविधानतः ।
शक्त्युच्छिष्टं पिबेन्मद्यं वीरोच्छिष्टं च चर्वणं ॥

स्वज्येष्ठस्य च भोक्तव्यं कनिष्ठस्य न भोजयेत् ।
निजशक्तिं विना देवि शक्त्युच्छिष्टं पिबेद्यदि ॥
रौरवं नरके घोरे यावदिन्द्राश्चतुर्दश ।
एकासने वसेद् यस्तु भुञ्जीत चैकभाजने ॥
परस्परमुपस्पर्शेत् स याति नरकं ध्रुवं ।
एकासनस्थो यो वीरो दिव्यो वा कुलसुन्दरि ॥
सुधां पीत्वा वीरचक्रे रौरवं नरकं व्रजेत् ।
महासिद्धीश्वरो वापि भुंक्ते पीत्वा परस्परं ॥

www.44Books.com

सिद्धिहानिः पुरस्कृत्य स याति नरकं ध्रुवं ।
विना शक्ति पिबेद् द्रव्यं वीरो गुरुपरायणः ।।
तथापि नरके घोरे पतत्येव न संशयः ।
शक्त्यभावे कुलेशानि तद्द्रव्यं जलतः क्षिपेत् ।।
गुरुभावे तद्भागं च जलतो विनिवेदयेत् ।
।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वती संवादे पञ्चमः पटलः ।।

षष्ठ पटलः

श्री देव्युवाच :

रजनी पूजनादेव द्रुतं सिद्धि कथं भवेत् ।
तत्त्वं कथय मे सर्वं यद्यहं तव वल्लभा ।।

श्रीशिव उवाच :

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकसंशयभेदकं ।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तिः प्रजायते ।।
अज्ञानतिमिराच्छन्ना आवयोः स्मृतिर्वर्जिताः ।
उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति संसारजलधौ जनाः ।।
सर्वा नार्यस्त्वमेवासि सर्वेऽहं पुरुषाः प्रिये ।
एतद्विज्ञानमात्रेण जायते सिद्धिभाजनाः ।।

श्री देव्युवाच :

सर्वज्ञ जगतां नाथ सर्वलोकहिते रत ।।
केनैतत् द्रुतसिद्धिः स्यात्तन्मे ब्रूहि कुलेश्वर ।।

श्रीशिव उवाच :

चपलासि वरारोहे हेमगौराङ्गि पार्वति ।
संसारभेदकं ज्ञानं कथं ते कथयाम्यहं ।।

www.44Books.com

श्री देव्युवाच :

चपलाहं सावहिता महादेव भवाम्यहं ।
संसारभेदकं तत्वं कथयस्व कृपां कुरु ।।

श्रीशिव उवाच :

संसारभेदकं ज्ञानं न प्रकाश्यं कदाचन ।
प्रकाश्यते यदा यस्मिन् स हि मत्सदृशो भवेत् ।।
भीत्या वार्काषिता प्रीत्या धनाद्वा हीनजा तथा ।
चार्वङ्गी सस्मिता प्रीता यौवनाहितविग्रहा ।।
वीक्ष्यमाणा तनुक्षीणे प्रोक्षणस्य च तत्परा ।
आनीय वीरभावेन सुप्रीता चार्घ्यदानतः ।।
विस्तीर्णमासनं दत्वा भवत्या ध्यानतत्परः ।
स्वयं मत्सदृशो भूत्वा निस्पृहो विगतस्पृहः ।।
विन्दुमात्रेण मदनसद्मनि निधाय चक्रं ।
वशकारी गिरीन्द्रजाता आज्ञाकरस्य रजनीमथवा ।।
निशीथे तु बलिं दत्वा निरुक्तविधिना ततः ।
आवयोः प्रीतिजनकं ध्यात्वा तत्परकर्मणा ।।
न कार्यः कर्मसन्देहो घृणालज्जाविवर्जितः ।
भवत्या भावमापन्नः प्रकृतिसस्मितप्रदः ।।
उत्तरादेव फलं तस्मिन् पुंसि तद्भावमागते ।
मनोजा सा तु विज्ञाने क्रमेण परितोषिता ।।
किं दातासि वरं त्वं मे मधुताम्बूलतर्पिते ।
अथवा स्थिरधीर्निरीक्ष्यमाणे तव चक्रं रतिविग्रहं वीरः ।।
अयुतमथवा सहस्रं शतमष्टाधिकं जपेन्मनुं ।
स तु कार्तिकेय विक्रमो मत्तस्य मम भावं प्रतियाति ।।
विप्रास्ते तव मम पर्वणि नित्यं योगीन्द्रो भावनानिपुणः ।
कुरुते गुरूपदिष्टं भुवि भैरवभावमर्हति ।।

www.44Books.com

कथयामि वरारोहे शृणु तत्त्वं परात्परं ।
कथितं नैव कस्मैचित् यदि संसारमिच्छति ।।
स्त्रीपुंसोः सङ्गमे सौख्यं जायते तत्परं पदं ।
तदावयोश्च विन्यस्तं याभ्यां ताभ्यां कृतं नहि ।।
भाजनः सर्वविद्यानां ब्राह्मणः कामिनीगणे ।
वीराणां जायते श्रेष्ठो भुवि भुवि इवास्पदं ।।
आवयोर्मनसा प्रीति यः कुर्याद्विजितेन्द्रियः ।
योऽसौ कालीं भजेद्भक्त्या स एव हि न चान्यथा ।।
यः करोति सपर्यान्ते देवि सद्गुरुमार्गतः ।
सन्देहो नैव कर्तव्यो यदि संसिद्धिमिच्छति ।।
मनोरूपा हि संसिद्धिर्जायते नात्र संशयः ।
कुलागारे लभेत् सिद्धि देवानामपि दुर्लभां ।।
वर्तमाने पूजने तु यदि सन्देहभाजनः ।
लभते नैव संसिद्धिर्जन्मकोटिसहस्रकैः ।।
इति कथितं पर यत् सहसा सिद्धिविधायकं महेशि ।
जगदतिदूरं विशेषतस्ते मृगशावाक्षि विधेहि दक्षिणां ।।

श्री देव्युवाच :

प्रेयसी तव देवेश गिरीन्द्रस्य च नन्दिनी ।
दक्षिणा कीदृशी नाथ वद तां च वदाम्यहं ।।
एवमाकर्ण्य देवेशः सस्मितो लोललोचनः ।
स्वं पश्यन् गिरिजां वीक्ष्य शृणु देवि वरानने ।।
अरुणमरुतल्पं प्रान्तदेशे निधाय ।
पृथुलकुचयुगलं क्रोडे प्रौढमालिङ्गनं यत् ।।
स्वरसवदनेभ्यः कर्मणा येन वक्षः ।
सुतन्वालिङ्गिता दक्षिणाभेद सिद्धौ ।।

।। इति निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे षष्ठ पटलः ।।

www.44Books.com

सप्तम पटलः

श्री देव्युवाच :

भगवन् सर्वजीवानां साक्षी त्वमसि हे प्रभो ।
अभिषेकं पुरा प्रोक्तं कीदृशं कथय प्रभो ॥

श्री शिव उवाच :

अभिषेकं च द्विविधं राज्ञां च ज्ञानिनामपि ।
राज्याभिषेकं देवेशि वैदिकादिक्रियां चरेत् ॥
ज्ञानिनामभिषेकं तु सर्वतन्त्रेषु गोपितं ।
कुलचक्रं क्रमेणैव अभिषेकं चरेत् सुधीः ॥
कुलनाथं गुरुं वीक्ष्य अभिषेकं गुरुश्चरेत् ।
सर्वशान्तिकरं पुण्यं सर्वरोगनिवारणं ॥
धनदं कामदं चैव आयुर्बुद्धिकरं नृणां ।
सर्वसौभाग्यजननं महापातकनाशनं ॥
सर्वाशापूरकं देवि मन्त्रदोषप्रणाशनं ।
सर्वार्थसाधकं देवि धनवृद्धिकरं परं ॥
अभिचारहरं सर्वं ग्रहदोषनिवारणं ।
भूतावेशादिशमनं डाकिनीनां भयापहं ॥
तेजोवृद्धिकरं देवि सर्वतीर्थफलप्रदं ।
स्त्रीगतेष्वपि दोषेषु शरीरे मानसे तथा ॥
तक्षकेणापि दंष्ट्रस्य विषपीडाविनाशनं ।
तेजोह्रासे बले ह्रासे बुद्धिह्रासे धनक्षये ॥
विकारे देशिकः कुर्यादभिषेकं विचक्षणः ।
असौभाग्ये च नारीणामभिषेकः प्रवर्तते ॥
पूर्णाभिषेकी त्वनन्यानभिषेके प्रवर्तते ।
गुरुत्वं च लभेद्देवि कर्मणा चाभिषेकतः ॥

www.44Books.com

वैष्णवं गाणपत्यं च सौरः शैवः कुलेश्वरि ।
अभिषेकः प्रकुर्वीत शाक्तश्च कुलभूषणः ।।
मन्त्रतन्त्रं च सर्वेषामभिषेकाद्धि सिध्यति ।
अभिषेकेण सर्वेषामधिकारी भवेद् ध्रुवं ।।
अभिषेककृतो विप्रो ब्रह्मत्वं लभते ध्रुवं ।
अभिषेककृतः क्षत्री विप्रधर्मत्वमागतः ।।
वैश्यः क्षत्रियतां याति शूद्रो वैश्यत्वमागतः ।
अभिषेकेण सर्वेषां बद्धोपि बद्धतां त्यजेत् ।।
ब्राह्मणस्य सुरापाने ब्राह्मण्यं त्यजते क्षणात् ।
अभिषेककृते विप्रे सुरापानं विधीयते ।।
आगमः पञ्चमो वेदः कुलमाश्रय पार्वति ।
शिवोऽपि पञ्चमो वर्णः सिद्धविद्यां जपेद् यतः ।
सुवर्णत्वं परित्यज्य शिवत्वं सम्प्रजायते ।
अभिषेकं विना नैव ब्राह्मणः सुपिबेत् सुरां ।।
प्रगृह्य सिद्धविद्यां च सङ्केतज्ञस्ततो भवेत् ।
सङ्केतज्ञः कुलागारे नाभिषेकं समाचरेत् ।।
अभिषेककृतो मन्त्री कुलपूजां समाचरेत् ।
कुलपूजाकृतो मन्त्री पितृभूमिं समाश्रयेत् ।।
पितृभूमिकृतं स्थानं एकाकी विहरेत् सदा ।
एकाकी विहरेद्वीरः प्रान्तरे च त्रिप्रान्तरे ।।
तत्र सिद्धि लभेद्देवि देवानामपि दुर्लभा ।
कुलाचारं विना देवि तन्त्रमन्त्रं न सिध्यति ।।
सिद्धविद्या कुलागारे द्रुतं सिध्यति निश्चितं ।
अभिषेककृतो विप्रः सुरां दद्याद् युगे युगे ।।
सुरां पीत्वा जपेद्विद्यां कुलागारे विशेषतः ।
विजया चानुकल्पं च सुराभावे निवेदयेत् ।।

www.44Books.com

आनन्देन विना भ्रंशो न च तृप्यन्ति देवताः ।
पञ्चमेनार्चयेत् कालीं कामाख्यायां विशेषतः ॥
कामाख्यायां विशेषेण कालिका सिद्धिदा भवेत् ।
कुलाचारं विना देवि कालीमन्त्रं न सिध्यति ॥
अभिषेकं विना देवि कुलकर्म करोति यः ।
तस्य पूजादिकं कर्म चाभिचाराय कल्प्यते ॥
अभिषेकं विना देवि सिद्धविद्यां ददाति यः ।
तावत् कालं वसेद् घोरे यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥
ब्रह्मत्वं च हरित्वं च शिवत्वं च कुलेश्वरि ।
सर्वसिद्धीश्वरत्वं च अभिषेकेन जायते ॥
दिव्यो वीरश्च देवेशि कुलभक्तिपरायणः ।
अभिषेकं चरेद्धीमान् मोक्षार्थी कुलकर्मसु ॥
विमुखः कुलधर्मेषु कुलद्रव्यपरायणः ।
स याति नरकं घोरं काकं वा परजन्मनि ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन अभिषेकं समाचरेत् ।
अभिषेकं चरेद्देवि अधिवासपुरःसरं ॥
वृद्धिश्राद्धं ततः कुर्याच्छिवशक्ति प्रपूजयेत् ।
गुरुं सम्पूज्य विधिवत् स्वर्णालङ्कारभूषणैः ॥
ततः सङ्कल्पविधिना गुरुणां वरणं चरेत् ।
ततः पूजां चरेद्देव्यां पञ्चमैश्च पृथक् पृथक् ॥
प्रणम्य सद्गुरुं देवदेवीं च साधकेश्वरः ।
गुरुपूजां विधायाथ देव्या ध्यानपरायणः ॥
अभिषेकं विधायाथ शुचौ देशे च देशिकः ।
शून्यागारे नदीतीरे विल्वमूले त्रिपान्तरे ॥

www.44Books.com

महात्रिपान्तरे* वापि निर्जने पितृकानने ।
ग्रामे पातालके वापि पर्वते तटिनीतटे ।।
देवतायतने वापि स्थानं परिचिन्तयेत् ।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे सप्तमः पटलः ।।

अष्टम पटलः

श्रीशिव उवाच :

शिवशक्ति च सम्पूज्य स्थापयेद् घटमुत्तमं ।
नातिह्रस्वं नातिदीर्घं स्वर्णरौप्यविनिर्मितं ।।
विशेषार्घ्यस्य यन्त्रो वा त्रिकोणे वापि विन्यसेत् ।
कामबीजेन सम्प्रोक्ष्य वाग्भवेनैव ताडयेत् ।।
शक्त्याधारे समारोप्य मायया पूरणं जलैः ।
मन्त्रेणानेन तीर्थानि देशिकस्तु प्रविन्यसेत् ।।
ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वा समुद्राश्च सरांसि च ।
सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि च जला ह्रदाः ।।
ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्गपातालभूषिताः ।
सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधि ।।
श्रीबीजेन प्रजप्तेन पल्लवं प्रतिपादयेत् ।
कूर्चेन फलदानं स्यात् स्त्रीबीजेन स्थिराचरेत् ।।
सिन्दूरः वह्निबीजेन पुष्पं प्रेतेन विन्यसेत् ।
मूलेन प्रणवेनापि दूर्वां दद्याद्विचक्षणः ।।
हूं फट् स्वाहेति मन्त्रेण कुर्याद्दर्भेण ताडनं ।
विचिन्त्य देवीं पीठं च तत्रावाह्य प्रपूजयेत् ।।

---

* त्रिग्रहरान्तरे ।

www.44Books.com

अनेनैव विधानेन सर्वकर्मसु सुन्दरि ।
घटं स्थाप्य यजेद्देवि षट्कर्मसु विशेषतः ।।
महापूजां चरेद्धीमान् षोडशैरुपचारकैः ।
गुरूणां च महापूजा शक्तीनां च ततः परं ।।
तत्पश्चात् साधकानां च कुर्याच्च परिपूजनं ।
कुमारीभ्यो बलिं दत्वा कुलजाभ्यो विशेषतः ।।
अभिषेकं ततो देवि कुर्याच्च गुरुमार्गतः ।
स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्रमुच्चारणैः सह ।।
चालयेत्तु घटं मन्त्री मन्त्रेणानेन देशिकः ।
उत्तिष्ठ ब्रह्मकलस सेवितोऽशेषसिद्धिदः ।।
सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन पूरयामि मनोरथं ।
ईशानेन्दुस्मरक्षौणी तदन्ते भुवनेश्वरी ।।
मन्त्रेणानेन वाद्यानां निर्घोषैश्चानयेद्घटं ।
अभिषिञ्चेद्गुरुः शिष्यं यजमानं पुरोहितः ।।
सिञ्चेद् दुष्टग्रहेऽश्वत्थैः पल्लवैर्भूतसङ्गमे ।
सिञ्चेदौडुम्बरैर्मन्त्रदोषे च करवीरजैः ।।
यशोधनाय तेजस्वी फलकामे च भूतकैः ।
तुलसीमञ्जरीभिश्च सर्वपापक्षयार्थिभिः ।।
सर्वतीर्थफलावाप्तेः शाक्तानां विल्वसम्भवैः ।
अभिचारे नारसिंहैरभिषेकं प्रचक्ष्यते ।।
कुर्यात् दर्भेषु गर्भेषु दोषेषु स्वीकृतेषु च ।
असौभाग्येन नारीणां दूर्वाभिः सेचनं चरेत् ।।
(अथवा) सर्वकार्येषु सिद्धार्थैर्दूर्वया चूतपल्लवैः ।
अस्याभिषेकस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिरनुष्टुप्छन्दः,
शक्तिर्देवता सर्वसङ्कल्पसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।
ॐ राजराजेश्वरी शक्तिभैरवी कालभैरवी ।।

www.44Books.com

श्मशानभैरवी देवी त्रिपुरानन्दभैरवी ।
त्रिपुटा त्रिपुरादेवी तथा त्रिपुरसुन्दरी ।।
त्रिपुरेशी महादेवी तथा त्रिपुरमालिका ।
त्रिपुरानन्दिनी देवी तत्रैव त्रिपुरातनी ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
छिन्नमस्ता महादेवी तथा चैकजटेश्वरी ।।
तारा च जयदुर्गा च शूलिनी भुवनेश्वरी ।
हरिताख्या महादेवी तथा च रतिघण्टिका ।।
नित्या च नित्यरूपा च वज्रप्रस्तारिणी तथा ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।।
अश्वारूढा महादेवी तथा महिषमर्दिनी ।
दुर्गा च नवदुर्गा च श्रीदुर्गा भगमालिनी ।।
तथा भगन्देवी देवी भगक्लिन्ना तथा परा ।
सर्वचक्रेश्वरी देवी तथा दक्षिणकालिका ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
क्षेमङ्करी महाकाली चानिरुद्धा सरस्वती ।।
मातङ्गी चान्नपूर्णा च राजराजेश्वरी तथा ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।।
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका ।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपातिचण्डिका ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणो ।
उग्रदंष्ट्रा महादंष्ट्रा सुदंष्ट्रा तु कपालिनी ।।
भीमनेत्रा विशालाक्षी मङ्गला विजया जया ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।।
मङ्गला नन्दिनी भद्रा लक्ष्मीः कीर्तियशस्विनी ।
पुष्टिर्मेधा शिवा साध्वी यशः शोभा जया धृतिः ।।

www.44Books.com

आनन्दा च सुनन्दा च नन्दिन्यानन्दपूजिता ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।।
विजया मङ्गला भद्रा स्मृतिः शान्तिः क्षमाः धृतिः ।
सिद्धिस्तुष्टी रमा पुष्टिः श्रीः सिद्धिश्च रतिस्तथा ।
दीप्ता कान्तिर्यशोलक्ष्मीरीश्वरी बुद्धिरेव च ।
शक्री माया रतिर्ब्राह्मी जयन्ती चापराजिता ।।
अजिता मानवी श्वेता प्रीतिस्त्वदितिरेव च ।
माया चैत्र महामाया मोहिनी क्षोभिणी तथा ।।
कमला विमला गौरी लावण्याम्बुधिसुन्दरी ।
दुर्गा क्रियारुन्धती च तथैव विग्रहात्मिका ।।
चर्चिका चापरा ज्ञेया तथैव सुरपूजिता ।
वैवस्वती च कौमारी तथा माहेश्वरी परा ।।
वैष्णवी च महालक्ष्मीः कार्तिकी कौशिकी तथा ।
शिवदूती च चामुण्डा मुण्डमालाविभूषिता ।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
इन्द्रोवह्निर्यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणस्तथा ।।
पवनो धनदेशानो ब्रह्मानन्दो दिगीश्वराः ।
सम्वत्सराश्चायने च मासपक्षदिनानि च ।।
तिथयश्चाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
रविः सोमः कुजः सौम्या गुरुः शुक्रः शनैश्चरः ।।
राहुः केतुश्च सततमभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः ।
नक्षत्रं करणं योगोऽमृतसिद्धिस्ततः परम् ।।
दग्धं पापं तथा भद्रा योगो वाराः क्षणास्तथा ।
वारंवेला कालवेला दण्डा राश्यादयस्तथा ।।
अभिषिञ्चन्तु सततं मन्त्रपूतेन वारिणा ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्तसंज्ञकः ।।

www.44Books.com

कपाली भीषणाख्यश्च संहरोऽष्टौ च भैरवा: ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।।
डाकिनीपुत्रिका चैव राकिणीपुत्रिका तथा ।
ततश्च रङ्किणीपुत्री देवीपुत्री तत: परं ।।
मातृणां च तथा पुत्री चोर्ध्वमुख्या: सुताश्च या: ।
अधोमुख्या: सुताश्चैव, व्यालमुख्या: सुता: परा: ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिव: ।।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
पुरुष: प्रकृतिश्चैव विकाराश्चैव षोडश ।।
आत्मा परात्मा जीवात्मा ज्ञानात्मा परमात्मन: ।
आत्मानश्चात्मनश्चैव स्थूलसूक्ष्माश्च येऽपरे ।।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
वेदादिवीजं हुं बीजं स्त्रीबीजं तन्निकेतनं ।।
शक्तिबीजं रमाबीजं सुधाबीजं च केवलं ।
चिन्तारत्नं महाबीजं नारसिंहं च तारकं ।।
मार्तण्डभैरवं दौर्गबीजं श्रीपुरुषोत्तमं ।
गाणपत्यं च वाराहं कालीबीजं भयापहं ।।
त्वामेवमभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
बह्निश्च वह्निजाया च वषट् कूर्चमत:परं ।।
बौषट्कारं तु फट्कारमभिषिञ्चन्तु सर्वदा ।
नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा राक्षसा दानवाश्च ये ।।
पिशाचगुह्यका भूता अभिषेकेन तर्पिता: ।
अलक्ष्मी: कालकर्णी च पापानि सुमहान्ति च ।।
नश्यन्तु चाभिषेकेन ताराबीजेन ताडिता: ।
रोगा: शोकाश्च दारिद्र्यं दौर्बल्यं चित्तविभ्रमं ।।

www.44Books.com

नश्यन्तु चाभिषेकेन मन्मथेन च ताडिताः ।
तेजो ह्रासो बुद्धिह्रासः शक्तिह्रासस्तथैव च ।।
नश्यन्तु चाभिषेकेन शक्तिबीजेन ताडिताः ।
निरामिषा महारोगा डाकिन्यो मातरस्तथा ।।
घोराभिचाराः क्रूराश्च ग्रहनागास्तथैव च ।
नश्यन्तु चाभिषेकेन कालीबीजेन ताडिताः ।।
नश्यन्तु विपदः सर्वे सम्पदः सन्तु सुस्थिराः ।
पूर्णाभिषेके शाक्तानां पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।।
एवमासिञ्च्य शिष्यं तु पुनः पूजां समारभेत् ।
शिष्योऽपि तत्र सम्पूज्य गुरवे दक्षिणां ददेत् ।।
गो भूमिः स्वर्णरूप्यं च नानारत्नानि पार्वति ।
सर्वस्वं वा तदर्द्धं वा तदर्द्धं वापि दक्षिणा ।।
श्रीविद्यां सिद्धकालीं च तारां महिषमर्दिनीं ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय प्रदद्यात् देशिकः स्वयं ।।
श्रीविद्यां कालिकां तारां यो जपेत् परमेश्वरीं ।
तस्मै नैव प्रदातव्यं आसां मन्त्रं विना प्रिये ।।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ ततश्च परिकल्पयेत् ।
त्रैलोक्ये योषितां नाथ किं करोमि नदस्व मे ।।

श्री गुरुरुवाच :

कुलाचारं च भो वत्स सुगोप्यं कुरु सर्वतः ।
स्वशक्ति कौलिकीं कृत्वा तत्र पूजां प्रकल्पयेत् ।।
सिद्धमन्त्री यजेच्छक्ति कायेन मनसापि वा ।
परयोषां विशेषेण सिद्धमन्त्री प्रपूजयेत् ।।
एतानि कुलकर्माणि गुरुभिरुदितानि च ।
यावन्नैव सिद्धमन्त्री तावच्चा स्वकुलं ब्रजेत् ।।

।। इति श्रीनिरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे अष्टमः पटलः ।।

www.44Books.com

नवम पटलः

श्री देव्युवाच :

देवदेव महादेव सर्वसिद्धीश्वर प्रभो ।
सिद्धमन्त्री भवेत् केम कर्मणा वद मे प्रभो ।।

श्रीशिव उवाच :

आनीय मङ्गलं रम्यं कुलभक्तं कुलार्चने ।
स्वचक्रं विविधं कृत्वा शक्तिभाले लिखेत्ततः ।।
तत्र कामकलां देवीं वीरकोणे लिखेत् प्रिये ।
तन्मध्ये देवमन्त्रं च विहितं कामलाञ्छितं ।।
तत्र देवीं समावाह्य ध्यात्वा तत्र प्रपूजयेत् ।
ततो लक्षं च संजप्य स्थिरधीः कुलसाधकः ।।
ततस्तच्छक्तिकर्णे च ऋषिच्छन्दः समन्वितं ।
मूलमन्त्रं त्रिधावृत्या कथयेद्वामकर्णके ।।
अद्य प्रभृति शक्तिस्त्वं कुलदेवार्चनं चर ।
गुरोराज्ञां समादाय घृणालज्जाविवर्जिता ।।
शिवोक्तविधिना सैव करिष्यामि कुलार्चनं ।
त्राहि नाथ कुलाचारकामिनी कामनायक ।।
त्वत्पदाम्भोरुहच्छायां देहि मे कुलवर्त्मनि ।
गते च प्रथमे यामे स्वकुलं कुलिकोपरि ।।
वामभागे समासीनं रक्तवस्त्रसमन्वितं ।
नाना गन्धसमायुक्तं नाना रत्नेन भूषितं ।।
ललाटे मन्त्रमालिख्य मध्ये नामविदर्त्वितं ।
ताम्बूलपूरितमुखस्ताम्बूलारुणलोचनं ।।
कुलाकुलजपं कृत्पा ध्रुवमायाति तत्क्षणात् ।
एवमाकर्षितो मन्त्री सिद्धमन्त्री कुलेश्वरि ।।

www.44Books.com

तावत् प्रयोगः कर्तव्यो यावत् सिद्धिर्न जायते ।
सिद्धमन्त्री कुलाचारे परयोषां प्रपूजयेत् ।।
सिद्धमन्त्री श्मशाने च परयोषां प्रपूजयेत् ।
योषिदाकर्षणादेव कन्यां चैवावकर्षयेत् ।।
देवकन्याकर्षणेन देवतां कर्षयेत्तदा ।
आकर्षणप्रसादेन शिव एव प्रजायते ।।
आकर्षणं विना गच्छेत्तच्छक्ति कौलिकीं परां ।
आकर्षणाद् भवेत् सिद्धिर्देवानामपि दुर्लभा ।।
आकर्षणाच्च निर्वाणं लभते नात्र सशयः ।
यावन्न पूजयेद्देवीं रजनीं कुलमन्दिरे ।।
निर्वाणमपि चाङ्गस्य तावदाविर्भवेत् पुनः ।
प्रकृत्या जायते विश्वं प्रकृत्यां च विलीयते ।।
शैवानां वैष्णवानां च सौराणां च महेश्वरि ।
स्याच्च निर्वाणमेतेषां मातुराविर्भवन्ति हि ।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
सर्वे मुक्तिप्रदा देवा निर्वाणं श्रेयसं विना ।।
निर्वाणं श्रेयसं देवि प्रकृत्या परिजायते ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रकृतिं परिपूजयेत् ।।
प्रकृतिर्या महामाया सैव प्रकृतिरूपिणी ।
विकृतौ मन्त्रसिद्धिः स्यात् प्रकृतेः कुहकं गृहे ।।
निर्वाणं श्रेयसं सैव प्रकृतेः कुहकं विना ।
लिखनं मन्त्रयन्त्राणां पूजनं च जपं प्रिये ।।
नियतं गुरुमार्गेण साधको निजने चरेत् ।
सङ्गहीनैः सदा कार्यं सङ्गेन नरकं व्रजेत ।।
प्रकृतेर्योषितां वृन्दं विकृतिः पाञ्चभौतिकी ।
तच्चक्रं सिद्धिमूलं च मन्त्रयन्त्रविलेखनात् ।।

www.44Books.com

मन्त्रयन्त्रं विना देवि कुहकं विकृतेर्यदि ।
न गच्छेत् साधको वीरो न गच्छेन्नरकं व्रजेत् ।।
प्रकृतेः कुहकं योनौ यन्त्रे भाले च पार्वति ।
असंलिख्य यन्त्राणि दैन्यं गच्छेत्कुलसाधकः ।।
कामाद्वा मोहतो वापि लोभाद्वा वरवर्णिनि ।
प्रकृतेः कुहकं यन्त्रे यजेच्च नरकं व्रजेत् ।।
सिद्धिमूलं कुलेशानि विकृतेः कुहकं स्मृतं ।
तत्र सम्मोहयेत् सर्वं जगदेतच्चराचरं ।।
विकृतेः कुहकापन्नो मन्त्रतन्त्रविशारदः ।
तद्वरं च परिज्ञाप्य निर्वाणं श्रेयसं व्रजेत् ।।
ब्रह्मणि न न वा विष्णौ न गणेशे षडानने ।
प्रकृतेः कुहकं दानं न कुत्रापि प्रकाशितं ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वती संवादे नवमः पटलः ।।

दशम पटलः

श्री देव्युवाच :

शक्तिर्नाना विद्या प्रोक्ता संशयो जायते सदा ।
कुलीनां कीदृशीं देवी ब्राह्मणः पूजयेत् सदा ।।

श्री शिव उवाच :

सर्वजात्युद्भवा शक्तिर्योगिभिः पूज्यते सदा ।
यां यां पश्यति योगीन्द्रस्तां तामेव प्रपूजयेत् ।।
वीरशक्तिविशेषेण श्रृणुष्व वरवर्णिनि ।
पुरश्चर्या कृता वीराः प्रशस्ता वीरसाधने ।।
पुरश्चर्याविहीनाश्चेन्न योज्याः कुलसाधने ।
योज्यश्चेत्सिद्धिहानिः स्याद्रौरवं नरकं व्रजेत् ।।

www.44Books.com

वीरशक्तिं विना देवि न कुर्यात् कुलसाधनं ।
तदभावे हीनजातौ प्रशस्ता वीरसाधने ।।
पञ्चचक्रे प्रशस्ता यास्ताः शृणुष्व वरानने ।
चक्रं पञ्चविधं प्रोक्तं तत्र शक्तिं प्रपूजयेत् ।।
राजचक्रं महाचक्रं देवचक्रं तृतीयकं ।
वीरचक्रं चतुर्थं च पशुचक्रं च पञ्चमं ।।
पञ्चचक्रे यजेद्दिव्यो वीरश्च कुलसुन्दरि ।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च पञ्चचक्रे प्रपूजयेत् ।।
बलीयसी च देवेशि वीरचक्रे प्रपूजयेत् ।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वीरचक्रेण पूजयेत् ।।
योगिभिः पूज्यते देवि सर्वचक्रेषु कामिनी ।
माता च भगिनी चैव दुहिता च स्नुषा तथा ।।
गुरुपत्नी च पञ्चैता राजचक्रे प्रपूजयेत् ।
गौरी वाप्यथवा साध्वी सुरा शस्ता कुलेश्वरी ।।
शुद्धिश्छागोद्भवा शस्ता तृतीया वेदसम्भवा ।
मुद्रा गोधूमजा शस्ता स्वयम्भूकुसुमस्तथा ।।
कुण्डगोलोद्भवं द्रव्यं अनुकल्पं नियोजयेत् ।
रक्तचन्दनं तथा श्वेतमनुकल्पं च चन्दनं ।।
वस्त्रालङ्कारभूषाद्यैर्गन्धमाल्यानुलेपनं ।
पूजयेत् परया भक्त्या देवताभ्यो निवेदयेत् ।।
भक्ष्यं नानाविधं द्रव्यं नानावस्त्रसमन्वितं ।
आसवं शुद्धिसंयुक्तं ताभ्यो दद्यात् पुनः पुनः ।।
प्रणम्य प्रजपेन्मन्त्रं दृष्ट्वा ताश्च सहस्रकं ।
अङ्गं नैव स्पृशेत्तासां स्पृशेच्च नरकं व्रजेत् ।।
मधुमत्ता यदा तास्तु न स्वपन्ति सुसम्पदः ।
तत्तदैवं भवेत् सर्वं सत्यं सत्यं न संशयः ।।

www.44Books.com

षष्टिवर्षसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते ।
माता भग्नी स्नुषा कन्या वीरपत्नी कुलेश्वरि ॥
महाचक्रे यजेदेताः पञ्चशक्तीः पुनः पुनः ।
द्रव्यदाने तु सम्पूज्या न शक्तौ शिवयोजनं ॥
योजयेत्सिद्धिहानिः स्याद्रौरवं नरकं व्रजेत् ।
महाव्याधिर्भवेद्देवि धनहानिः प्रजायते ॥
सदैव दुःखमाप्नोति सर्वं तस्य विनश्यति ।
आद्यं च गौड़िकं प्रोक्तं द्वितीयं कुक्कुटोद्भवं ॥
तृतीयं रोहितं प्रोक्तं चतुर्थं माष सम्भवं ।
करवीरोद्भवं पुष्पं चन्दनं रक्तचन्दनं ॥
पूजयेत् परया भक्त्या शिवलोके महीयते ।
षष्टिवर्षसहस्राणि तत्र देवीं प्रपूजयेत् ॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां अमायां च कुजेऽहनि ।
राजचक्रे महाचक्रे भक्त्या शक्तीः प्रपूजयेत् ॥
शुक्लपक्षे गुर्वोर्वारे चतुर्थी-सप्तमी-तिथौ ।
महाचक्रे यजेद्भक्त्या सर्वकामार्थसिद्धये ॥
देवचक्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व वरवर्णिनि ।
विदग्धा सर्वजातीनां पञ्चकन्याः प्रकीर्तिताः ॥
गौडिकं फलजं रम्यं द्वितीयं पक्षिसम्भवं ।
तृतीयं शालमत्स्यं तु चतुर्थं धान्यसम्भवं ॥
सुगन्धिगन्धपुष्पं च देवचक्रे नियोजयेत् ।
देवचक्रे यजेच्छक्ति देवलोके महीयते ॥
षष्टिवर्षसहस्राणि देवकन्या प्रपूजयेत् ।
पञ्चकन्या यजेच्चक्रे नातिरिक्तां कदाचन ॥
लोभाद्वा कामतो वापि छलाद्वा वरवर्णिनि ।
यदि स्यात् सङ्गमं तासां रौरवं नरकं व्रजेत् ॥

www.44Books.com

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ।
पितृभूमिं समागम्य वीरचक्रे प्रपूजयेत् ।।
दिव्यवीरान्वितो मन्त्री यजेच्छक्तिं बलीयसीं ।

श्री देव्युवाच :

मात्रादयः पञ्चकन्या यतीनां च कथं प्रभो ।

श्रीशिव उवाच :

मात्रादयः पञ्चकन्या हीनजातायते प्रिये ।
चतुर्वर्णोद्भवां वेश्यां विशेषेण बलीयसीं ।।
भूमीन्द्रकन्यका माता दुहिता रजकीसुता ।
श्वपची च स्वसा ज्ञेया कापाली च स्नुषा स्मृता ।।
योगिनी निजशक्तिः स्यात् पञ्चकन्याः प्रकीर्तिताः ।
गुरोः समीपे कर्तव्यमथवा भ्रातृभिः सह ।।
सिद्धमन्त्री भवेद्वीरो न वीरो मद्यपानतः ।
अभिषिक्तो भवेद्वीरो अभिषिक्ता च कौलिकी ।।
एवं च वीरशक्तिं च वीरचक्रे नियोजयेत् ।
क्रमसङ्केतकं चैव पूजासङ्केतमेव च ।।
मन्त्रसङ्केतकं चैव यन्त्रसङ्केतकं तथा ।
लिखनं मन्त्रयन्त्राणां सङ्केतं गुरुमार्गतः ।।
सङ्केतज्ञं विना वीरं यदि चक्रे नियोजयेत् ।
निष्फलं पूजनं देवि दुःखं तस्य पदे पदे ।।
संकेतहीनो यो वीरो नाभिषेकी गुरुः क्रमात् ।
कुलभ्रष्टः स पापिष्ठस्तं त्यजेद्वीरचाक्रके ।।
नाभिषिक्तो वसेच्चक्रे नाभिषिक्ता च कौलिकी ।
वसेच्च रौरवं याति सत्यं सत्यं न संशयः ।।
एवं क्रमं विना देवि वीरचक्रे वसेद्‌ यदि ।
सिद्धिहानिं सिद्धिहानिं रौरवं नरकं व्रजेत् ।।

www.44Books.com

सर्वमद्यं सर्वशुद्धि सर्वमीनं कुलेश्वरि ।
सर्वमुद्रां सर्वपुष्पं स्वयम्भूकुसुमं तथा ।।
कुण्डगोलोद्भवं द्रव्यं नानारससमन्वितं ।
प्रदद्यात् साधकश्रेष्ठो वीरचक्रे पुनः पुनः ।।
स्वशक्ति पूजयेत्तत्र तदुच्छिष्टं पिबेत् प्रिये ।
चव्यं च ज्येष्ठतो ग्राह्यं कनिष्ठाय निवेदयेत् ।।
एकासने न भुञ्जीत भोजनं नैकभाजने ।
परस्परमुपस्पर्शं न कर्तव्यं न कदाचन ।।
एवं क्रमेण देवेशि वीरचक्रं समाचरेत् ।
आनीय हीनजां देवीं शक्तिमन्त्रेण शोधयेत् ।।
संशोध्य हीनजां पूजां वीरशक्ति निवेदयेत् ।
मधुसक्ताय वीराय यो दद्याद्धीनजां सुतां ।।
वक्त्रकोटिसहस्रेण तस्य पुण्यं न गीयते ।
वीराय शक्तिदानं तु वीरचक्रे विधीयते ।।
चक्रभिन्ने चरेद्दानं रौरवं नरकं व्रजेत् ।
घातयेद्गोपयेद्वापि न निन्देन्न निरीक्षयेत् ।।
कामं क्रोधं च मात्सर्यं विकारं लोभमेव च ।
कुत्सा निन्दा दुरालापं गोपयेदष्टकं प्रिये ।।
मन्त्रं मुद्रामक्षमालां योनि च वीरसङ्गमं ।
मण्डलं च घटं पीठं सिद्धिद्रव्याणि गोपयेत् ।।
पण्डितं वीरसन्तानं क्षेत्रं देवीं च योगिनीं ।
कुलाचारं गुरुदूतीं मनसापि न निन्दयेत् ।।
मातृयोनिं पशुक्रीडां नग्नां स्त्रीमुन्नतस्तनीं ।
कान्तेन क्षोभितां कान्तां कामतो नावलोकयेत् ।।
देवीं गुरुं सुधां विद्यां श्रेष्ठां शक्ति क्रियात्मजां ।
योगिनीं भैरवीतत्वं अष्टतत्वं प्रपूजयेत् ।।

www.44Books.com

विमाता दुहिता भग्नी स्नुषा पत्नी च पञ्चमी ।
पशुचक्रे यजेद्धीमान् पशुवत्तोषणं चरेत् ।।
गन्धपुष्पं च माल्यं च वस्त्राद्यभरणानि च ।
सिन्दूरागुरुकस्तूरी नाना पुष्पाणि सुन्दरि ।।
भक्ष्यं नानाविधं द्रव्यं फलं नानाविधं प्रिये ।
एतद्द्रव्यगणं यस्तु भक्त्या ताभ्यो निवेदयेत् ।।
षष्टिवर्षसहस्राणि क्षितौ राजा भवेद् ध्रुवं ।
वीरचक्रे मन्त्रसिद्धिर्भवत्येव न संशयः ।।
अमावास्यां चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ।
श्मशानेन गतेनार्चेत् सूचितं न प्रकाशितं ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे दशमः पटलः ।।

एकादश पटलः

श्री देव्युवाच :

योगिनां साधनं देव सूचितं न प्रकाशितं ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कृपया कथय प्रभो ।।

श्री शिव उवाच :

आत्मनो ज्ञानमात्रेण तत्वज्ञानं भवेत् प्रिये ।
तत्वज्ञानी भवेद्योगी स योगी त्रिविधः स्मृतः ।।
निरालम्बश्च सालम्बो भक्तश्च परमेश्वरि ।
भक्तोऽपि वीरभावेन साधयेत् कुलसाधनं ।।
शक्तिमात्रं यजेद्योगी भक्तो योगपरायणः ।
आत्मन्येवात्मनो योगं शक्तौ वा शिवयोजनं ।।
अभिषेकेण देवेशि भैरवो जायते भुवि ।
अवधूतो भवेद्वीरो दिव्यश्च कुलसुन्दरि ।।

www.44Books.com

श्मशानागमनिष्ठश्च कुलयोषित्परायण: ।
कुलशास्त्रार्थसंवक्ता बलिदानरत: सदा ।।
निर्द्वन्द्वो निरहङ्कारो निर्लोभो निर्भय: शुचि: ।
गुरुदेवरत: शान्तो घृणालज्जाविवर्जित: ।।
रक्तचन्दनलिप्ताङ्गो रक्तकौपीनभूषण: ।
उदारचित्त: सर्वत्र वैष्णवाचारतत्पर: ।।
कुलाचाररतो वीर: पण्डित: कुलवर्त्मनि ।
कुलसंकेतसंवेत्ता कुलशास्त्रविशारद: ।।
महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिक: शुचि: ।
नित्यकर्मणि निष्ठातो दम्भहिंसाविवर्जित: ।।
परनिन्दासहिष्णु: स्यादुपकाररत: सदा ।
वीरमासनमासीन: पितृभूमिगत: शुचि: ।।
सर्वदानन्दहृदय: कुमारीपूजने रत: ।
एवं यदि भवेद्वीरस्तदैव हीनजां यजेत् ।।
दिव्योऽपि वीरभावेन साधयेत् कुलसाधनं ।
कुलं च सर्वजातीनां पूजनीयं कुलार्चने ।।
सिद्धविद्या विशेषेण सिद्धिदा कुलपूजने ।
श्मशाने निर्जने रम्ये त्रिपान्ते शून्यमण्डले ।।
ग्रामे पातालके वापि साधयेत् कुलसाधनं ।
बलिदानं विना पानं श्मशानगमनं बिना ।।
जपपूजादिकं कर्म स्वभिचाराय कल्प्यते ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेब बलिदानं समाचरेत् ।।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य तत्र भावे तत: परं ।
ततो विकटदंष्ट्रे च परपक्षं मोहयद्वयं ।।
खादयद्वयमुक्त्वा च परपक्षद्वयं तथा ।
यामां हिंसितुमुद्यता च योगिनी च हरहर हुं फट्तत: परं

www.44Books.com

वह्निजाया ततो देवि परविद्यां ततः परं ।
आकर्षय ततो देवि छेदकश्चकपालिने ।।
गृह्णद्वयं वह्निजाया अनेन बलिमाहरेत् ।
अनेन बलिदानं तु कुलकर्मसुसिद्धये ।।
त्रिपान्तरे श्मशाने वा बलिं दद्याज्जपेन्मनुं ।
महात्रिपान्तरे दत्वा किं न सिद्ध्यति भूतले ।।
बलिदानं विना किञ्चित् साधनं नैव साधयेत् ।

श्री देव्युवाच :

साधकः कथितो देव साधिका कीदृशी प्रभो ।।

श्रीशिव उवाच :

निर्लोभा कामनाहीना निर्लज्जा दम्भवर्जिता ।
शिवसङ्गगता साध्वी स्वेच्छया विपरीतगा ।।
चतुर्वर्णोद्भवा रम्भा प्रशस्ता कुलपूजने ।
चतुर्वर्णोद्भवानां च पुरश्चर्या विधीयते ।।
वर्णशङ्करतो जाता हीनजा परिकीर्तिता ।
लज्जालाञ्छितभाला या सा साक्षाद्भुवनेश्वरी ।।
नानाजात्युद्भवानां च सा दीक्षा कुलपूजने ।
ब्राह्मणो हीनजां देवीं मनसा वा प्रपूजयेत् ।।
अज्ञात्वा कौलिकीं देवीं पशुवत् परिपूजयेत् ।
पशुवत् पूजयेद्वीरो दीक्षितां वाप्यदीक्षितां ।।
शक्तिमात्रं यजेद्वीरः प्राप्तयोगमनाः स्मरेत् ।
अष्टोत्तरशतं देवि तद्योगं सुरतो जपेत् ।।
प्रणम्य मनसा देवीं चुम्बनं मनसा स्मरेत् ।
सुन्दरीं नागरीं दृष्ट्वा एवं सञ्चिन्तयेन्नरः ।।
स एव कालिकापुत्रः सदाशिव इहापरः ।
हट्टे वा मन्दिरे रम्ये त्रिपान्ते पथि चान्तरे ।।

www.44Books.com

दृष्ट्वा च सुन्दरीं रम्यां मनसा च प्रपूजयेत् ।
तद्योगं मनसा स्मृत्वा जपेदष्टोत्तरं शतं ।।
जपं समर्प्य तां चुम्ब्य प्रणम्य च पुनः पुनः ।
भक्ष्यद्रव्यं ततस्ताभ्यो भक्त्या च विनिवेदयेत् ।।
यदा द्रव्याणि गृह्णन्ति तदा सिद्धिर्भवेद्ध्रुवं ।
यदि भाग्यवशेनैव हीनजां कौलिकीं परां ।।
पूजयेन्मनसा वाचा तदा तत्त्वं विचिन्तयेत् ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा चुम्बयित्वा पुनः पुनः ।।
पुनस्तत्त्वं चरेत्तत्र जपसंख्या रसातलं ।
ततस्तु पूर्ववत् कृत्वा पुरश्चरणमुच्चरेत् ।।
हीनजाते तु संयुक्तां दीक्षिता सैव सर्वदा ।
शाङ्करी शक्तिका वापि वैष्णवी वाप्यवैष्णवी ।।
सर्वदा साधने योज्या साधकानां कुलार्चने ।
वाक्याद्वा क्रीडया वापि धनाद्वा मानसं नयेत् ।।
न दोषो द्रव्यदाने च हीनजा कुलसाधने ।
विजयारससंयुक्ता हीनजा दीक्षिता सदा ।।
तद्भाले विलिखेन्मायां ततः सा भुवनेश्वरी ।
हीनजा भालसंयुक्ता भुवना भुवनेश्वरी ।।
हीनजा कुलसामान्या कुलचक्रं लिखेत् प्रिये ।
तत्र पूजा चरेद्योगी गुरुमार्गक्रमेण च ।।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पुरश्चरणमुच्यते ।
अथवा शक्तिभाले तु त्रिपञ्चारे लिखेत् प्रिये ।।
मनुं वापि त्रिकोणस्थं तत्र पूजादिकं चरेत् ।
वज्रपुष्पेण संलिख्य वज्रपुष्पेण पूजयेत् ।।
तत्त्वयोगाज्जपेद्विद्यां कलौ कलुषहारिणीं ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पुरश्चरणमुच्यते ।।

www.44Books.com

कुलजाष्टसुतां शुद्धां रजकीं योगिनीं तथा ।
नटीं कापालिकां वेश्यां शौण्डिकां श्वपचीं तथा ।।
विदग्धां हीनजां सर्वां पूजयेद् द्रव्यदानतः ।
आसां भाले लिखेन्मायां ततस्ताः परिपूजयेत् ।।
सर्वथा दीक्षयेन्नैतां दीक्षयेन्नरकं व्रजेत् ।
नानाजात्युद्भवा रम्भा हीनजा परिकीर्तिता ।।
चतुर्वर्णोद्भवा रम्भा दीक्षयेत् गुरुमार्गतः ।
हीनजां यदि लभ्यते तदान्यां परिचिन्तयेत् ।।
हीनजां पूजयेद्योगी निःसङ्गो निशि वारतः ।
हीनजां द्रव्यदानेन तोषाय तत्त्वचिन्तनात् ।।
तत्र मन्त्रं च यन्त्रं च लिखित्वा पूजयेद्यदि ।
स मुक्तः कालिकापुत्रो न स भूमौ प्रजायते ।।
कामाख्या पूजिता येन स मुक्तो नात्र संशयः ।
शक्तिमन्त्रा न सिध्यन्ति कामाख्यापूजनं विना ।।
ब्राह्मणीं क्षत्रियां वैश्यां शूद्रां च वरवर्णिनि ।
नाहरेद् द्रव्यदानेन हरेच्च नरकं व्रजेत् ।।
आकर्षिताय शिष्याय प्रत्यानुत्यां च दीक्षितां ।
पूजयेत् परया भक्त्या तासां चाहं विशेषतः ।।
आसामभावे देवेशि स्वशक्तिं परिपूजयेत् ।
स्वशक्तौ सिद्धमन्त्री स्यात्पश्चाद्देवान् प्रपूजयेत् ।।
अङ्गावरणपूजादौ यदि वा लक्षते कुलं ।
तदैव हीनजां शक्तिं शोधयेदुक्तवर्त्मना ।।
हीनजां शोधयेदेकां सिद्धमन्त्री त्वलिप्सितः ।
हीनजा सुप्रसन्ना चेत् सिद्धिर्भवति साधके ।।
सर्वदा हीनजां शक्तिं सर्वत्रैव प्रपूजयेत् ।
गुरुनाम च यन्त्रं च पूजयेत् कुलमार्गिणं ।।

www.44Books.com

भैरवं भैरवीं तत्त्वं मनसा न प्रकाशयेत् ।
कन्याकोटिप्रदानेन हेमभारशतस्य च ॥
यत्फलं लभते देवि तत्फलं निजमन्दिरे ।
प्रथमां द्वितीयामुक्तां शक्तिभ्योऽपि ददेद्यदि ॥
तृप्यन्ति देवता: सर्वा योगिन्यो भैरवादय: ।
पृथिवीं हेमसम्पूर्णां दत्वा यत्फलमालभेत् ॥
तत्फलं कौलिकां गेहे पूजायां लभते ध्रुवं ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं कुलीनां गृहदर्शनं ॥
गवां कोटिप्रदानेन यत्फलं लभते नर: ।
तत्फलं हीनजागेहे लभते नात्र संशय: ॥
तिस्र: कोट्यर्द्धकोटी च तीर्थस्नानेषु यत्फलं ।
तत्फलं लभते देवि कुलीनां यन्त्रदर्शने ॥
कुलीनां यन्त्रमालिख्य यद्यत् कर्म समाचरेत् ।
तत्कर्म सफलं याति सत्यं सत्यं न संशय: ॥
कुलीनां यन्त्रमालोक्य सर्वपापै: प्रमुच्यते ।
शैवा: शाक्ताश्चसौराश्च वैष्णवाश्चकुलेश्वरि ॥
पूजयन्ति सदा भक्त्या कुलीनां गृहमन्दिरे ।
सर्वेषां यन्त्रमन्त्राणां दुर्गाधिष्ठातृदेवता ॥
यतो वै जायते विश्वं तस्मात्तां परिपूजयेत् ।
यन्त्रपूजाकृतो मन्त्री न स योनौ प्रजायते ॥
यन्त्रपूजां विना देवि न शक्तिपूजनं चरेत् ।

॥ इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे एकादश: पटल: ॥

www.44Books.com

द्वादश पटलः

श्रीशिव उवाच :

अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि साधनं भुवि दुर्लभं ।
येन कृते लभेत् सिद्धि देवानामपि दुर्लभां ।।
ललाटे शक्तिमन्त्रं तु त्रिरावृत्या लिखेद् बुधः ।
तन्मध्ये कामबीजं च विलिखेत् कामलाञ्छितं ।।

कामेन पुटितं कृत्वा पूजयेत् परमेश्वरीं ।
सम्पूज्य कालिकां देवीं यन्त्रं च परिपूजयेत् ।।
तत्त्वचिन्तापरो योगी जपेल्लक्षं निराकुलः ।
संगृह्य कुलपुष्पं तु पूजयेच्च पुनः पुनः ।।

सहस्रं तर्पयेत् पीठे यन्त्रप्रक्षालनोदकैः ।
एवं कृते लभेत् सिद्धि सत्यं सत्यं न संशयः ।।
अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि पुरश्चरणमुत्तमं ।
शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले ।।

शतमेकं मुखाब्जेषु पुष्पवक्त्रे शतद्वयं ।
शतद्वन्द्वं कुचद्वन्द्वे शतं च नाभिमण्डले ।।
शतमेकं कुलागारे प्रजपेद्भक्तिभावतः ।
एवं दशशतं जप्त्वा कुलागारे ततो जपेत् ।।

पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं गजान्तकसहस्रकं ।
ततस्तु तत्त्वयोगेन शतमष्टोत्तरं जपेत् ।।
पूजनं च पुनस्तत्र पुरश्चरणमुच्यते ।
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि कुलागारस्य साधनं ।।

येन कृते कुलेशानि सर्वपापक्षयो भवेत् ।
कुलागारे कुलाष्टम्यां कुलमाहूय पूजयेत् ।।

www.44Books.com

तर्पणं च जपं होमं तत्तदक्षरतां व्रजेत् ।
कदलीतरुमूलं च द्विगुणं यदि दृश्यते ।।
तत्रैव महती पूजा कर्तव्या वरवर्णिनि ।
तदूर्ध्वदे ब्रह्मवक्त्रेण होमं कुर्याद्विचक्षणः ।।
होमं कृत्वा जपेन्मन्त्रं कोटिकोटिगुणं भवेत् ।
द्विगुणं रजनीमूलं संवीक्ष्य यो जपेन्मनुं ।।
स भवेत् सर्वसिद्धीशस्तस्य पुण्यं न विद्यते ।
रजनी स्वेच्छयाहूय साधकं कुलभूषणं ।।
विपरीता जपेन्मन्त्रं तस्याः पुण्यं न गण्यते ।
रजन्याथ कुलागारे पुलिने निपुणा यदि ।।
तत्समा रजनी कान्ता कमला वाथ राधिका ।
त्रिषु लोकेषु साधन्या ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।।
सिद्धविद्या महाविद्या मन्त्रयन्त्रफलप्रदा ।
तस्याः प्रसादमात्रेण दुष्टमन्त्रोऽपि सिध्यति ।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तामेव शरणं व्रजेत् ।
रजन्यां रजनीयोगं विहरेद् यदि साधकः ।।
जपेद्वा पूजयेत्तत्र सर्वं तत् निष्फलं भवेत् ।
येन केन प्रकारेण रजनीतोषणं चरेत् ।।
वाह्याद्वा क्रीडनाद्वापि रणाद्वा तोषयेत् सदा ।
यं यं भावं रजन्यां च तं तं भावं प्रकल्पयेत् ।।
अतिरिक्तः कृतो भावो रौरवं नरकं व्रजेत् ।
कलायाः सम्मतिं कृत्वा साधयेत् कुलसाधनं ।।
अन्यथा नरकं याति सत्यं सत्यं न संशयः ।
कलापि साधकं ज्ञात्वा सम्मतिं नैव जायते ।।
सा चैवं नरके घोरे वसेदेव न संशयः ।
उभयोः सम्मतिं ज्ञात्वा साधयेत् कुलसाधनं ।।

www.44Books.com

असम्मतकुलासङ्गात् सिद्धिहानिः प्रजायते ।
योगच्छेद्रजनीगेहे कुलसाधनवर्जिते ॥
स एव नरकं याति सत्यं सत्यं न संशयः ।
क्रोधाद्वा कामतो वापि द्वेषाद्वा वरवर्णिनि ॥
न गच्छेद्रजनीगेहं गच्छेच्च नरकं व्रजेत् ।
अज्ञात्वा कुलसङ्केतं कुलमार्गं विशेद्यदि ॥
स याति नरकं घोरं का कथा परजन्मनि ।
गुरुं विलंघ्य शास्त्रेऽस्मिन् नाधिकारी कदाचन ॥
गुरोराज्ञां समादाय कुलपूजां चरेत् सुधीः ।
पशोर्वापि शठाद्वापि धूर्ताद्वा चुल्लुकादपि ॥
न गृह्णीयात्सिद्धिविद्यां गृह्णीयाद्दुःखभाग्भवेत् ।
मधुलुब्धो यथा भृङ्गः पुष्पात् पुष्पान्तरं व्रजेत् ॥
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो गुरोर्गुर्वन्तरं व्रजेत् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कुलीनं गुरुमाश्रयेत् ॥
कुलीनस्तन्त्रमन्त्राणां अधिकारीति गीयते ।
आजन्म च परं वस्तु कुलीनाय निवेदयेत् ॥
शुभे मासि शुभे पक्षे शुभे लग्ने शुभे दिने ।
पूर्वोक्तमन्त्रज्ञानेन घटं संस्थापयेत्ततः ॥
भूर्जपत्रेण मालिख्य घटे संस्थाप्य यत्नतः ।
तत्र पूजां चरेद्धीमान् महाचीनक्रमेण च ॥
पूजयित्वा ततो देवीं गुरुः सूर्यं विचिन्तयेत् ।
ततः कुलीनामाश्रित्य मन्त्रं तन्त्रं विलोकयेत् ॥
अभिषेकं च तत्रैव कुर्यात् कुलपरायणः ।
पशोर्वा चुल्लुकाद्वापि धूर्ताद्वा कुलपामरात् ॥
सिद्धिविद्यां न गृह्णीयात् गृह्णीयान्नरकं व्रजेत् ।
जपपूजां तथा होमं साधनं सर्वकर्मसु ॥

www.44Books.com

सर्वं च निष्फलं याति दु:खं तस्य पदे पदे ।
कुलद्रव्याणि देवेशि पश्वादिभ्यो न दर्शयेत् ।।
तर्पयेत् सिद्धिहानि: स्यात् रौरवं नरकं व्रजेत् ।
कुलपूजादिकं कर्म पशोरग्रे चरेद्यदि ।।
तत्कर्म निष्फलं याति का कथा परजन्मनि ।
पशोरालापनाद्देवि कुलकर्म प्रनश्यति ।।
पशोर्दर्शनमात्रेण सूर्यदर्शनमाचरेत् ।
स एव द्विविधो देवि दीक्षितोऽदीक्षित: पशु: ।।
दीक्षितो हि भवेत् पूर्वोऽदीक्षितो हि महापशु: ।
पूर्वसङ्गात् कुलेशानि सिद्धिहानि: प्रजायते ।।
महापशुसमायोगान्नकुलं शरणं व्रजेत् ।
पशुमात्रसमायोगात् प्रेतराज्याधिपो भवेत् ।।
पशुमात्रसमायोगात् कुलकर्म प्रनश्यति ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कुलीनं गुरुमाश्रयेत् ।।
कुलीनसेवितस्यापि मन्त्रसिद्धि: प्रजायते ।
पशुं शठं च धूर्तं च चुल्लुकं च विशेषत: ।।
धमर्थिकाममोक्षार्थी गुरुत्वेन च चार्चयेत् ।
।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे द्वादश: पटल: ।।

●●

त्रयोदश पटल:

श्री देव्युवाच :

तासां च सिद्धिविद्यानां यस्या या या: प्रपूजिता: ।
तास्ता: शक्तिविशेषेण कथयस्व मयि प्रभो ।।

श्री शिव उवाच :

कुलं च सर्वजातीनां कुलीनानां कुलार्चने ।
सिद्धविद्याविशेषेण सिद्धिदा कुलपूजने ।।

www.44Books.com

श्यामाविद्या न सिध्यन्ति नापिताङ्गनया विना ।
ताराविद्या न सिध्यन्ति चाण्डालीगमनं विना ॥
श्रीविद्या च न सिध्यन्ति ब्राह्मणीगमनं विना ।
छिन्नमस्ता न सिध्यन्ति कापालीगमनं विना ॥
सिद्धविद्या न सिध्यन्ति भूमीन्द्रतनयां विना ।
जलकान्तगृहे देवि भैरवी च सुसिध्यति ॥
मध्यमा रहिता प्रोक्ता विहिता द्रुतसिद्धिदा ।
साधयेद्रजनीं सर्वां ब्राह्मणीं यवनीं विना ॥
सर्वावस्थां परित्यज्य साधयेद्‌ द्विजजां द्विजः ।
राजराजेश्वरी साक्षात् द्विजजारूपधारिणी ॥
द्विजजातोषणादेव द्रुतं सिध्यति सुन्दरि ।
श्रेष्ठवर्णोद्भवां रम्भां साधने नैव साधयेत् ॥
साधयेत् सिद्धिहानिः स्याद्रौरवं नरकं व्रजेत् ।
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि रजनीं साधनान्तरां ।
यस्मिन् कृते भवेत् सिद्धिर्देवानामपि दुर्लभा ॥
रजनीद्विगुणं वीक्ष्य सहस्रं यदि साधकः ।
पञ्चाशद्दिवसं यावत्तावच्च प्रत्यहं जपेत् ॥
सम्पूज्य रजनीं भूमिं सङ्गम्य प्रजपेन्मनुं ।
तदा वादी सुसिद्धः स्याज्जपेत् क्षितितनुं विशेत् ॥
पर्वते हस्तमारोप्य शतशः शुद्धभावतः ।
कवितां लभते धीमान् देवीलोकं मृते व्रजेत् ॥
पद्ममध्यं तथा बिम्बं खञ्जनं शिखरं तथा ।
चामरं वारिबिम्बं च तिलपुष्पं सरोरुहं ॥
त्रिसूत्रं वीक्ष्य सञ्जप्य शतशः शुद्धभावतः ।
स सर्वरजनीनाथः कलौ कल्पलता भुवि ॥

www.44Books.com

सम्पूज्य रजनीगेहं मनुं तत्रैव संलिखेत् ।
कलां वा कणमात्रेण देवीं ध्यात्वा पुनर्यजेत् ।।
तदुद्भवेन पुष्पेण पूजयेद् भक्तिभावतः ।
स याति शिवतां भूमौ कुलद्रुमगतः शुचिः ।।
ब्रह्मतरौ महापद्मे ध्यात्वा देवीं प्रपूजयेत् ।
तत्सुधासारसारेण तर्पयेन्मातृकामुखे ।।
कलापूजाक्रमेणैव रजनी वेष्टिते यदि ।
महानिशि जपेन्मन्त्रं ध्रुवं मोक्षं स चार्हति ।।
तिथिक्रमेण कामेन रजनीवेष्टिता जपेत् ।
तदा मासेन सिद्धिः स्यात् सहस्रजपमानतः ।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां द्विगुणं यदि दृश्यते ।
मन्त्रं कलान्तरे देवि लिखित्वा कुंकुमेन च ।।
तत्पार्श्वे साध्यमालिख्य ताडयेत् सृष्टिवृष्टिभिः ।
साध्यसूक्तं जपेत्तत्र कामार्ता तत्र लभ्यते ।।
तत्र पूजां चरेद्धीमान् महाचीनक्रमेण च ।
ग्रामे पातालके रम्ये श्मशाने प्रान्तरेऽपि वा ।।
विलिख्य मन्त्रमन्त्रं च कामाख्यायां प्रपूजयेत् ।
तदा राज्यमवाप्नोति इहैव कुलसुन्दरि ।।
मृते च मोक्षमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ।
रजोमूले रजन्यां तु यो याति बिल्वपत्रकैः ।।
देवीऽभ्यर्च्य सहस्रं तु प्रजपेत पितृकानने ।
तदा राज्यमवाप्नोति यदि वा न पलायते ।।
चितायां रजनीगेहे सङ्गम्य च जपेन्मनुं ।
यं यं कामयते कामं तं तमेव ध्रुवं लभेत् ।।
पुनश्च तत्र सम्पूज्य स्वयम्भूकुसुमेन च ।
इहैव जायते सौख्यमन्ते च मोक्षमाप्नुयात् ।।

www.44Books.com

महाभूतदिने नक्तं श्मशाने रजनीयुतः ।
सहस्रैकप्रमाणेन किं न सिध्यति भूतले ।।
रजनीरजसा देवि पिण्डं च परिकल्पयेत् ।
यन्नाम्ना दीयते पिण्डं न गच्छेत् स यमालयं ।।
रजनीवेस्टनादेव यत्फलं लभते प्रिये ।
तस्यापि षोडशांशं च चरेन्मार्गेण लभ्यते ।।
शवासनाधिकफलं लतागेहे प्रवेशनं ।
तस्यापि षोडशांशं च कलां नार्हन्ति ते शवाः ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वती संवादे त्रयोदशः पटलः ।।

चतुर्दश पटलः

श्री देव्युवाच :

वेश्या च कीदृशी देव प्रशस्ता कुलपूजने ।
कस्याः संसर्गमात्रेण श्रेष्ठो भवति साधकः ।।
नानाकुलगता वेश्या कथं शस्ता कुलार्चने ।

श्रीशिव उवाच :

गुप्तवेश्या महावेश्या कुलवेश्या महोदया ।
राजवेश्या देववेश्या ब्रह्मवेश्या च सप्तधा ।।
कुलजा गुप्तवेश्या स्यान्निर्लज्जा मदनातुरा ।
पशुभर्ताश्रिता लोके गुप्तवेश्या प्रकीर्तिता ।।
कुलजा कुलवेश्या च महावेश्या प्रकीर्तिता ।
महावेश्या कुलेशानि स्वेच्छया च दिगम्बरी ।।
कुलवेश्या कुलीना च वीरपत्नी कुलेश्वरि ।
महोदया समाख्याता स्वेच्छया विपरीतगा ।।

www.44Books.com

राजवद्‌या च वेश्या स्याद् राजवेश्या प्रकीर्तिता ।
देवं संयोज्य चक्रे च जप्त्वा तु विन्दुपातनं ।।
भगलिङ्गकपाले च चुम्बयेच्च पुनः पुनः ।
एवंविधा कुलीना चेद्‌ब्रह्मवेश्या प्रकीर्तिता ।।
दिव्यशक्तिर्वीरशक्तिस्तासां संज्ञा प्रकीर्तिता ।
चतुर्वर्णोद्भवानां च संज्ञिताः परिभाषिताः ।।
वेश्यावद् भ्रमते यस्मात्तस्माद्वेश्या प्रकीर्तिता ।
वर्णशङ्करतो जाता सर्ववेश्याः प्रकीर्तिताः ।।
कुलमार्गे प्रवृत्ता या सा वेश्या मोक्षदायिनी ।
चुम्बनालिङ्गनाघातं रतिविग्रहदर्शनं ।।
आमन्त्रणं त्रिसन्ध्यं च भगलिङ्गस्य कीर्तनं ।
वेश्यानां च जपाङ्गेदं शङ्करेण पुरोदितं ।।
जपाङ्गेन विना वेश्या न कुर्यात् स्थिरसङ्गमं ।
जपाङ्गं प्रत्यहं कुर्यात् सा शिवैः सह मोदिता ।।
निशायां प्रजपेन्मन्त्रं स्वयम्भूशिवयोगतः ।
वेश्यानां जपमात्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ।।
विपरीता जपेन्मन्त्रं सा काली नात्र संशयः ।
योषितां मन्त्रसिद्धिः स्याद् विपरीतरतौ प्रिये ।।
विपरीतरतौ जप्त्वा सर्वसम्पत्तिमालभेत् ।
विपरीतरतौ जप्त्वा निर्वाणपदवीं व्रजेत् ।।
विपरीतरतौ जप्त्वा कालीवद्विहरेत् भुवि ।
विपरीतरता काली विपरीता च तारिणी ।।
विपरीता च या वेश्या सा काली नात्र संशयः ।
योषिद्विद्या न सिध्यन्ति विपरीतरतिं विना ।।
विपरीतरता वेश्या त्रिषु लोकेषु पूजिता ।
गाढमालिङ्गनं दत्वा चुम्बयित्वा पुनः पुनः ।।

www.44Books.com

कटाक्षैर्दर्शयेद् यन्त्रं दक्षिणा कौलिकीरिता ।
एवंविधा पुरश्चर्या वेश्यायाश्च कुलेश्वरि ॥
एवंविधा भवेद्वेश्या न गेश्या कुलटा प्रिये ।
कुलटासङ्गमादेव रौरवं नरकं व्रजेत् ॥
वीरशक्तिर्भवेद् वेश्या सा शस्ता स्वस्वसाधने ।
पुरश्चर्याश्च ता वेश्या योजयेत् कुलसाधने ॥
शिवलिङ्गगता साध्वी शिवलिङ्गगता सती ।
शिवलिङ्गगता वेश्या कीर्तिता सा पतिव्रता ॥
योनिश्च जनिका माता लिङ्गश्च जनकः पिता ।
विभाव्य पितरौ भावं उभयोः परिचिन्तनं ॥
लिङ्गरूपो महाकालो योनिरूपा च कालिका ।
तयोर्योगपरा धन्या तयोर्योगपरो महान् ॥
स्वभैरवं विना वेश्या शिवपूजां करोति या ।
रौरवे नरके घोरे वसेदाहूतसम्प्लवं ॥
स्वभैरवीं विना वीरो मनसा नैव संस्मरेत् ।
स्मरेच्च नरकं याति महाव्याधिपरो भवेत् ॥
नानावीराश्रिता वेश्या पशुवेश्या कुलेश्वरि ।
सा वेश्या नरकं याति सत्यं सत्यं न संशयः ॥
कामाद्वा लोभतो वापि धनाद्वा वरवर्णिनि ।
नानावीराश्रिता वेश्या सा वेश्या नरकं व्रजेत् ॥
धनाद्वा कामतो वापि लोभाद्वा कुलसुन्दरि ।
पशुसङ्गगता वेश्या सा वेश्या नरकं व्रजेत् ॥
नानावीराश्रिता वेश्या पशुसङ्गगता च या ।
वर्जनीया प्रयत्नेन कुलसाधनकर्मणि ॥
योज्या चेत्सिद्धिहानिः स्याद् भ्रष्टवेश्या कुलार्चने ।
रोगः शोको भवेत्तस्य धनहानिः क्षणे क्षणे ॥

www.44Books.com

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन स्वशिवं च समाश्रयेत् ।
जपपूजादिकं वेश्या स्वशिवे परिकल्पयेत् ।।
पुष्पिता काममापन्ना सदा रमणमिच्छुका ।
सर्वसिद्धिप्रदा वेश्या कालिकारूपधारिणी ।।
पितृभूमिः समाख्याता सदाशिवनिवासिनी ।
शिव एव नरो ज्ञेयो लिङ्गरूपधरो यतः ।।
शिवस्थानं श्मशानं स्यात् श्मशानं कुलजं गृहं ।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ।।
श्मशाने नागते नार्चेत् अवश्यं पशुवद्भवेत् ।
तन्मन्त्रं पूजितं येन सर्वमन्त्रं प्रपूजितम् ।।
तत्र सञ्जप्य देवेशि निर्वाणपदवीं व्रजेत् ।
मातृमुखे पितृ दत्त्वा जपेत् कालीं सनातनीं ।।
सर्वपापविनिर्मुक्तो निर्वाणपदवीं व्रजेत् ।
परस्मिन् गुप्तवेश्या वाप्यथवा कुलीना भवेत् ।।
शुक्रोत्सारणकालं तु निर्वाणं विद्धि पार्वति ।
तत्कालस्तु महाकालः फलमार्गप्रवेशिनां ।।
शुक्रोत्सारणकालं तु कायेन मनसापि वा ।
अङ्गभङ्गक्रमेणैव कुलीनाय प्रकाशयेत् ।।
शुक्रोत्सारणकालस्य ज्ञापनात् कालिका स्वयं ।
जपाङ्गे कालिका देवी महाकालं विमोहयेत् ।।
कुलीना ब्रह्मवेश्या चेन्नाल्पस्य तपसः फलं ।
बहुना जन्मनामन्ते ब्रह्मवेश्या प्रजायते ।।
त्वत्समा प्रकृतिः काचिद् यदस्ति भूमिमण्डले ।
न तथा त्वत्समो शक्तिस्त्रिषु लोकेषु गीयते ।।
सा चैव दक्षिणा काली मदनातुरविह्वला ।
वेदेभ्यो जायते कर्म कर्मणा बन्धनं भवेत् ।।

www.44Books.com

वैदिकं कर्म सन्त्यज्य सुरतेषु सदा जपेत् ।
आगमोक्तपतिः शम्भुरागमोक्तः पतिर्गुरुः ।।
स्वपतिः कुलजायाश्च न पतिश्च विवाहितः ।
विवाहितपतित्यागे दूषणं न कुलार्चने ।।
विवाहितं पतिं नैव त्यजेद्वेदोक्तकर्मणि ।
आगमोक्तपतिस्त्राता आगमोक्तपतिः शिवः ।।
सिद्धविद्या न सिध्यन्ति आगमोक्तपतिं बिना ।
आगमोक्तपतिर्देवि योषितां मोक्षदायकः ।।
कालीं नैव यजेद् योषिदागमोक्तपतिं विना ।
कुलजा गुरवे देवि पतित्वेणं वरंचरेत् ।।
तदा सा गुप्तवेश्या स्यात् कुलजा च पतिं विना ।
गुप्तवेश्या भवेत् सैव कुलमार्गप्रवर्तिता ।।
कुलमार्गप्रसक्ताया सा मुक्ता नात्र संशयः ।
कुलजा गुरवे देवि यदि न स्यात् पतीच्छुका ।।
तस्याः शिवो महाकालः सत्यं सत्यं न संशयः ।
षोडशाब्दा यदा सा स्यात् कालीविक्रमतत्परा ।।
तारा पञ्चदशाब्दा चेत् चतुर्दशाब्दा च सुन्दरी ।
त्रयोदशी चोन्मुखी सा द्वादशाब्दा च भैरवी ।।
एकादशगुणोपेता ब्रह्मवेश्या कुलेश्वरि ।
महासाध्वी समाख्याता त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ।।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले या यास्तिष्ठन्ति चांगनाः ।
सर्वासामपि भर्ता च दिव्यो वीरश्च साधकः ।।
योगी दिव्यो यदा वीरः सर्वनारीपतिर्भवेत् ।
दिव्योपि वीरभावेन सर्वजात्युद्भवां यजेत् ।।
गुप्तवेश्या महावेश्या अयोध्या मथुरा प्रिये ।
माया च कुलवेश्या स्यात् महोदया च कालिका ।।

www.44Books.com

राजवेश्या देववेश्या द्वारका परिकीर्तिता ।
काञ्ची च राजवेश्या स्याद् देववेश्या अवन्तिका ।।
द्वारावती ब्रह्मवेश्या सप्तैता मोक्षदायिका ।
कुलीना भगवती साक्षात् काली तारा सरस्वती ।।
कुलीना भैरवी राधा कुलीना छिन्नमस्तका ।
कुलीना सुन्दरी देवि कुलीना महिषमर्दिनी ।।
कुलीना भुवना बाला कुलीना बगलामुखी ।
धूमावती कुलीना च मातंगी कुलीना प्रिये ।।
कुलीना चान्नपूर्णा च त्रिपुटा त्वरिता तथा ।
पतिव्रता कुलीना च सती साध्वी महोदया ।।
कुलीना मन्त्रतन्त्राणां सिद्धिदा नात्र संशयः ।
कुलजा देवकन्या च कुलीना योगिनीगणाः ।।
रम्भोर्वशी रतीरामा तिलोत्तमा कुलसुन्दरी ।
एताः सर्वाः पृथग् वेश्या विहरन्ति कुलात्मजाः ।।
कुलजाः कुलवेश्या याः कुलधर्मपरायणाः ।
पशुभर्त्राश्रिता लोकाः कामकौतुकलालसाः ।।
कुलवर्त्मक्रमेणैव सदैव रमणोत्सुका ।
विदग्धा वीरभावेन वीरगोपनतत्परा ।।
विहितान्यां हीनजातां पूजयेदथवा यतः ।
ब्रह्मचारी गृहस्थोपि विहितान्यां न चार्चयेत् ।।
अर्चयेत् सिद्धिहानिः स्याद् दुःखं तस्य पदे पदे ।
हीनजां विहितां वेश्यां मनसा च प्रपूजयेत् ।।
तद्योगं चिन्तयेद्धीमान् शतमष्टोत्तरं जपेत् ।
जप्त्वा प्रणम्य देवेशि भक्षद्रव्यं निवेदयेत् ।।
कामाद्वा मोहतो वापि हीनजां यदि चेच्छति ।
रौरवं नरकं याति हीनजासंगमेन च ।।

www.44Books.com

हीनजासंगमं देवि मनसा न स्मरेत् कलौ ।
कुलकर्मप्रवृत्ता या सा मुक्ता नात्र संशयः ।।
कुलजा कुलवेश्या च बीजमेकं समाश्रयेत् ।
सन्त्यज्य पशुभर्तारं कुलमार्गे प्रवेशयेत् ।।
कुलमार्गं समाश्रित्य वीरमेकं समाश्रयेत् ।
कुलमार्गप्रवृत्ता चेत् पतिहीना भवेद्यदि ।।
कुलजा वा कुलीना वा परजन्मनि जायते ।
कुलधर्मरता शस्ता कुलधर्मोत्सुका तथा ।।
पूजार्हा सा महेशानि पतिहीना प्रपूजयेत् ।
लोकाचारक्रमेणैव पूजार्हा लंघिता यदि ।।
तां विहाय कुलेशानि कुलजां च प्रपूजयेत् ।
गंगास्मरणमात्रेण यथा पापक्षयो भवेत् ।।
कुलजा च कुलीनाय मन्त्रतन्त्रफलप्रदा ।
महावेश्या भवेत् सैव सर्ववेश्या फलप्रदा ।।
यासां च सर्वविद्यानां प्रशस्ता या कुलार्चने ।
सैव शक्तिविशेषेण सर्ववेश्याः प्रकीर्तिताः ।।
कुलीन-दर्शनेनैव सर्वपापक्षयो भवेत् ।
कुलजानां पुरश्चर्या कुलीनावत् कुलेश्वरि ।।
सर्ववेश्या हीनजा च सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
अनेकजन्मनामान्ते कुलधर्मः प्रवर्तते ।।
कुलधर्मं विना देवि न च मोक्षः प्रजायते ।
कुलपूजां विना देवि सुन्दरी नैव सिध्यति ।।
कुलपूजां विना देवि पञ्चमी नहि सिध्यति ।
कुलपूजां विना नैव भैरवी न च सिध्यति ।।
कुलपूजां बिना देवि छिन्नमस्ता न सिध्यति ।
कुलपूजां विना देवि कालीकुलं न सिध्यति ।।

www.44Books.com

कुलपूजां विना देवि तत्त्वज्ञानं न जायते ।
तत्वज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते ।।
निर्वाणं श्रेयसं प्राप्य मम योगं प्रजायते ।
निर्वाणं श्रेयसं चापि मूलं च कुलमन्दिरं ।।
पञ्चमैः पूजयेत् कालीं कुलीनं कुलमन्दिरे ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।।
इन्द्रादि दशदिक्पाला आदित्यादिनवग्रहाः ।
असितांगादयो ये ये भैरवाश्च सुरादयः ।।
कुलपूजाकृताः सर्वे कृतार्थाः कुलीनागृहे ।
शक्तिं बिना महेशानि शक्तिमन्त्रो न सिध्यति ।।
सर्वेषां शक्तिमन्त्राणां शक्तिः सिद्धि प्रदायिनी ।
नटी कापालिका वेश्या रजकी नापितांगना ।।
योगिनी श्वपची शौण्डी भूमीन्द्रतनया तथा ।
गोपिनी मालिका रम्या आसां कार्यविभेदतः ।।
चतुर्वर्णोद्भवा रम्या कापाली सा प्रकीर्तिता ।
पूजा द्रव्यं समालोक्य नृत्यगीत परायणा ।।
चतुवर्णोद्भवा रम्या सा नटी परिकीर्तिता ।
पूजा द्रव्यं समालोक्य वेश्या रमणमिच्छता ।।
चतुर्वर्णोद्भवा रम्या सा वेश्या परिकीर्तिता ।
पूजाद्रव्यं समालोक्य रजोऽवस्थां प्रकाशयेत् ।।
सर्ववर्णोद्भवा रम्या रजकी सा प्रकीर्तिता ।
पूजाद्रव्यं समालोक्य कुलजा वीरमाश्रयेत् ।।
सन्त्यज्य पशुभर्तारं कर्मचाण्डालिनी स्मृता ।
शिवशक्तिसमायोगा योगिनी सा व्यवस्थिता ।।
विपरीतरता पत्यौ पात्रं या परिपृच्छति ।
सर्ववर्णोद्भवा रम्या सा शौण्डी परिकीर्तिता ।।

www.44Books.com

सर्वदा यन्त्रसंस्कारो यस्याश्च परिजायते ।
सैव भूमीन्द्रजा रम्या सर्ववर्णोद्भवा प्रिये ॥
अथान्यं गोपयेद् यस्तु सर्वदा पशुसङ्कटे ।
सर्ववर्णोद्भवा रम्या गोपिनी सा प्रकीर्तिता ॥
पूजाद्रव्यं समालोक्य या मनौ परिकीर्तिता ।
सर्ववर्णोद्भवा रम्या मालिनी सा प्रकीर्तिता ॥
शक्त्यभावे महेशानि यासां च काञ्चिदाहरेत् ।
संशोध्य पञ्चमं तत्त्वं तर्पयेत् कुलसुन्दरि ॥
अंगुष्ठानामिकायोगाद् वामहस्तस्य पार्वति ।
तर्पयेत् कालिकां वीरः सायुधां परिवाहनां ॥
अंगुष्ठो भैरवो देवः अनामा शक्तिरुच्यते ।
शिवशक्तिसमायोगात्तर्पयेद्देवि दक्षिणां ॥
तर्पणं त्रिविधं देवि श्रेष्ठं मध्यं कनीयसं ।
श्रेष्ठं च दिव्यभावस्य वीरभावस्य मध्यमं ॥
कनीयांसं पशूनां च हृदि यन्त्रे जले क्रमात् ॥

॥ इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे चतुर्दशः पटलः ॥

पञ्चदश पटलः

श्री देव्युवाच :

देवदेव महादेव कुलमार्गप्रकाशकः ।
पञ्चमं कीदृशं द्रव्यं तेषां शुद्धिस्तु कीदृशी ॥
तत्प्रकाशय सम्यङ् मे मयि नाथ कृपां कुरु ।

www.44Books.com

श्रीशिव उवाच :

मद्यं मांसं तथा मीनं मुद्रा मैथुनपञ्चमं ।
एषां शुद्धि प्रवक्ष्यामि मन्त्रकोषक्रमेण च ।।
निशीथे मुक्तकेशश्च सुकुलं वामभागतः ।
संस्थाप्य न्यासजालंच तद्गात्रे विन्यसेत् क्रमात् ।।

स्वगात्रे च ततो न्यस्य न्यासजालक्रमेण च ।
भूतशुद्धिर्विधेया च वर्णन्यासं ततश्चरेत् ।।
अङ्गन्यासकरन्यासौ लिपिन्यासं तु तत्परं ।
ततोऽन्तर्मातृकां कृत्वा मातृकान्यासमाचरेत् ।।

प्राणायामं ततः कृत्वा ऋषिन्यासं ततः परं ।
पीठन्यासं व्यापकं च कालीकुलस्य पूजने ।।
क्रमभङ्गो भवेन्नैव भङ्गेच्च विफलं ध्रुवं ।
जपपूजादिकं कर्म सर्वं निष्फलतामियात् ।।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन क्रमभंगं न कारयेत् ।
जीवन्यासं व्यापकादौ विद्याराज्ञीं प्रपूजयेत् ।।
षोढान्यासं नीलकण्ठं कामं च परिकीर्तितं ।
ततो ध्यात्वा महाकालीं मानसैः परिपूजयेत् ।।

ततश्च पञ्चमं शुद्धं विशेषार्घ्यं ततः परं ।
ततः कुलं च सम्पूज्य पञ्चानां शुद्धिमाचरेत् ।।

स्ववामे विन्दुषट्कोणं वृत्तं च चतुरस्रकं ।
चतुर्द्वारं च संलिख्य सामान्यार्घ्योदकेन च ।।
अभ्युक्षणं ततः स्थानं तत्र देवीं विचिन्तयेत् ।
नमः इति क्षालिताधारयन्त्रं संस्थाप्य पूजयेत् ।।
वह्नेर्दशकलां तत्र पूजयेद्विधिपूर्वकम् ।
आद्यष्टदेव्यः सम्पूज्याः तथा धूम्रार्चिका कलाः ।।

www.44Books.com

पूर्वं त्रिपदिकामिष्ट्वा गन्धपुष्पेण पूजयेत् ।
अष्टदिक्षु च सूर्यस्य पूजयेत् द्वादशीं कलां ।।
ततश्च रक्तवस्त्रेण वेष्टयेद् घटमुत्तमं ।
घटं सम्पूजयेद्देवि हेतुना मूलमुच्चरन् ।।
ॐ अमृतादिकसोमस्य कलास्तत्रैव पूजयेत् ।
तत्रापि पञ्चमुद्राभिः प्रणम्य तु कुलेश्वरि ।।
नितम्बसवशाकारैर्नमो करतलद्वयं ।
ह्री नमः इति नमस्कुर्यात् चतुरस्रा तु सा स्मृता ।।
पुटाकारं करं बध्वा मुष्टिबद्धं च भूतले ।
विधाय च नमस्कुर्यात् ह्रीं नमः संवृताःस्मृताः ।।
कृत्वा पुटाञ्जलिं भूमौ क्लीं नमः प्रणमेत् प्रिये ।
कथिता सम्पुटा मुद्रा श्रृणु देवि पुटाञ्जलिं ।।
वृद्धाकनिष्ठयोर्मूले निःक्षिप्य च पुटाञ्जलिं ।
कृत्वा च हूं नमो भूमौ प्रणमेत सा पुटाञ्जलिः ।।
सः नमो योनिमुद्रायाः पञ्चमुद्राः प्रकीर्तिताः ।
ततः कुम्भसमीपे तु चन्दनेन च संलिखेत् ।।
त्रिकोणवृत्तभूबिम्बं सर्वं पथिकाय च ।
पूजयित्वा बलिं तत्र निधाय परमेश्वरि ।।
मायात्रिसर्वपथिकाभ्यो कुर्याच्च नमः प्रिये ।
बलिमुत्सृज्य देवेशि तत्त्वमुद्राक्रमेण च ।।
वामहस्तेन तत्त्वस्य मुद्रां बध्वा महेश्वरि ।
त्रिपरिभ्राम्य मूलेन द्रव्योपरि कुलेश्वरि ।।
देवतापश्चिमे भागे स्थापयेत्तत् कुलेश्वरि ।
एवं सुधूपितं कृत्वा पञ्चीकरणमाचरेत् ।।
द्रव्यं दर्भैश्चास्त्रमन्त्रैः सन्ताड्य परमेश्वरि ।
हमिति वामहस्तेन मुष्टिं कृत्वा कुलेश्वरि ।।

www.44Books.com

अधोमुख्या च तर्जन्या वेष्टयेत्त्रिः कुलेश्वरि ।
मूलेन वीक्षणं देवि अस्त्रेणाभ्युक्षणं चरेत् ।।
त्रिसुगन्धश्च मूलेन गृह्णीयात् परमेश्वरि ।
पञ्चीकरणमित्युक्तं क्रमशो विद्धि पार्वति ।।
कुम्भे पुष्पं ततो दत्वा प्रणवेन कुलेश्वरि ।
त्रिकोणं तत्र संलिख्य तन्मध्ये च ह्सौः प्रिये ।।
ह्सौः ह्सौः नमोऽन्तेन त्रिश्च तत्र प्रपूजयेत् ।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य वरुणं तदनन्तरं ।।
वामदेवं ततो ङेन्तं वौषट् मन्त्रेण पूजयेत् ।
सम्पूज्य वामदेवं च पशुपतिं ततो यजेत् ।।
प्रणवं कूर्चबीजं च ङेन्तं पशुपतिः ततः ।
कूर्चयुग्ममस्त्रवीजमन्त्रेण पशुपतिं यजेत् ।।
मायावीजं समुच्चार्य कालीबीजं ततः परं ।
ततः परं पदं देवि स्वामिनि च ततः परं ।।
पराकोषगता देवी शून्यवाहिनि तः परं ।
चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणी पात्रं च तदनन्तरं ।।
विषयुग्मं वह्निजाया दशधा संजपेत् प्रिये ।
वाग्भवं भुवना लक्ष्मीः आनन्देश्वरङेन्तकं ।।
विद्महे च ततो देवि धीमहीति तदन्तरं ।
इति गायत्रिं त्रिर्जप्त्वा ऋक्त्रयं च जपेदिति ।।
ॐ रां रीं रूं समुद्धृत्य रैं गैं क्रौं क्रौं क्रस्ततः परं ।
ततः स्वधा कृष्णशापं मोचयद्वय ततः परं ।।
अमृतं स्रावयद्वन्द्वं वह्निजाया कुलेश्वरि ।
इति द्वादशधा जप्त्वा मन्त्राण्येतानि त्रिर्जपेत् ।।
ॐ एक एव परं ब्रह्म स्थूल सूक्ष्ममयं ध्रुवं ।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यऽहं ।।

www.44Books.com

ॐ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे ।
अमावीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यते ।।
ॐ देवानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन मे देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु ।।
इति मन्त्रत्रयेणैव त्रिधा समभिमन्त्र्य च ।
ह्लीं श्रीं श्रूं श्रीं कारेति शोभिनि च ततः परं ।।
ततो विकारणस्येति हरस्वर वह्निवल्लभा ।
इति त्रयं जप्त्वा द्रीं श्रीं ऐं च ततः परं ।।
इति प्रकाशिनीं त्रिश्च जप्त्वा तिरस्करणीं जपेत् ।
ह्रीं क्लीं ऐं श्रौं समुद्धृत्य तिरस्करणी ततः परं ।।
सकलजनवाग्वादिनि ततः सकलपशुव्रते ।
जनमनश्चक्षुस्ततो देवि श्रोत्रजिह्वा ततः परं ।।
प्राणोक्तितिरस्करणं कुरुयुग्मं ततः परं ।।
"नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयान्ति,
नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनाढ्या ।
निद्रापटेन भुवनानि तिरोदधाना,
खड्गं भुजैर्भगवती परिपातु भक्तान् ।।"
इति ध्यात्वा कुलेशानि इमं मन्त्रं त्रिधा जपेत् ।।
ठः ठः वह्निवधूर्देवि द्रव्योपरि त्रिधा जपेत् ।
पवमानः परानन्दः परिमाणः परो रसः ।।
पवमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहं ।
पावमानं च त्रिर्जप्त्वा वायुबीजेन शोधयेत् ।।
रमिति वह्नि बीजेन सन्दह्य प्रणमेदिति ।
काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी ।।
भैरवी छिन्नमस्ताय विद्या धूमावती तथा ।
बगला सिद्ध विद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।।

www.44Books.com

एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः ।
काली तारा तथा छिन्ना मातङ्गी भुवनेश्वरी ।।
अन्नपूर्णा तथा नित्या दुर्गा महिष मर्दिनी ।
त्वरिता त्रिपुरा पुटा भैरवी बगला तथा ।।
धूमावती तथा ज्ञेया कमला च सरस्वती ।
जय दुर्गा तथा भद्रे तथा त्रिपुर सुन्दरी ।।
अष्टादश महाविद्या तन्त्रादौ कथिताः प्रिये ।
नाम काल विशुद्धिःस्यात् समया समयादिकं ।।
न वारतिथि नक्षत्रं न योग करणं तथा ।
सिद्धविद्या महाविद्या युगसेवा प्रकीर्तिताः ।।

।। इति श्री निरुत्तरतन्त्रे शिवपार्वती संवादे पञ्चदशः पटलः ।।

www.44Books.com

धूमावती तन्त्र

www.44Books.com

७ | धूमावती-तत्व

भगवती 'धूमावती' साप्तमी विद्या हैं। ये शत्रुओं का नाश करने वाली महाशक्ति तथा दुःखों की निवृत्ति करने वाली महाविद्या हैं। ये धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—चतुर्वर्ग प्रदान करती हैं। इनकी उपासना करने वाला व्यक्ति कभी शत्रु से पराजित नहीं होता। ये शत्रु का सर्वनाश तक कर देती हैं। इन्हें दारिद्रय की देवी माना गया है इसी कारण इन्हें 'अलक्षी' भी कहा जाता है। ये वैषव्यजीवन व्यतीत करती हैं। इनकी उपासना मुख्यतः चातुर्मास्य में की जाती है।

ये 'दारुण विद्या' हैं। पुरुष-शून्य होने के कारण इनका कोई 'शिव' नहीं हैं।

संसार में दुःख के मूल कारण—(१) रुद्र, (२) यम, (३) वरुण तथा (४) निर्ऋति—ये चार देवता हैं। विविध प्रकार के ज्वर, महामारी, उन्माद आदि आग्नेय (सन्ताप) सम्बन्धी-रोग 'रुद्र' की कृपा से होते हैं। मूर्च्छा, मृत्यु, अङ्ग-भङ्ग आदि रोग 'यम' की कृपा के फल हैं। गठिया, शूल, गृध्रसी, पक्षाघात आदि के अधिष्ठाता वरुण हैं तथा सब रोगों में भयंकर शोक, कलह, दारिद्रय आदि की सञ्चालिका निर्ऋति हैं। त्रिक्षुक, क्षत-विक्षता पृथिवी, ऊसर-भूमि, भग्न-प्रासाद, फटे एवं जीर्णवस्त्र, बुभुक्षा, प्यास, रुदन, वैधव्य, पुत्र-सन्ताप, कलह आदि उसी के साक्षात् प्रतिरूप हैं। इन सबका मूल मुख्यतः दारिद्रय ही है। इसी कारण श्रुति ने निर्ऋति को 'दरिद्रा' नाम से व्यवहृत किया है। यथा—"**घोरा पाप्मा वै निर्ऋतिः**" (शत० ७।२।१।१)।

इसी दरिद्रता के शमन हेतु 'निर्ऋति' 'इष्ट' की जाती है। यों तो यह शक्ति सर्वत्र व्याप्त है, परन्तु इसका भाण्डागार कोष 'ज्येष्ठा' नक्षत्र है। वहीं से

www.44Books.com

इस 'आसुरी कलह प्रिया' शक्ति का आविर्भाव होता है। इसी कारण 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में उत्पन्न प्राणी आजीवन दारिद्रय-दुःख का भोग करता है। यही शक्ति हमारी साक्षात् 'धूमावती' है। इसमें चूंकि मनुष्य का पतन है, अतः इसे 'अव-रोहिणी' भी कहा जाता है। यही 'अलक्ष्मी' नाम से प्रसिद्ध है।

डरावनी शक्ल, चौड़े दाँत तथा रूक्षता आदि इसी की कृपा के फल हैं। इस शक्ति का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं—

"विवर्णा चञ्चला, दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला वै सा विधवा विरलद्विजा ।।
काकध्वजरथारूढा त्रिलम्बित पयोधरा।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरानना ।।
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्यं त्रयदा कलहास्पदा ।।"

(शाक्तप्रमोद—धूमावतीतन्त्र)

उक्त ध्यान से हो धूमावती के स्वरूप का तात्पर्य स्पष्ट है।

आप्य-प्राण को 'असुर' कहते हैं। आग्नेय एवं ऐन्द्रप्राण 'देवता' नाम से प्रसिद्ध है। आषाढ़ शुक्ला एकादशी से वर्षाकाल का प्रारम्भ माना जाता है एवं कार्तिक शुक्ला एकादशी वर्षा की परम अवधि मानी जाती है। इन चार महीनों में पृथिवी पिण्ड तथा सौरप्राण 'आपोमय' (जलमय) रहते हैं, अतः चातुर्मास्य में दोनों ही प्राण-देवता असुर-आप्यप्राण की प्रधानता से निर्बल हो जाते हैं, इनकी शक्ति दब जाती है। इसी कारण चातुर्मास्य के देवताओं का 'सुषुप्ति-काल' कहा जाता है। इतने दिनों तक आसुर-प्राण का साम्राज्य रहता है, इसीलिए दिव्य-प्राण की उपासना करने वाला भारतीय सनातन धर्मी-जगत् इस अवधि में विवाह, यज्ञोपवीत, तीर्थ-यात्रा आदि कोई 'दिव्य कार्य' नहीं करता। इसी चातु-र्मास्य में निर्ऋति का साम्राज्य रहता है। कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी इसकी अन्तिम अवधि है, अतः धर्माचार्यों ने इस तिथि को 'नरक चतुर्दशी' के नाम से व्यवहृत किया है। इसी रात्रि को दरिद्रारूपा अलक्ष्मी का आगमन होता है तथा दूसरे ही दिन रोहिणी रूपा कमला (लक्ष्मी) का शुभागमन होता है।

कार्तिक कृष्णा अमावास्या को 'कन्या राशि' का सूर्य रहता है। कन्या राशि गत सूर्य 'नीच' का कहलाता है। इस दिन सौर प्राण मलिन रहता है तथा

www.44Books.com

रात्रि में तो यह भी नहीं रहता। उधर अमावास्या के कारण चान्द्र-ज्योति का भी अभाव रहता है तथा चारमास की वर्षा से प्रकृति की प्राणमयी अग्नि ज्योति भी निर्बल हो रही होती है। "**त्रीणि ज्योतीषि सचते स षोडशी**'—के अनुसार इस अमावास्या को तीनों ही ज्योतियों का अभाव होता है, अतः ज्योतिर्मय-आत्मा इस दिन हीनवीर्य रहता है। इसी तमभाव के निराकरण हेतु तथा साथ ही कमला-आगमन के उपलक्ष्य में ऋषियों ने इस दिन दीपोत्सवी मनाने (दीपक जलाने) तथा अग्निक्रीड़ा करने (आतिशबाजी छुड़ाने) का आदेश दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि धूमावती प्रधान रूप से चातुर्मास्य में रहती है। अस्तु, लक्ष्मी-अभिलाषी मनुष्यों को निरन्तर इसकी स्तुति करते रहना चाहिए।

www.44Books.com

२ | धूमावती-मन्त्र प्रयोग

भगवती धूमावती का अष्टाक्षर मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र :

"धूं धूं धूमावती स्वाहा ।"

इसका विनियोग निम्नानुसार है—

विनियोग :

अस्य धमावती मन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषि निवृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।"

इसके बाद निम्नानुसार 'न्यास' करें—

ऋष्यादि न्यास :

ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि ।
निवृच्छन्द से नमः मुखे ।
ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ।
धूं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।
धूमावती कीलकाय नमः नाभौ ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

www.44Books.com

करन्यास :

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

हृदयादिषडङ्गन्यास :

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः ।
ॐ धूं शिरसे स्वाहा ।
ॐ मां शिखायै वषट् ।
ॐ वं कवचाय हुं ।
ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट ।
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

(इति हृदयादि षडंग न्यासः)

न्यासोपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान

"अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना,
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चञ्चला ।
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरुक्षाप्रभा,
ध्येया मुक्तकचा सदप्रिय कलिर्धूमावतीमन्त्रिणा ॥"

पीठ-पूजा

उक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद पीठादि पर बनाये गये सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि से लेकर परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को समर्पित कर—

"ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः ।"

www.44Books.com

इस मन्त्र द्वारा पीठ-देवताओं की पूजा करके नव-पीठ शक्तियों की निम्न-लिखित मन्त्रों से पूजा करें।

पूर्वादि आठ दिशाओं में क्रमशः—

ॐ कामदायै नमः।

ॐ मानदायै नमः।

ॐ नक्तायै नमः।

ॐ मधुरायै नमः।

ॐ मधुराननायै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः।

ॐ भोगदायै नमः।

ॐ नन्दायै नमः।

मध्ये—

ॐ प्राणदायै नमः।

उक्त मन्त्रों से पीठ-शक्तियों की पूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र तथा मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर, घृत द्वारा उसका अभ्यङ्ग करके तथा दूध एवं जल द्वारा स्नान कराके, स्वच्छ वस्त्र से पौंछ कर,

"ॐ धूमावती योगपीठाय नमः।"

इस मन्त्र से पुष्प आदि का आसन देकर पीठ के मध्य में प्रतिष्ठित करके पुनः ध्यानः कर मूल-मन्त्र द्वारा मूर्ति की कल्पना करके पाद्य आदि से पुष्प-दान पर्यन्त उपचारों द्वारा पूजा करके, देवी से आज्ञा लेकर आवरण-पूजा करें। देवी से आज्ञा प्राप्त करने हेतु हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

"ॐ सविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे॥"

यह पढ़कर पुष्पांजलि दें। फिर षट्कोण केसरों में आग्नेय आदि चारों दिशाओं तथा मध्य दिशाओं में षडङ्ग का निम्नानुसार पूजन करें।

पूजा-यन्त्र

'धूमावती पूजन यन्त्र' का स्वरूप आगे प्रदर्शित है—

www.44Books.com
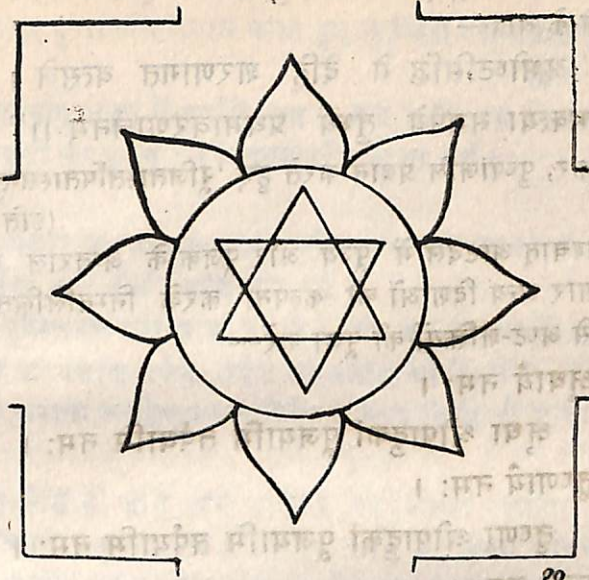
(धूमावती-पूजन यन्त्र)

षडङ्ग-पूजा

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः ।

हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ धूं शिरसे स्वाहा ।

शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मां शिखायै वषट् ।

शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वं नमः कवचाय हुं ।

कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

नेत्र त्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

www.44Books.com

उक्त विधि से षडङ्ग-पूजा करके, पुष्पांजलि हाथ में लेकर मूल-मन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।"

यह पढ़कर, पुष्पांजलि प्रदान करते हुए 'पूजितास्तर्पितास्सन्तु' कहें।

(इति प्रथमावरण:)

इसके पश्चात् अष्टदल में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा पूर्वादि के क्रम से अष्ट-शक्तियों की पूजा करें—

ॐ क्षुधायै नमः।
क्षुधा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ तृष्णायै नमः।
तृष्णा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ रत्यै नमः।
रति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ निद्रायै नमः।
निद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ निर्ऋत्यै नमः।
निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ दुर्गत्यै नमः।
दुर्गति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ रुषायै नमः।
रुषा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ अक्षमायै नमः।
अक्षमा श्रीपादुकां पजयामि तर्पयामि नमः।

उक्त विधि से आठ शक्तियों की पूजा कर, हाथ में पुष्पांजलि ले मूलमन्त्र का उच्चारण करने के बाद—

"अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।"

www.44Books.com

यह पढ़कर पुष्पांजलि प्रदान करते हुए 'पूजिता स्तर्पितास्सन्तु' कहें।

(इति द्वितीयावरण:)

इसके पश्चात् भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा उनके वज्र आदि आयुधों का पूजन करके पुष्पांजलि प्रदान करें।

पुरश्चरण

पूर्वोक्त प्रकार से आवरण-पूजा करके धूपदान से नमस्कार तक पूजा कर, श्मशान में सर्वथा नग्न होकर मन्त्र-जप करें।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश तिलमिश्रित घृत से होम तथा होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्धि हो जाता है।

काम्य-प्रयोग

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को करना चाहिए। ध्यानोपरान्त श्मशान में पहुँचकर एकदम नग्न हो, केवल रात्रि के समय भोजन करने वाला साधक जप के दशांश संख्यानुसार तिल से होम करें। इस प्रकार ज्येष्ठा की पूजा करने के बाद जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब निम्नानुसार काम्य प्रयोग करने चाहिए—

१—कृष्ण चतुर्दशी के दिन उपवास करके सिर के बाल खुले रखकर तथा नग्न (निर्वस्त्र) होकर शून्य घर में, श्मशान में, वन में अथवा गुफा में, गड्डे में अथवा पर्वत पर शव के ऊपर बैठकर देवी का ध्यान करते हुए एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करें तत्पश्चात् राई में नमक मिलाकर होम करें। इससे साधक के शत्रु शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

२—'फेत्कारिणी तन्त्र' के अनुसार साधक हड्डी के ऊपर मन्त्र लिखकर, उसमें शिवलिङ्ग स्थापित कर मन्त्र-जप करें। शिव को 'अवष्टभ्य' करके शत्रु के नाम से मन्त्र-जप करना चाहिए।

३—इस मन्त्र का ५०० की संख्या में जप करने से शत्रु ज्वर-पीड़ित होता है। ज्वर की शान्ति पञ्चगव्य अथवा जल से होती है।

४—मन्त्र में शत्रु का नाम लेते हुए, वन में आधीरात के समय एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करने से साधक के मन में उत्साह उत्पन्न होता है। फिर श्मशान की अग्नि में कौए को जलाकर अभिमंत्रित करें तथा उसकी भस्म को लेकर शत्रु के सिर पर फेंकें तो तत्काल उच्चाटन होता है।

५—कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म द्वारा शिवलिङ्ग निर्मित कर, उसके ऊपर शत्रु के नाम से युक्त न्यास करके, उसकी पूजा करें। इससे स्वप्न में भैंसे का रूप धारण करके, मन्त्र शत्रु का विनाश कर देता है।

www.44Books.com

६—इस मन्त्र द्वारा अभिमंत्रित भस्म को शत्रु के घर में गाढ़ देने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

७—श्मशान की भस्म से शिवलिङ्ग निर्मित कर, मन से कर्म-चिन्तन करता हुआ, 'हे भगवन् !' इस प्रकार निवेदन करके पुष्पादि से पूजन करें तो शत्रु परास्त होता है।

८—नीम की पत्ती तथा कौए के पंख एकत्र कर १०८ की संख्या में मन्त्र-जप करें। फिर देवता के नाम से धूप दें तो शत्रुओं में परस्पर विद्वेष हो जाता है। इसकी शान्ति चिता की लकड़ी की अग्नि में दूध का होम करने से होती है।

९—स्त्री-रज का धूप प्रदान करने से कालिका गृधृ के रूप में आकर शत्रु को मारती है। इसकी शान्ति निर्माल्य से होती है।

१०—वाराहकर्ण जड़ी की धूप देकर १००८ बार मन्त्र जप करने से भगवती शूकर का स्वरूप धारण कर शत्रु को मार डालती है। इसकी शान्ति पीपल के पत्तों की धूप से होती है।

पञ्च गव्य, दूध अथवा मधुरत्रय से सभी प्रकार की शान्ति हो जाती है।

धूमावती गायत्री

मन्त्र

"ॐ धमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्।"

षडङ्गन्यास

उक्त मन्त्र का 'षडङ्गन्यास' निम्नानुसार है—

ॐ धूमावत्यै च हृदयाय नमः।

ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा।

ॐ संहारिण्यै च शिखायै वषट्।

ॐ धीमहि कवचाय हुम्।

ॐ तन्नो धूमा नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

इसी प्रकार का न्यास भी करना चाहिए।

www.44Books.com

३ | धूमावती मन्त्र-प्रयोग--(२)

अब 'फेत्कारिणी-तन्त्र' तथा अन्य तन्त्रों के मतानुसार धूमावती मन्त्र की सामान्य प्रयोग विधि का वर्णन किया जाता है—

मन्त्र

"धूं धूं धूमावती स्वाहा ।"

[**टिप्पणी**—तन्त्रान्तर में यह मन्त्र इस प्रकार है—

"धूं धूं धूमावती ठः ठः ।"]

विनियोग :

"अस्य धूमावती मन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः धूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं शत्रुहननेपि जपे विनियोगः ।"

प्रातःकृत्यादि करने के बाद भूतशुद्धि एवं प्राणायाम करके निम्नानुसार 'न्यास' करें—

ऋष्यादि न्यास :

पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि ।

निवृच्छन्दसे नमः मुखे ।

धूमावत्यै देवतायै नमः हृदि ।

कराङ्गन्यास :

धां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

धीं तर्जनीभ्यां नमः ।

धूं मध्यमाभ्यां नमः ।

www.44Books.com

धैं अनामिकाभ्यां नमः ।
धौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
धः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्गन्यास :

धां हृदयाय नमः ।
धीं शिरसे स्वाहा ।
धूं शिखायै वषट् ।
धैं कवचाय हूं ।
धौं नेत्र त्रयाय वौषट् ।
धः अस्त्राय फट् ।

इसके पश्चात् निम्नानुसार 'ध्यान' करें—

ध्यान :

"विवर्णा चञ्चला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विवर्ण कुण्डला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।।
काकध्वज रथारूढा विलम्बित पयोधरा ।
शूर्प हस्तातिरूक्षासी धूतहस्ता वरान्विता ।।
प्रवृद्ध घोणा तु नृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत् पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया ।।"

भावार्थ—"भगवती धूमावती विवर्णा, चञ्चला, रुष्टा (क्रोधी), विशाल-काय तथा मलिन वस्त्रों को धारण करने वाली हैं। उनके केश विबर्ण तथा रूखे हैं। दाँत विरल हैं तथा स्तन लटके हुए हैं। वे विधवा रूप धारिणी हैं तथा कौए की पताका युक्त रथ पर बैठी हुई हैं। उनकी आँखें अत्यन्त रुक्ष हैं तथा हाथ काँपते रहते हैं। उनके एक हाथ में शूर्प (सूप) तथा दूसरे में वर-मुद्रा है। उनकी नाक बहुत लम्बी है तथा स्वभाव एवं दृष्टि में कुटिलता है। भूख-प्यास से व्याकुल, सदैव भयंकर रूप वाली एवं कलह-प्रिया हैं।"

उक्त प्रकार से ध्यान करके पूर्वोक्त विधि से पूजा करनी चाहिए।

www.44Books.com

पुरश्चरण :

पुरश्चरण हेतु कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से उपवास करके तथा किसी शून्य गृह, श्मशान अथवा वन-प्रदेश में दिन-रात मौन रहते हुए एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करें।

पुरश्चरण काल में उष्णीष तथा आर्द्रवस्त्र धारण करना आवश्यक है।

फिर शत्रु के नाम के ऊपर मूल-मन्त्र लिखकर, उसके ऊपर शिवलिङ्ग स्थापित कर, पूजन करके जप आरम्भ करें।

अन्यत्र लिखा है—'शिवलिङ्ग का निर्माण कर "**अमुकं** (यहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण कर) **मारय**" कहते हुए जप करना चाहिए। इस विधि से ५०० बार मन्त्र-जप करने से शत्रु ज्वर-ग्रस्त होता है। पञ्चगव्य अथवा दूध द्वारा होम करने पर ही उसका ज्वर छूट पाता है। इसके बाद पञ्चोपचारों से देवी की पूजा कर, जप करना चाहिए।

काम्य-प्रयोग :

१. हरिद्रा-पत्र (हल्दी के पत्ते) पर शत्रु का नाम लिखकर, उसे किसी वन के मध्य डालकर, उसके ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र का १०,००० की संख्या में जप करने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

२. श्मशान की अग्नि में कौऐ को दग्ध (जला) कर, उसकी भस्म को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, शत्रु के नाम का उच्चारण करते हुए आठों दिशाओं में फेंकने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

३. कृष्णपक्ष में श्मशान की भस्म से शिव-लिङ्ग बनाकर, उस पर शत्रु के नाम सहित उक्त मन्त्र लिखकर पूजा करें तथा भैंस के दूध द्वारा धूप देकर, जो पदार्थ शत्रु के अमङ्गल सूचक हैं, उन्हें प्रदान करते हुए पूजन करने से देवी महिषी का रूप धारण कर, साधक के शत्रु का शीघ्र ही विनाश कर देती है।

४. श्मशान-भस्म से शिव-लिङ्ग का निर्माण कर, पुष्पादि से उसका पूजन करे। फिर 'हे भगवन् !' इस प्रकार से उन्हें सम्बोधन कर मन-ही-मन कर्तव्य की चिन्ता करते हुए नीम के पत्ते तथा कौए के पंख को इकठ्ठा कर, उनके ऊपर १०८ बार मन्त्र का जप करें, फिर 'अमुकं द्वेषय द्वेषय' कह कर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए धूप प्रदान करें ('अमुकं के स्थान पर शत्रुओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए)। इस प्रयोग से शत्रु-वर्ग में परस्पर द्वेष उत्पन्न होता है। चिता-काष्ठ की अग्नि में दूध का हवन करने पर ही इस विद्वेष की शान्ति होती है।

५. वराह-कर्ण द्वारा धूप देने से देवी रात्रि के समय शूकर के रूप में आकर शत्रु कुल का नाश कर देती है।

www.44Books.com

६. अश्वस्थ पत्र (पीपल के पत्ते) की धूप देकर, पञ्चगव्य अथवा केवल दूध अथवा घृत-मधु एवं शर्करा मिश्रित 'त्रिमधु' द्वारा होम करने से सभी प्रकार के अभिचार-दोषों की शान्ति होती है।

७. यज्ञोडुम्बर आदि क्षीरि-वृक्ष की कील बनाकर, उसके ऊपर शत्रु के नाम सहित धूमावती का मन्त्र लिखें। फिर उस कील के ऊपर मूल-मन्त्र का जप करके, शत्रु के दोनों पाँवों को भूमि में कील द्वारा जड़ देने की भावना करने पर शत्रु का उच्चाटन होता है।

८. शत्रु के दोनों पाँवों के नीचे की धूलि तथा घृत द्वारा पक्षियों की बलि देकर, चिता-भस्म के ऊपर मूल-मन्त्र का जप करें। फिर उसी भस्म को शत्रु के घर के भीतर गुप्त रूप से पहुँचा दें तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

www.44Books.com

४ | श्री धूमावती कवच, स्तोत्र आदि

इस प्रकरण में भगवती धूमावती से सम्बन्धित कवच, स्तोत्र, हृदय आदि संकलित हैं।

मन्त्र-जप के बाद इनका पाठ करना चाहिए। सामान्य रूप में पाठ करने से भी ये सब पाठकर्ता की मनोभिलाषाओं की पूर्ति करते हैं।

श्री धूमावती कवचम्

श्री पार्वत्युवाच :

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतं विस्तरयो मया। कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे।

श्री भैरव उवाच :

श्रृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौयुगे।
कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम् ॥२॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः।
योगिनो भवन्ति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः ॥३॥

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्री धूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं शत्रु-हनने पाठे विनियोगः।

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदावतु।
धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदावतु ॥४॥

www.44Books.com

दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभि मे मलिनाम्बरा ।
शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ।।५।।
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् ।
सर्वविद्याऽवतु कण्ठ विवर्णा बाहुयुग्मकम् ।।६।।
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वेसदाऽवतु ।
धूमहस्ता सदाऽवतु ।
धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ।।७।।
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्द्दिता देवी भयदा कलहप्रिया ।।८।।
सर्वाङ्ग पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी ।
इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम् ।।९।।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे ।
पठनीय महादेवि त्रिसन्ध्यं ध्यानतत्परैः ।।१०।।
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत् ।।११।।

।। इति भैरवी-भैरव सम्वादे धूमावतीतत्त्वे धूमावती कवचं सम्पूर्णम् ।।

श्री धूमावती स्तोत्रम्

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती,
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।
संध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती,
सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ।।१।।
बद्ध्वा खट्वाङ्गखेटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः,
कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः ।
पूर्णं रक्तैः सुराणां यम महिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ,
पायाद्वो वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ।।२।।

www.44Books.com

चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्दसंघातमुग्रं,
कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशाङ्गी ।
नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयन्ती मुखाब्जं,
पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमाजल्पमाना भ्रमन्ती ।।३।।
टंटंटंटंटंटंटाप्रकरटमटमानादघण्टा वहन्ती,
स्फेंस्फेंस्फेस्कारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा ।
लोलण्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं,
चर्वन्ती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयन्ती पुनातु ।।४।।
वामे कर्णे मृगांकं प्रलय परिगतं दक्षिणे सूर्यबिम्बं,
कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम् ।
स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालभारं,
संहारे धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ।।५।।
तैलाभ्यक्तकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्तकर्णा,
लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिनकामात्मनः पादशोभाम् ।
दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपूरा,
वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजवितत भुजा सासि देवि त्वमेब ।।६।।
संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा ।
दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरज घनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची,
शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्रा निशायाम् ।।७।।
दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात्,
संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे ।
काली कापालिकी सा शवशयनरता योगिनी योगमुद्रा,
रक्ता ऋद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा ।।८।।

धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम् ।
यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विदति वाञ्छिताम् ।।९।।

www.44Books.com

महापदि महाघोरे महारागे महारणे ।
शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा ।।१०।।
पठेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत् ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ।।११।।
सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः ।
दूराद्दूरतरं यान्ति किं पुनर्मानुषादयः ।।१२।।
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले ।
सर्वशान्तिर्भवेद्देवि अन्ते निर्वाणतां व्रजेत् ।।१३।।

।। इत्यूर्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम् ।।

श्री धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच :

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा ।
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ।।१।।
अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता ।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रसम्पूजिता ।।२।।
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी ।
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ।।३।।
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा ।
कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ।।४।।
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ।।५।।
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका ।
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ।।६।।

www.44Books.com

क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी ।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥७॥
चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना ।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी ॥८॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी ।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती ॥९॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला ।
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥१०॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी ।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥११॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता ।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥१२॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता ।
महादेवप्रिया मेधा महासंकटनाशिनी ॥१३॥
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी ।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवानात्मिका ॥१४॥
भरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी ।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥१५॥
त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी ।
इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम् ॥१६॥
मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम् ।
कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥१७॥
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः ।
गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ।
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥१८॥

॥ इति धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

www.44Books.com

श्री धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रम्

श्री भैरव्युवाच :

धूमावत्या धर्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर ।
सहस्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१॥

श्री भैरव उवाच :

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणी ।
सहस्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रु विनाशनम् ॥२॥

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः पंक्तिश्छन्दो धूमावती देवता शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः ।

धूमाधूमवती धूमा धूमपानपरायणा ।
धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वर निवासिनी ॥३॥
अनन्ताऽनन्तरूपा च अकाराकाररूपिणी ।
आद्या आनन्ददा नन्दा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥४॥
धनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्म प्रियेष्टदा ।
भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वतवासिनी ॥५॥
रामरावणसुग्रीवमोहदा हनुमत्प्रिया ।
वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छन्दःस्वरूपिणी ॥६॥
चातुर्यचारुरुचिरा रञ्जनप्रेम तोषदा ।
कमलासनसुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ॥७॥
चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा ।
कला कलाधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा ॥८॥
हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना ।
दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा ॥९॥
नरदेवकरी रामा रामानन्द मनोहरा ।
योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥१०॥

www.44Books.com

दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा ।
गजगोश्वप्रदा गञ्जा भूतिदा भूतनाशिनी ॥११॥
भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा ।
भगभङ्गभया माला मालतीमालना ह्लदा ॥१२॥
जालवालहालकाल कपालप्रियवादिनी ।
करञ्जशीलगुञ्जाढ्या चूतांकुरनिवासिनी ॥१३॥
पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी ।
पावनी पावनाधारापूर्णा पूर्ण मनोरथा ॥१४॥
पूत पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी ।
परेशी परदा पारा परात्मा परमोह्निनी ॥१५॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी ।
जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा ॥१६॥
कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी ।
काव्यव्याकरणज्ञा काप्रज्ञा प्राज्ञानदायिनी ॥१७॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता ।
परावरेज्या वरदा पारदा शारदा दरा ॥१८॥
दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा ।
परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥१९॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञानकार्यकरी शुभा ।
शोभिनी शुभ्रमथिनी निशुम्भासुरमर्दिनी ॥२०॥
शाम्भवी शम्भुपत्नी च शम्भुजाया शुभानना।
शांकरी शङ्कराराध्या सन्ध्या सन्ध्यासुधर्मिणी ॥२१॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शत्रुविनाशिनी ।
शैवी शिवालया शैला शैलराजप्रिया सदा ॥२२॥
शर्वरी शंकरी शम्भुः सुधाढ्या सौधवासिनी ।
सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा ॥२३॥

www.44Books.com

गोराङ्गी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः ।
गौर्गौर्गण्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ।।२४।।
गणेशगणदा गुण्या गुणागौरववाञ्छिता ।
गणमाता गणाराध्या गणकोटि विनाशिनी ।।२५।।
दुर्गा दुर्जनहन्त्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी ।
स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ।।२६।।
दुर्निरीक्ष्या दुरादुःस्था दौःस्थ्यभञ्जनकारिणी ।
श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ।।२७।।
कर्मनर्मकरी नर्मा धर्मा धर्मविनाशिनी ।
गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ।।२८।।
गङ्गा भागीरथी भङ्गा भगा भाग्यविवर्द्धिनी ।
भवानी भवहन्त्री च भैरवी भैरवासमा ।।२९।।
भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्द प्रदायिनी ।
शरण्या शरणा शम्या शशिनी शङ्खनाशिनी ।।३०।।
गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी ।
जनमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ।।३१।।
जिता जाया च विजया विजया जयदायिनी ।
कामा काली करालास्या खर्वा खंजा खरागदा ।।३२।।
गर्वा गरुत्मती धर्मा घर्घरा घोरनादिनी ।
चराचरी चराराध्या छिन्ना छिन्नमनोरथा ।।३३।।
छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी ।
झकारा झीष्कृतिष्टीका टङ्का टङ्कारनादिनीं ।।३४।।
ठीका ठक्कुरठक्काङ्गी ठठठाङ्कार ढुपण्ढुरा ।
ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ।।३५।।
थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी ।
धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ।।३६।।

www.44Books.com

पद्मा पद्मावती पीता स्फान्ता फूत्कारकारिणी ।
फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ।।३७।।
भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी ।
मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ।।३८।।
याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललितालता ।
लङ्केश्वरी वाक्प्रदावाच्यासदाश्रमवासिनी ।।३९।।
श्रान्ता शकाररूपा च षकारा खरवाहना ।
सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ।।४०।।
हराराध्या बालवा च लवङ्गप्रेमतोषिता ।
क्षपाक्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी ।।४१।।
कालिका कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया ।
शिवा शन्दायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ।।४२।।
भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
शत्रुविद्राविणी शैवी शुम्भासुरविनाशिनी ।।४३।।
धकारमन्त्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता ।
धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती ।।४४।।
चर्विणीं चन्द्रपूज्या च छन्दोरूपा छटावती ।
छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ।।४५।।
बलिनी वर्द्धिनी वन्द्या वेदमाता बुधस्तुता ।
धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ।।४६।।
गर्विणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता ।
धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा ।।४७।।
घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी ।
कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया ।।४८।।
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी ।
वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ।।४९।।

www.44Books.com

घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी ।
धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता ॥५०॥
धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा ।
धूंकारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता ॥५१॥
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता ।
अपारा पूर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता ॥५२॥
फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी ।
फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलान्विता ॥५३॥
वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा ।
विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥५४॥
नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा ।
तारिणीताररूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा ॥५५॥
स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी ।
स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥५६॥
शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी ।
शारिणी शाङ्खिनी शुद्धा शङ्खासुरविनाशिनी ॥५७॥
शर्वरी शर्वरीपूज्या च शर्वरीशप्रपूजिता ।
शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवन्दिता ॥५८॥
योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोग भाविता ।
योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥५९॥
योगभावा योगयुक्ता यामिनीपतिवन्दिता ।
अयोग्या योधिनी योद्ध्री युद्धकर्मविशारदा ॥६०॥
युद्धमार्गरतानन्ता युद्धस्थाननिवासिनी ।
सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी ॥६१॥
सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धान्तकारिणी ।
सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवन्द्या सुसिद्धिदा ॥६२॥

www.44Books.com

साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी ।
साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी ॥६३॥
साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसन्तति दायिनी ।
साधुपूज्या साधुवन्द्या साधुसन्दर्शनोद्यता ॥६४॥
साधुदृष्टा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा ।
सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया ॥६५॥
सत्त्ववृद्धिकरी शान्ता सत्त्वसंहर्षमानसा ।
सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धान्तकारिणी ॥६६॥
सत्त्वबुद्धिः सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा ।
चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥६७॥
छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया ।
हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्त्ता हठोद्यमा ॥६८॥
हठकार्या हठधर्मा हठकर्मपरायणा ।
हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया ॥६९॥
हठसम्भेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया ।
हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमान्सभक्षणा ॥७०॥
हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगण हर्षदा ।
हरिणीगणसंहन्त्री हरिणीपरिपोषिका ॥७१॥
हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमान्पुरःसरा ।
दीना दीनकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा ॥७२॥
द्रविणाचलसम्वासा द्रविता द्रव्यसंयुक्ता ।
दीर्घा दीर्घप्रदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः ॥७३॥
दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभञ्जिनी ।
दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥७४॥
देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी ।
दुष्टदानवहन्त्री च दुष्टदैत्यनिषूदिनी ॥७५॥

www.44Books.com

देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी ।
नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया ।।७६।।
नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी ।
नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी ।।७७।।
नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालङ्कारशोभिता ।
नकारवादिनी नव्या नवभूषणभूषिता ।।७८।।
नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः ।
नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानन्दप्रदायिनी ।।७९।।
नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी ।
नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ।।८०।।
नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनामप्रकाशिनी ।
रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ।।८१।।
रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रतिहर्षप्रदायिनी ।
रतिरूपा रतिध्याना रतिरीति सुधारिणी ।।८२।।
रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी ।
रतिकान्तस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणो ।।८३।।
अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता ।
रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ।।८४।।
रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा ।
मदिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ।।८५।।
मद्यपा मद्यपध्येयाय मद्यपप्राणरक्षिणी ।
मद्यपानन्ददात्री च मद्यपप्रेमताषिता ।।८६।।
मद्यपानरता मत्ता पद्यपानविहारिणी ।
मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ।।८७।।
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरापानमोहिनी ।
मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ।।८८।।

www.44Books.com

माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा ।
मोदिनी मोदसन्दात्री मुदिता मोदमानसा ॥८९॥
मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी ।
मोदकादानसन्तुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥९०॥
मोदकालब्धिसंक्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी ।
मांसादा मांससम्भक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥९१॥
मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता ।
मत्स्यमांसकृतास्वादामकारपञ्चकार्चिता ॥९२॥
मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहामनस्विनी ।
मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥९३॥
मुद्रिकालंकृता माद्री मन्दराचलवासिनी ।
मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलभाविनी ॥९४॥
मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी ।
मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता ॥९५॥
महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता ।
शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥९६॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता ।
श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥९७॥
श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी ।
शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥९८॥
शमनाचारसन्तुष्टा शमनागारवासिनी ।
शमनस्वामिनी शान्तिः शान्तसज्जनपूजिता ॥९९॥
शान्तापूजापरा शान्ता शान्तागारप्रभोजिनी ।
शान्तपूज्या शान्तवन्द्या शान्तग्रहसुधारिणी ॥१००॥
शान्तरूपा शान्तियुक्ता शान्तचन्द्रप्रभाऽमला ।
अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुञ्जवासिनी ॥१०१॥

www.44Books.com

मालतीपुष्पसम्प्रीता मालतीपुष्पपूजिता ।
महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ।।१०२।।
मध्यमध्वनिसम्प्रीता मध्यमध्वनिकारिणी ।
मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेमपूरिता ।।१०३।।
मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता ।
महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ।।१०४।।
महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी ।
महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा ।।१०५।।
मानिनीमानसंप्रीता मानविध्वंसकारिणी ।
मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा ।।१०६।।
मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी ।
निर्मूला मूलसंयुक्ता मूलिनी मूलमन्त्रिणी ।।१०७।।
मूलमन्त्रकृताह्लाद्या मूलमन्त्रार्घहर्षिणी ।
मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री मूलमन्त्रप्रहर्षिणी ।।१०८।।
मूलमन्त्रप्रसन्नास्या मूलमन्त्रप्रपूजिता ।
मूलमन्त्रप्रणेत्री च मूलमन्त्रकृतार्चना ।।१०९।।
मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा ।
विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ।।११०।।
वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा ।
वटपूजापरिप्रीता वटदर्शनलालसा ।।१११।।
वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी ।
वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमन्त्रिणी ।।११२।।
वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा ।
बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी ।।११३।।
बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी ।
बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी ।।११४।।

www.44Books.com

बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया ।
पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥११५॥
पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा ।
पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥११६॥
पार्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी ।
पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥११७॥
पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालंकृतमस्तका ।
पद्मार्चितपदद्वन्द्वा पद्महस्ता पयोधिजा ॥११८॥
पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्त्तिता ।
पाथोधिपारगा पूता पल्वलाम्बुप्रतर्पिता ॥११९॥
पल्वलान्तः पयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः ।
पय पाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी ॥१२०॥
पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा ।
मुण्डिनी मुण्डहन्त्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥१२१॥
मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता ।
महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा ॥१२२॥
मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी ।
मठिनी मठसंहन्त्री मठसम्पत्तिहारिणी ॥१२३॥
महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी ।
पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णहारविहारिणी ॥१२४॥
प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी ।
प्रलयार्णव संमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ॥१२५॥
महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी ।
महाप्रलयसम्प्रीता महाप्रलयसाधिनी ॥१२६॥
महाप्रलयसम्पूज्या महाप्रलयमोदिनी ।
छेदिनी छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्थिनी ॥१२७॥

www.44Books.com

शत्रुसंछेदिनीछिन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी ।
लक्षिणी लक्षसम्पूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ॥१२८॥
लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी ।
लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ॥१२९॥
लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी ।
लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी ॥१३०॥
लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता ।
लोकिनी लोकसम्पूज्या लोकरक्षणकारिणी ॥१३१॥
लोकवन्दितपादाब्जा लोकमोहनकारिणी ।
ललिता लालिता लीना लोकसंहारकारिणी ॥१३२॥
लोकलीलाकरी लोक्या लोकसम्भवकारिणी ।
भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी ॥१३३॥
भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता ।
भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता ॥१३४॥
डाकिनीशाकिनीडेया डिण्डिमारावकारिणी ।
डमरुवाद्यसन्तुष्टा डमरुवाद्यकारिणी ॥१३५॥
हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी ।
हासिनी ह्लासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥१३६॥
अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी ।
टङ्किनी टङ्किता टङ्का टङ्कामात्रसुवर्णदा ॥१३७॥
टङ्कारिणी टकाराढ्यशत्रुत्रोटनकारिणी ।
त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसन्देहकारिणी ॥१३८॥
तर्षिणी तृट्परिक्लान्ता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता ।
अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ॥१३९॥
कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी ।
कुट्टिनीकोटिसम्पूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी ॥१४०॥

www.44Books.com

कुट्टिनी कुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी ।
कालपाशावृत्ता कन्या कुमारीपूजनप्रिया ॥१४१॥
कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टिसंयुता ।
कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी ॥१४२॥
काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता ।
काकाङ्करथसंस्थाना काकाङ्कस्यन्दनस्थिता ॥१४३॥
काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी ।
काकमाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ॥१४४॥
काकदर्शनसंशीला काकसङ्कीर्णमन्दिरा ।
काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥१४५॥
धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी ।
धुन्धुरा धुन्धुराकारा धूम्रलोचनघातिनी ॥१४६॥
धूङ्कारिणी च धूं मन्त्रपूजिता धर्मनाशिनी ।
धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ॥१४७॥
धूं बीजजपसन्तुष्टा धूं बीजजपमानसा ।
धूं बीजजपपूजार्हा धूं बीजजपकारिणी ॥१४८॥
धूं बीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा ।
धूलिप्रक्षेपिणी धूलिव्याप्तधम्मिल्लधारिणी ॥१४९॥
धूं बीजजपमालाढ्या धूं बीजनिन्दकान्तका ।
धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ॥१५०॥
धारास्तम्भकरी धर्ता धारावारिविलासिनी ।
धां धीं धूं धैं मन्त्रवर्णा धौंधःस्वाहास्वरूपिणी ॥१५१॥
धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी ।
धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्यानानिवासिनी ॥१५२॥
धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता ।
महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी ॥१५३॥

www.44Books.com

धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी ।
धीवरीगणसम्पूज्या धीवरीवरदायिनी ।।१५४।।
धीवरीगणमध्यस्था धींवरीधामवासिनी ।
धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ।।१५५।।
धीवरीधनदात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी ।
धात्रीशा धातृसम्पूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ।।१५६।।
धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी ।
धूम्रपान रतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ।।१५७।।
धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी ।
धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुन्धुकारिरजनच्छिदा ।।१५८।।
धुन्धुकारीष्टसन्दात्री धुन्धुकारिसुमुक्तिदा ।
धुन्धुकार्याध्यरूपा धुन्धुकारिदन:स्थिता ।।१५९।।
धुन्धुकारिहिताकांक्षी धुन्धुकारिहितैषिणी ।
धिन्धिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगभ्या धनार्थिनी ।।१६०।।
धोरिणी धोरणप्रीता घोरिणी घोररूपिणी ।
धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ।।१६१।।
धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युति ।
धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी ।।१६२।।
धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी ।
धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ।।१६३।।
धनसंवृद्धिसम्पन्ना धनदानपरायणा ।
धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ।।१६४।।
धनरक्षा धनप्राणा धनानन्दकरी सदा ।
शत्रुहन्त्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी ।।१६५।।
शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी ।
शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ।।१६६।।

www.44Books.com

शत्रुप्राणहरा हाय्या शत्रून्मूलनकारिणी ।
शत्रुकार्यविहन्त्री च साङ्गशत्रुविनाशिनी ॥१६७॥
सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदाहिनी ।
सांगसायुध सर्वारिसर्वसम्पत्तिनाशिनी ॥१६८॥
साङ्गसायुधसर्वारिदेहगेहप्रताहिनी ।
इतीदं धूमरूपिण्याः स्त्रोत्रं नामसहस्रकम् ॥१६९॥
यः पठेच्छून्यभवने सन्ध्यान्ते यतमानसः ।
मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणा ॥१७०॥
तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोपि वै ।
भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ॥१७१॥
स्तोत्र सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ।
पठेद्वा श्रृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत् ॥१७२॥
न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे ।
देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय च ।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥१७३॥

इति श्री भैरवीतन्त्रे भैरवीभैरवसम्वादे धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्री धूमावती हृदयम्

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्री धूमावती देवता धूं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वशत्रुसंहरणे पाठे विनियोगः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास :

ॐ धां हृदयाय नमः ।१।
ॐ धीं शिरसे स्वाहा ।२।

www.44Books.com

ॐ धूं शिखायै वषट् ।३।

ॐ धैं कवचाय हुम् ।४।

ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।५।

ॐ धः अस्त्राय फट् ।६।

इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

एवं करन्यासः ।

अथ ध्यानम् :

ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालाम्बराढ्यां,
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम् ।
नित्य क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां,
ध्यायेद्धूमावतीं वानयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम् ॥१॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम् ॥२॥

गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी ।
गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम् ॥३॥

खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खण्डिनी खलरक्षसाम् ।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम् ॥४॥

घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना ।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम् ॥५॥

चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम् ।
चण्डाट्टहासिनीं देवी भजे धूमावतीमहम् ॥६॥

छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम् ।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम् ॥७॥

जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी ।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम् ॥८॥

झङ्कारकारिणीं झंझा झंझमाझमवादिनीम् ।
झटित्याकर्षिणी देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥९॥

www.44Books.com

टीपटङ्कारसम्युक्तां धनुष्टंकारकारिणीम् ।
घोरां घनघटाटोपां वंदे धूमावतीमहम् ॥१०॥
टंठंठंठंमनुप्रीति ठःठःमन्त्रस्वरूपिणीम् ।
ठमकाह्वगति प्रीतां भजे धूमावतीमहम् ॥११॥
डमरूर्डिडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम् ।
डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम् ॥१२॥
ढक्कानादेन सन्तुष्टां ढक्कावादसिद्धिदात् ।
ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम् ॥१३॥
तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम् ।
तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम् ॥१४॥
थांथींथूंथेंमन्त्ररूपां थैंथौंथंथःस्वरूपिणीम् ।
थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम् ॥१५॥
दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम् ।
देवदैत्यकृतध्वंसां वंदे धूमावतीमहम् ॥१६॥
ध्वान्ताकारांधकध्वंसांमुक्तधम्मिल्लधारीरिणीम् ।
धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम् ॥१७॥
नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्मविवर्द्धिनीम् ।
नारसिंहींनराराध्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥१८॥
पार्वतीपतिसम्पूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम् ।
पद्मारूपां पद्मापूज्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥१९॥
फूत्कारसहितश्वासां फट्मन्त्रफलदायिनीम् ।
फेत्कारिगणसंसेव्या सेवे धूमावतीमहम् ॥२०॥
बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम् ।
ब्रह्मादिवंदिताम् विद्यां वंदे धूमावतीमहम् ॥२१॥
भव्यरूपां भावाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम् ।
भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावती महम् ॥२२॥

www.44Books.com

मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम् ।
मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥२३॥
योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम् ।
यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥२४॥
रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम् ।
रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥२५॥
लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम् ।
लम्बितां बीजोषाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥२६॥
बकु पूज्यपदाम्भोजां बकध्यान परायणाम् ।
बालां बकारि सन्ध्येयां वन्दे धूमावतीमहम् ॥२७॥
शाङ्करीं शङ्कर प्राणां सङ्कटध्वंसकारिणीम् ।
शत्रु संहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ॥२८॥
षडाननारि संहन्त्रीं षोडशीरूप धारिणीम् ।
षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२९॥
सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्य प्रदायिनीम् ।
सुन्दरीगण संसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥३०॥
हेरम्बजननीं योग्यां हास्यलास्य विहारिणीम् ।
हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम् ॥३१॥
क्षीरोदतीर सम्वासां क्षीरपान प्रहर्षिताम् ।
क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥३२॥
चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः ।
कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम् ॥३३॥
यइदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम् ।
स प्राप्नोति परां सिद्धि धूमावत्या प्रसादतः ॥३४॥
पठेन्नैकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः ।
सत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३५॥

॥ इति श्री धूमावती हृदयं समाप्तम् ॥

www.44Books.com
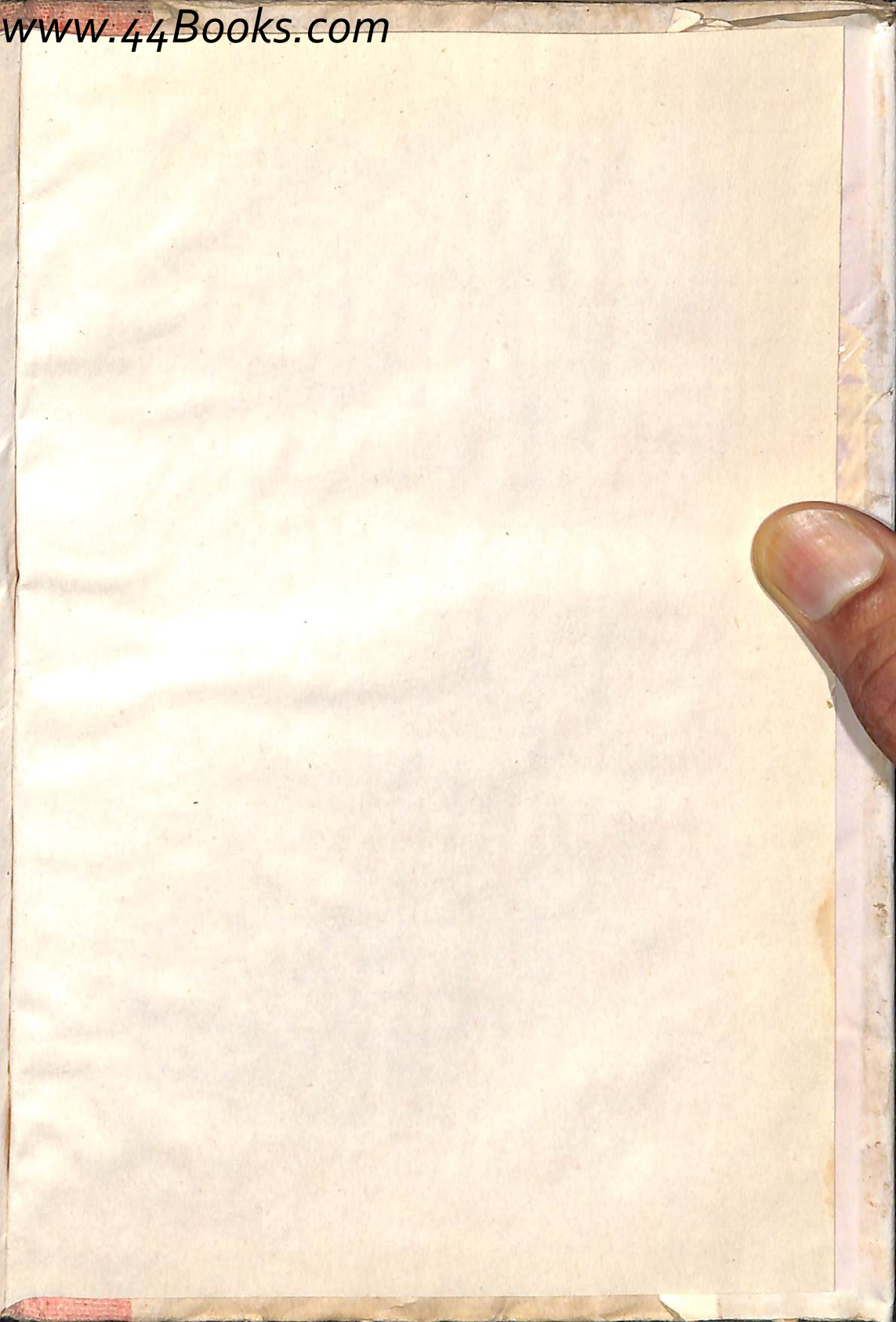
प्रत्येक तन्त्र मन्त्र प्रेमी के लिये आवश्यक रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय

प्रमाणिक तन्त्र-साहित्य का हिन्दी में अभिनव प्रकाशन

विद्या वारिधि आचार्य पं. राजेश दीक्षित द्वारा सम्पादित

हिन्दू तन्त्र शास्त्र

प्राचीन एवं प्रामाणिक हिन्दू शास्त्रों में उल्लिखित विभिन्न कामनाओं के पूरक प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

सजिल्द मूल्य ३०/-

जैन तन्त्र शास्त्र

प्राचीन एवं प्रामाणिक जैन ग्रंथों के संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन

सजिल्द मूल्य ३०/-

इस्लामी तन्त्र शास्त्र
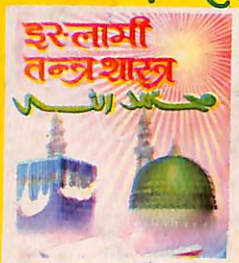
प्राचीन ग्रंथों तथा चमत्कारी आमिलों द्वारा संकलित विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले इस्लामी प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

सजिल्द मूल्य ३०/-

शावर तन्त्र शास्त्र

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों तथा गुप्त साधकों द्वारा प्राप्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले शावर प्रयोगों का सरल हिन्दी भाषा में सचित्र एवं साङ्गोपाङ्ग विवेचन।

सजिल्द मूल्य ३०/-

चारों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ। आर्डर के साथ १०/- पेशगी भेजना आवश्यक है।

दीप पब्लिकेशन्स, अस्पताल रोड आगरा-२.

SV
S.N
Su
Su